॥ राम ॥

॥ रामकथा ॥

मोरारिबापू

मानस-राजघाट (दिल्ही)

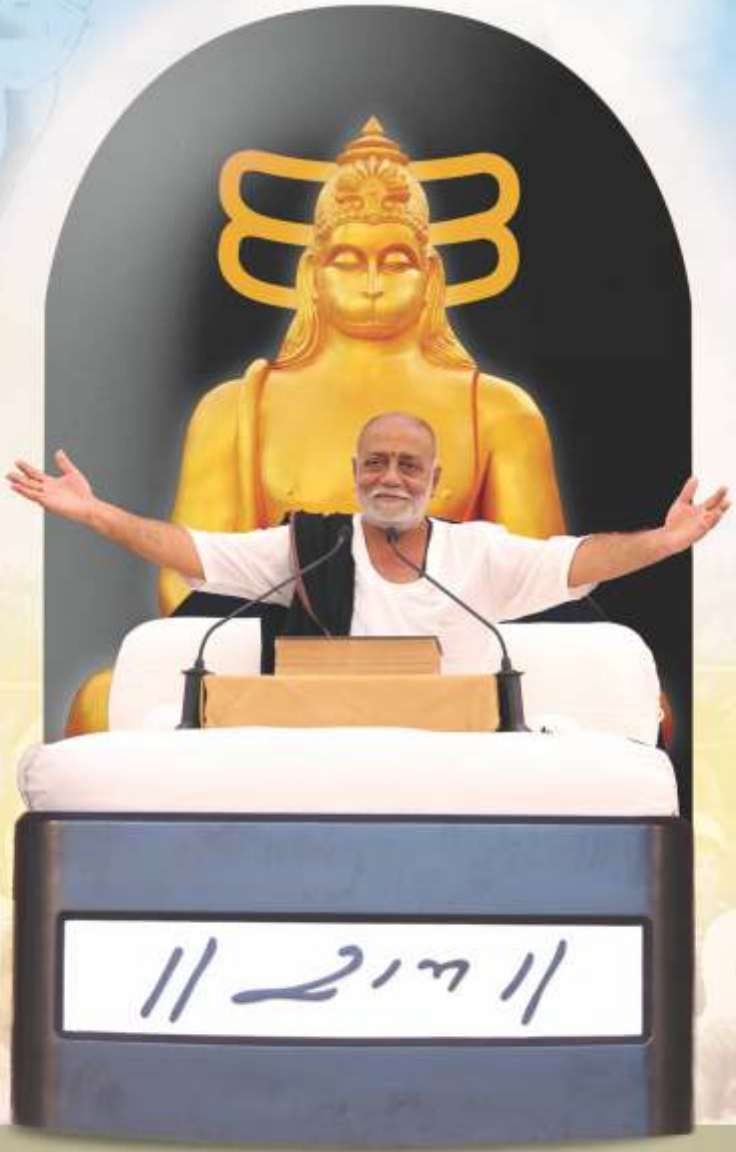

पनिघट परम मनोहर नाना। तहाँ न पुरुष करहिं अस्नाना।।
राजघाट सब बिधि सुंदर बर। मज्जहिं तहाँ बरन चारिउ नर।।

श्री मोरारी बापू
by
Morari Bapu

।। रामकथा ।।
मानस-राजघाट

मोरारिबापू

दिल्ली

दिनांक : ३०-०१-२०१६ से ०७-०२-२०१६

कथा-क्रमांक : ७८८

प्रकाशन :

मई, २०१७

प्रकाशक

श्री चित्रकूटधाम ट्रस्ट,

तलगाजरडा (गुजरात)

www.chitrakutdhamtalgajarda.org

कोपीराईट

© श्री चित्रकूटधाम ट्रस्ट

संपादक

नीतिन वडगामा

nitin.vadgama@yahoo.com

रामकथा पुस्तक प्राप्ति सम्पर्क-सूत्र :

ramkathabook@gmail.com
+91 704 534 2969 (only sms)

ग्राफिक्स

स्वर एनिम्स

प्रेम-पियाला

विश्ववंद्य महात्मा गांधीबापू की समाधिस्थलि राजघाट (दिल्ही) में मोरारिबापू ने दिनांक ३०-०१-१६ से ०७-०२-१६ के दिनों में रामकथा का गान किया। राजघाट पर गायी गई इस कथा 'मानस-राजघाट' पर केन्द्रित हुई। राजघाट के पावन परिसर में आयोजित यह रामकथा को 'सर्वधर्म प्रार्थना' का दर्जा देते हुए बापू ने कहा कि ये कोई धर्म की कथा नहीं है। गांधीबापू की समाधि समीप ये नव दिन की मेरी सर्वधर्म प्रार्थना है।

बापू ने अपनी महसूसी प्रस्तुत कर ऐसा निवेदन भी किया कि राजघाट पर गांधी की चेतना सुषुप्त नहीं बल्कि जाग्रत है। ये बूढ़ा सोया नहीं है, जाग रहा है। और शायद समाधि से कह रहा है कि जागते रहो। बापू ने अभेद, अभय, अमन और अवध-अहिंसा जैसे राजघाट के चार कोने का निर्देश किया और कहा कि अध्यात्म में भी ये जरूरी है।

राजघाट की महिमा व्यक्त करते हुए बापू ने कहा कि मेरी व्यक्तिगत दृष्टि में राजघाट ये राजधर्म की पीठ है; राजघाट ये राजधर्म की पाठशाला है। यहां से राजधर्म की सही दीक्षा मिल सकती है। यहां से कोई पंथ की संकीर्णता प्राप्त नहीं होती लेकिन सत्य का महान मार्ग प्राप्त होता है। बापू ने राजधर्म और राजनीति का भेद भी स्पष्ट किया। साथ ही मद, प्रमाद, निंदा, कलह, वाद-विवाद इत्यादि राजनीति के आठ अनर्थ का परिचय दिया और राष्ट्र की सत्ता में बैठे लोगों को इस अनर्थों से दूर रहने की हिमायत भी की।

इस रामकथा अंतर्गत 'गांधी अगस्त्य तारक है।' 'गांधीबापू विश्व-मानुष है।' जैसे सूत्रपात के साथ मोरारिबापू ने गांधीबापू का महिमागान किया। तदुपरांत निःस्पृहता, जवान किसान, संवेदनासभर विज्ञान एवम् सत्य और अहिंसा जैसे गांधी की विश्व-मानुषता के पहलूओं को रेखांकित भी किया।

राजघाट से रामघाट की यात्रा करते-कराते हुए बापू ने आशावादी सूर में कहा कि यहां से यदि राजधर्म सीख लिया जाए तो हमारी यात्रा राजघाट से रामघाट तक सम्पन्न हो जाए। और ये 'राजघाट' तो हमारा राष्ट्रीय शब्द है। ये रहना चाहिए लेकिन हकीकत में तो ये रामघाट ही है ना? समाधि पर तो 'हे राम' लिखा है। असल में तो ये रामघाट ही है।

सुविदित है कि अहमदाबाद (साबरमती), दांडी और दिल्ही में बापू की 'मानस-महात्मा' पर तीन कथा हो चुकी है। इस शृंखला में राजघाट पर हुई यह चौथी रामकथा तात्त्विक एवम् ऐतिहासिक दृष्टि से अनेकशः महत्त्वपूर्ण सिद्ध हुई।

– नीतिन वडगामा

राजघाट पर यह रामकथा नव दिन की मेरी सर्वधर्म प्रार्थना है

पनिघट परम मनोहर नाना। तहाँ न पुरुष करहिं अस्नाना।।
राजघाट सब बिधि सुंदर बर। मज्जहिं तहाँ बरन चारिउ नर।।

बाप, फिर एक बार हमारे देश की राजधानी में रामकथा गाना-सुनना, सब तरह का सुअवसर हमें प्राप्त हुआ है, वो परमात्मा की महत् कृपा का परिणाम है। और विशेष प्रसन्नता की बात ये है कि राजघाट की जहां विश्ववंद्य गांधीबापू की समाधि है, उसीकी छाया में बैठकर ये कथा 'रामचरित मानस' का दर्शन गाया जाएगा। और इससे भी विशेष खुशी ये है कि राजपीठ ने व्यासपीठ को निमंत्रित किया और हमारे इस राजघाट के कमीटी के सचिव परम स्नेही रजनीश कुमार, उसने मुझे कल एरपोर्ट से आते-आते बहुत प्यारी एक बात कही कि बापू, मेरा एक ही काम है। बापू की समाधि का ये राजघाट परिसर जो है वो पवित्रता कायम बनी रहे, इसलिए मैं सेवा में लगा हूं। इस विचार को मेरे नमन।

बाप, ये नव दिवसीय रामकथा को कोई विशेष धर्म की कथा मत समझना, ये मैं मेरे दिल की बात आपके सामने रखने जा रहा हूं कि राजघाट पर स्थित बापू की समाधि पर नव दिन की ये रामकथा 'रामचरित मानस' आधारित दर्शन, मेरी नव दिन की सर्वधर्म प्रार्थना है। मैं विशेषरूप से ये नव दिन सर्वधर्म प्रार्थना करने आया हूं। आप सब जानते हैं, सारी दुनिया जानती है, जो सुनती है कि मेरी कथा हर एक धर्म को आदर देती हुई गति करती है।

चेतना दो प्रकार की होती है बाप! कहते हैं, आत्मा मरती नहीं। एक शब्द है, 'आत्मचेतना।' जहां तक गुरुकृपा से मेरी जिम्मेवारी के साथ मेरा जानना-मानना है, आपसे कहना है वो ये कि चेतना दो प्रकार की होती है। एक सुषुप्त, दूसरी जाग्रत। मुझे कहने दो, राजघाट पर जो चेतना है वो सुषुप्त नहीं, जाग्रत चेतना है। सोई हुई नहीं है। मैंने गत कथा में जो इस परिसर के बाहर कथा हुई थी, तब भी मैंने कहा था, गांधीबापू यहां सोये नहीं है, जाग रहे हैं; कोई प्रतीक्षा में जाग रहे हैं। वो कुछ देखना चाहते हैं। ये चेतना से सभर समाधि के सामने आज जब बापू का

निर्वाणदिन है और साथ-साथ शहीददिन भी है, तब मैं आज के दिन विश्ववंद्य पूज्यबापू और सभी शहीदों को व्यासपीठ से मेरी श्रद्धांजलि समर्पित करता हूं, प्रणाम पेश करता हूं। और साथ-साथ आज कुष्ठ रोग निवारण दिन भी है। बापू का जो अवतारकार्य था, इनमें से एक कार्य ये भी था और आज के विज्ञान ने, आज की औषधि ने, बापू की चेतना की कृपा से कुष्ठ रोग निवारण में बहुत सफ़लता पाई है। लेकिन हमारा मन का कुष्ठ रोग है वो बढ़ता जा रहा है! अल्लाह करे, मन का कुष्ठ रोग मिटे और हमें इस समाधि से इष्ट रोग लागू पड़े! इष्ट की पीड़ा, परम की पीड़ा, धरम का दर्द हमें मिले, ऐसी मंगल भावना के साथ, मंगल कामना के साथ, बापू की समाधि के सन्मुख मेरी इस नव दिन की सर्वधर्म प्रार्थना, 'मानस' की चौपाईयों के साथ शुरू हो रही है। और आप सभी जानते होंगे कि बापू ने तुलसी के पदों को आश्रम की भजनावलि में समाविष्ट किया है। और सुबह की सर्वधर्म प्रार्थना में मुझे भी शुभ अवसर मिला, तो मैंने देखा कि तुलसी के कितने पद वहां गाये गये! दुनिया जानती है, गांधीजी पर 'रामचरित मानस' का प्रासादिक प्रभाव रहा है। हमारे चित्रकूट में पूजनीय जगद्गुरु रामभद्राचार्य भगवान, वो तो कह रहे थे कि बापू, 'रघुपति राघव राजा राम, पतित पावन सीताराम।' ये गांधीबापू की सर्वधर्म प्रार्थना के अंत में जो धून गायी जाती है, मेरा ऐसा मानना है कि गांधीबापू ने 'रामचरित मानस' से ही ली है। 'राघव' शब्द पुरानी प्रतिओ में पाया जाता है, बाकी के शब्द तो 'मानस' में है ही। तो बापू को 'मानस' से प्रेरणा मिली, ऐसा आपका कहना है। और मुझे बड़ी खुशी हुई कि हो सकता है।

तो, इस नव दिवसीय सर्वधर्म प्रार्थना में, हम सब एकत्रित हुए हैं। मैंने यहां का विषय निश्चित कर रखा था, 'मानस-राजघाट।' तुलसीजी ने 'मानस' में एक बार प्रयोग किया है, 'राजघाट' शब्द का। और इस राजघाट की विचारधारा जो है, शब्दकोशों के अंतर्गत, खास करके गुजरात के 'भगवद् गोमंडल' का शब्दकोश जो है, उसके अंतर्गत घाट की परिभाषा ये है कि नदी के जल के स्तर तक स्नान के लिए या किसी जलाशय के जल तक ऊतरने के लिए जो सीढ़ियां बनायी जाय, विशेष व्यवस्था की जाय, उसको घाट कहते हैं। राजघाट का भी अर्थ शब्दकोश में मिलता है। राजघाट उसको कहते हैं, जहां राजपरिवार स्नान करता है। ये खास घाट है, आम-घाट नहीं है। लेकिन तुलसी का जो राजघाट है, वो क्रान्तिकारी है। वो कहते हैं कि रामकाल में रामराज्य की स्थापना के बाद जो राजघाट था वहां 'मज्जहि तहाँ बरन चारिउ नर।' केवल राजपरिवार नहीं, समाज के तमाम लोग स्नान कर सकते थे। इसलिए तुलसी का जो राजघाट है, वो मेरी दृष्टि में बहुत विशिष्ट है। और बापू की समाधि और प्रज्वलित ज्योत, जाग्रत ज्योत है, उस परिसर को देखकर मुझे लगता है, ये घाट में भी कोई भेद के बिना, कोई भी आकर इस चेतना में अवगाहन कर सकते हैं। तो परंपरा में राजघाट की व्यवस्था है, इससे तुलसी के राजघाट की व्याख्या बिलग है। जहां कोई वर्णभेद नहीं, जहां कोई जातिभेद नहीं, कोई धर्मभेद नहीं।

आज सुबह मैंने गांधीविचार का पठन किया राजघाट पर, उसमें से पांच मुद्दे, हमारे आदरणीय कश्मीर के गुलामअली आज़ादसाहब, उन्होंने मुझे कहा कि आपने जो कागज़ पढ़ा वो मुझे दे दीजिए। मुझे उसका अभ्यास करना है। मेरा मतलब है, पूर्वग्रह मिट जाये तो गांधी सर्वग्राह्य है। तो बापू कहते हैं कि मेरा धर्म सत्य है और इस सत्यरूपी धर्म को पाने का रास्ता अहिंसा है। वो कहते हैं, मैं तलवार में श्रद्धा नहीं रखता। मैंने कब से तलवार का विचार छोड़ दिया है। कहां गांधीबापू, कहां मोरारिबापू! पर विचार में मेल बहुत बैठता है। इसलिए तो तलगाजरडा के राममंदिर में से मैंने राम के हाथ से हथियार प्रणाम करके ऊतार दिये हैं कि अब आप शस्त्र न रखो, अब आप आशीर्वादक मुद्रा में फूल लिये रहो कि आप सबको खुश्बू प्रदान करो। शस्त्रों का समय बीत चुका है। हिंमत हो धर्मों में तो शस्त्रों को शास्त्र बना दो। उपनिषद का मंत्र हम बोलते हैं, 'आचार्य देवो भव।' यदि सभी धर्म के हमारे धर्माचार्य में अगर आत्मजागृति हो जाये तो सबसे करीब लगता है -

जिंदगी का मेला सच में अज़ीब है।
जो दूर लगता है वो सबसे करीब है।

और उस धर्म को पाने के लिए यदि साहस आ जाय, निर्भयता आ जाये तो इक्कीसवीं सदी में हम शस्त्रों को शास्त्र में रूपांतरित कर सकते हैं। जब कहीं-कहीं शास्त्र ही शस्त्र बनने लगे हैं ऐसे समय में अल्लाह करे, भगवान करे, शस्त्र शास्त्र में रूपांतरित हो जाए। बापू कहते हैं, सत्य को पाने का रास्ता अहिंसक है। कहीं युद्ध न हो, कहीं हिंसा न हो, कहीं शस्त्र का प्रयोग न हो। मैं किसीको कुछ सिखाने नहीं आया हूं। न मुझे कोई सुझाव देना है। न किसी पर व्यंग करना है। मुझे रामगुनगान गाते-गाते आपसे कुछ बातें करनी है।

मेरी व्यक्तिगत दृष्टि में राजघाट, राजधर्म की पीठ है। यदि राजघाट पर राजधर्म सीख ले, तो रामराज्य आने में देर नहीं लगती। यहां से सीखा जाएगा राजधरम। ये राजधर्म राजघाट की पाठशाला है। राजपीठ है राजघाट। क्या सिखायेगी हमें? कौन-सा धर्म सिखायेगी हमें? 'महाभारत' में तो लिखा है कि दस व्यक्ति को धर्म कभी समझने नहीं आयेगा। 'मत्तः प्रमत्तः उन्मत्तः श्रान्तः क्रुद्धो बुभुक्षितः लुब्धश्च।' ऐसे लोगों को राजधर्म समझने में नहीं आयेगा। ये राजघाट मुझे और आपको, पूरी दुनिया को, बापू की ये समाधि ही राजधर्म सीखा सकती है। यह उपदेश नहीं है। 'महाभारत' ने जो कहा है। राजघाट हमें प्रेरणा देता है। हमें राजधर्म समझ में नहीं आयेगा। जो आप मत्त है, आप अगर अभिमान में डूबे हैं। और मद कई प्रकार का होता है। प्रतिष्ठा का, पैसा का, सत्ता का, प्रभाव का, रूप का, कई प्रकार के मद हो सकते हैं। और जिसमें वो मत्तपना है, भगवान व्यास कहते हैं, वो कभी धर्म नहीं समझ पाता।

दूसरा, प्रमत्तः। जो भोगों में लिप्त है, वो कभी धर्म नहीं समझ पाएगा। तीसरा, उन्मत्तः। विक्षिप्त दशा। कभी-कभी आदमी किसी भी क्षेत्र में हो, खबर नहीं उनमें कोई न कोई ऐसी ग्रंथि सक्रिय हो जाती है! मनोविज्ञान कहता है, आदमी को पता नहीं कि मैं उन्मत्त हो गया हूं। और समाज के लिए बड़ा घाटा सिद्ध होता है। उसको कभी धर्म की समझ प्राप्त नहीं होती। चौथा, श्रान्तः। थका हुआ आदमी कभी धर्म नहीं समझ सकता। स्फूर्त आदमी धर्म समझ सकता है। जहां देखो, सब थके हैं! रोज का नयापन हमारा कहां गया? जब कभी-कभी सभाओं में, कभी समाचार देखता हूं तो लाईव टेलिकास्ट में मैंने कई सदस्यों को विश्राम करते देखा है! हम थके हुए क्यों है? हम स्फूर्त क्यों नहीं है? स्फूर्त धर्म का स्वभाव है। जो श्रमित है वो धर्म नहीं समझ पाएगा।

पांचवां, क्रुद्धो। बात-बात में जिसको गुस्सा आ जाएगा, उसको धर्म समझ में नहीं आएगा। राजघाट यही सीख देती है। लोग कहते हैं, गुस्सा करने का कारण हो तो गुस्सा करना चाहिए ना! ठीक है, मैं तो इस पक्ष में भी नहीं हूं। दूसरा विश्वयुद्ध समाप्त हुआ। उसके बाद लाखों लोग मर गये। और उसमें दो आर्मी के लोग युद्ध-कैदी बन गये थे। फिर उसे रिहा कह दिये कुछ समय के बाद। एक आदमी बड़ा क्रुद्ध है। दूसरे ने कहा, स्वतंत्रता मिली है, क्रोध कम कर। मुझे लग रहा है, तू अभी भी बंदी है, तेरी मेरी नहीं बनेगी! तू क्रुद्ध है, तू धर्म नहीं समझ पाएगा। छोड़! क्षमा कर दे। और ये बात समाधि ने सिखाई है। इनके अमृत वचन पढ़ियेगा, युवान लोग खास। कभी 'हरिजन बंधु' में छपा, वैसा अनेक मेगज़िन में छपता था। कभी हमारे प्रवचन भी आवेशयुक्त होते हैं! 'मानस' में लिखा है -

करई क्रोध जिमि धरमहि दूरी।

तुलसीजी ने लिखा, जब आदमी क्रुद्ध होता है तो धर्म उससे दूर हो जाता है। छठ्ठा, बुभुक्षितः। जिसको बहुत कुछ लालसा है। जिसकी भूख कभी शांत नहीं होती वो धर्म नहीं समझ पाता। जो बहुत तेज गति से जाना चाहता है, भागता है, वो कभी धर्म समझ नहीं पाता। धर्म धीरज का मारग है। गांधीजी ने कहा था कि मेरा कोई पंथ प्रस्थापित धर्म नहीं है। पंथ नहीं, गांधीपथ। पंथ आते ही संकीर्णता आ जाती है। पथ आते ही राजमार्ग की मानसिकता प्रकट होती है। चौड़ा राजघाट का राजमारग। तो, जिसको बहुत जल्दी है, धर्म नहीं समझ पाता। सातवां, लुब्धश्च। जो बहुत लोभी है। जिसे बहुत कुछ संग्रहित करना है, वो कभी धर्म नहीं समझ पाता।

गांधीजी ने कहा, मेरा धर्म सत्य है। उस धर्म को पाने का रास्ता अहिंसा है। तुलसी ने राजघाट की परिभाषा अंकित की है। क्रांतिकारी है। राजघाट राजधर्म की पीठ है। यहां से राजघाट की सही दीक्षा

मिल सकती है। यहां से कोई पंथ की संकीर्णता प्राप्त नहीं होती, लेकिन सत्य का महान मारग प्राप्त होता है। ऐसी एक महत्ती सद्भावना के साथ हम नव दिन के लिए यहां है।

मैं कथाओं में कहता हूं कि ये मेरी कथा कोई धर्मशाला नहीं है, ये प्रयोगशाला है। चलो, हम नव दिन गांधी विचार का प्रयोग करें। गांधी आज भी प्रस्तुत है और कुछ उनकी बातें प्रस्तुत न भी हो, तो गांधी की चेतना नाराज नहीं होती। जाग्रत आदमी सत्य कुबूल करने में देर नहीं करता। लेकिन गांधी बहुत प्रासंगिक है। बहुत-सी बातों में, अधिकतर बातो में, आज भी प्रासंगिक है। तो ऐसे विश्ववंद्य बापू के निर्वाणदिन पर 'रामचरित मानस' के आधार पर कुछ बातें आपके साथ शेर करूंगा। आपसे एक वार्तालाप करूंगा। आपको भी बोलने का अवसर दूंगा। आप भी कुछ पूछिएगा। ये मेरी सर्वधर्म प्रार्थना है। वैसे भी मेरी कथा में सर्वधर्म प्रार्थना ही होती है। गांधीजी ने कहा कि हिंदु धर्म का मुझे बहुत गौरव है, क्योंकि हिंदु धर्म में सर्व धर्म की अच्छी बातों का समावेश है।

सुबह प्रार्थना में, वहां जो उपस्थित होंगे उसने देखा होगा, सभी धर्म की प्रार्थना तीन-तीन मिनट हुई। सभी धर्माचार्य कर रहे थे। बड़ा प्यारा माहोल था। 'रघुपति राघव राजा राम' के कीर्तन में हमारे देश के महामहिम, प्रथम नागरिक, शांतचित्त से शरीक थे। हमारे आदरणीय महामंत्री महोदय भी और अन्य मंत्रीगण भी। और आज भी सरकार का प्रतिनिधित्व करते हुए दो मंत्रीश्री यहां उपस्थिति रहे। उद्घाटन में भी थे। उन्होंने अपने विचार भी प्रस्तुत किये। और व्यस्तता के कारण वो गये। वो आये, सरकार की ओर से स्वागत किया। उनको मैं बहुत-बहुत धन्यवाद दूंगा। और पहले दिन की कथा की जो भूमिका होती है उस भूमिका की ओर हम आगे बढ़ें।

दो-तीन वस्तु याद रखना। एक, मेरी समझ में बापू की चेतना जाग्रत है। ये बूढ़ा सोया नहीं है, जाग रहा है। और शायद समाधि से कह रहा है कि जागते रहो। दूसरी बात, राजघाट ये राजधर्म की पाठशाला हो सकती है। यहां कोई एक दिन की चर्चा नहीं है, मेरी यह नौ दिन की सर्वधर्म प्रार्थना है। तो ये है कथा के कुछ बिन्दु। और नाम है 'मानस-राजघाट।' राजघाट के पांच लक्षण है मेरी दृष्टि में। वो आये दिन मैं पेश करूंगा। मैं कागज़ लेकर आया हूं। मैंने जो सुबह की प्रार्थना में पढ़ा था। आपको सुनाने की इच्छा है। बापू के विचार आज के विश्व में कितने प्रासंगिक है। कितने मूल विचार इस महामानव ने दिये हैं? मैं फिर से एक बार व्यासपीठ से पढ़ना चाहता हूं। गौर से सुने।

बापू कहते हैं, मैं सभी धर्मों के महान संतों और पयगम्बरों में विश्वास करता हूं। रजनीशजी, मुझे तो लगता है कि मैं एक-एक सूत्र को लेकर नव दिन निकाल दूं। और 'रामचरित मानस' का कहां-कहां संदर्भ मिलता है, कहां तुलसी विशाल दृष्टिकोण से प्रवेश करते हैं, वो कहने को जी करता है। एक, मैं सभी धर्मों के महान संतों और पयगंबरों में विश्वास करता हूं। मैं ईश्वर से निरंतर प्रार्थना करता हूं कि मुझे शक्ति दो ताकि मैं उनके प्रति क्रोध न रखूं, जो मुझे गाली देते हैं। ये संत ही बोल सकता है। ये महात्मा ही बोल सकता है। प्रतिशोध की दुनिया में साधु की जूबां बोल रही है। आगे बोले, उनका भी अहित न सोचते हुए उनके ही हाथों मरने के लिए तैयार रहूं। मेरे मन में कहीं द्वेष न हो, उनके प्रति कटुता न हो, बल्कि उनके ही हाथ से मैं मरना चाहता हूं। मैं दावा करता हूं कि हिन्दुत्व सबका समावेश करनेवाला धर्म है; सबका समन्वय है। दूसरा, धर्म की रक्षा उनके अनुयायी के नेक कामों और उनकी पवित्रता शुद्धता के द्वारा ही की जा सकती है। अन्य धर्मावलंबीओं से झघडा करके कतई नहीं की जा सकती है। तीसरा, जो ईश्वर में आस्था रखते हैं उनके लिए सभी धर्म समान और अच्छे हैं। विभिन्न धर्मों में माननेवालें जब आपस में लड़ते हैं तो वे अपने-अपने धर्म की ही अवहेलना करते हैं। चौथा, सब धर्मों का सार यही है कि इन्सान सबकी सेवा करे और सबके साथ दोस्ती करे। मैंने यह अपनी माता की गोद में सीखा है। स्वतंत्र भारत हिन्दु राज नहीं होगा, बल्कि भारतीय राज होगा। जो किसी धार्मिक समुदाय के बहुमत पर आधारित नहीं होगा, बल्कि धर्मों में किसी प्रकार के भेदभाव के बिना सभी लोगों के प्रतिनिधि का राज होगा। ऐसे पांच गांधीविचारों को आज निर्वाण दिन

पर जो पढ़ने लिया गया। एक-एक सूत्र पर बहुत कुछ कहने को जी चाहता है, 'मानस' के आधार पर।

तो, गांधी विचार को केन्द्र में रखते हुए, हम नव दिन के लिए यहां एकत्रित है। ये थी 'मानस-राजघाट' की छोटी-सी भूमिका। और अब थोड़ा ग्रंथ-परिचय। आप जानते ही है। फिर भी मैं प्रवाही परंपरा का निर्वहण किया करता हूं। 'मानस' की सात भागों में, सात सोपान में रचना की गई है। एक, 'बालकांड', दूसरा 'अयोध्याकांड', तीसरा 'अरण्यकांड', चौथा 'किष्किन्धाकांड', पांचवां 'सुन्दरकांड', छठ्ठा 'लंकाकांड' और सातवां 'उत्तरकांड।' परमतत्त्व को पाने के ये पायदान है। मंगलाचरण में सात मंत्र है। उसमें समन्वय का संदेश है। भगवान आदि शंकर ने पांच देवों की पूजा की बात की थी। उसको धर्म के क्रम में ही केवल न रखे, विशाल अर्थ में लें। यहां विष्णु को व्यापकता के रूप में लें। मेरी पावन पृथ्वी का युवान विवेक न चुके, वो गणेशपूजा है। जो विवेक को संभाल रहे वो गणेश-वंदना। न राजसी, न सात्त्विकी, न तामसी, किसी से भी प्रभावित न हो, ऐसी गुणातीत श्रद्धा, ये दुर्गापूजा है। सभी धर्मों में श्रद्धा को स्थान दिया गया है। तुलसीजी कहते हैं, श्रद्धा बिनु धर्म नहीं। धर्म श्रद्धा की कुख से जन्मता है। ये श्रद्धा को कोई गौरीपूजा कहे तो आपत्ति नहीं होनी चाहिए।

आज एक प्रश्न है, 'गांधीबापू राम पंचायत में मानते थे?' सीताजी, लक्ष्मण, शत्रुघ्न, भरत और हनुमान ये पांच रामजी की पंचायत है। हां, गांधीबापू मानते हैं। किसीको भी मानना पड़ेगा। ग्रंथिमुक्त चित्त हो वो स्वीकार करेगा। हमारे यहां पंचतत्त्व है - पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश। मेरी तलगाजरडी आंख में भरत है वो जलतत्त्व है। भरत के समान जगत में कोई रोया नहीं। कृष्णावतार में रोई थी गोपियां! यहां भरत का एक आंसू, वहां इतनी गोपी के आंसू, कौन आगे ये कहना मुश्किल! आदमी में जलतत्त्व होना चाहिए। बापू स्वीकार करेंगे। रामराज्य में संवेदना होनी चाहिए। जलतत्त्व यानी कारुण्य। दूसरों की पीड़ देखते, आदमी का जलतत्त्व उभर आये तो आलोचना नहीं होनी चाहिए। इन्सान संगदिल नहीं होना चाहिए। राष्ट्र के नायक में तो पांचों तत्त्व होने चाहिए। बापू तो कोई राजनीतिज्ञ नहीं थे, वो तो राष्ट्रप्रीति के मसीहा थे। एक बार चौदह साल में भरत की अति विरही रात थी और उसको लगा कि मैं नहीं जी पाउंगा, तब उसने ठान ली देर रात को कि मैं मेरा शरीर सरजू में विसर्जित कर दूं। चौदह साल की अवधि नहीं काटी जाएगी। संत ने धैर्य गंवा दिया। निकल पड़े! जैसे सरजू में प्रवेश करने गये ही, दो रक्षकों ने भरतजी के हाथ पकड़ लिए। भरतजी ने पूछा, आप कौन है? बोले, हम रक्षक है। भरतजी ने कहा, रक्षक राजा के आधीन होते हैं। मुझे रोकनेवाले आप सेवक? तब वो दो रक्षक ने कहा कि हम राम की पादुकाएं हैं!

जनु जुग श्रामिक प्रजा प्रान के।

हमें पादुका का रूप दिया गया। चित्रकूट से हमें रक्षक के रूप में भेजे हैं और हमको कहा गया था कि मैं जब तक न लौटूं, मेरी अयोध्या में किसी की मृत्यु न ही होनी चाहिए। यदि हुई तो आप दंड़ित होंगे। पादुका ने भरत को रोका है। वर्ना ये जलतत्त्व जल में समाने की तैयारी में था। बिहार की गरीबी देखकर गांधी ने अपना वेश-परिवर्तन कर दिया! जलतत्त्व फूटा। उन्होंने सीया हुआ कपड़ा पहनना बंद कर दिया। मेरे पास बातें आती है तो मैं सोचता हूं, झोंपड़ों में, देहातों में जाकर देखता हूं, तो आज भी ऐसी स्थिति देखी जाती है!

लक्ष्मण है तेजतत्त्व, अग्नितत्त्व। लक्ष्मण और शत्रुघ्न को तेजतत्त्व कहा गया है। तेज जरूरी है। मेरी समझ में राष्ट्रनायक तपस्वी भी होना चाहिए और तेजस्वी भी होना चाहिए। और तप के बिना तेज आता नहीं, ये 'मानस' का नियम है। ये तेज, अग्नि, जलाने के लिए नहीं, उजाला करने के लिए है। सीता पृथ्वीतत्त्व है। पृथ्वी से प्रकट हुई। हनुमान है वायुतत्त्व। हर जगह होना चाहिए। हर पीठ में होना चाहिए। वायुतत्त्व माने गति, जीवन। प्राणवायु न हो तो हम जी नहीं सकते। और शत्रुघ्न, मेरी दृष्टि में आकाशतत्त्व है। शब्द आकाश से निकलता है, आकाश में समा जाता है और आकाश बिलकुल मौन रहता है। वैसे 'रामायण' का भी अपना एक आकाश है। उसमें भरत मौन है।

कोउ किछु कहइ न कोउ किछु पूँछा।
प्रेम भरा मन निज गति छूँछा।

मन संकल्प विकल्प करने का आदती है। ये मन का स्वभाव है। निज गति है मन की। पर तुलसीजी कहते हैं, 'निज गति छूँछा।' आज प्रेम में आप्लावित मन, अपना सहज, स्वभाव चुक गया। एक सन्नाटा। न कोई बोलता है, न कोई कुछ पूछता है। विश्वभर में मौन की इतनी प्यारी परिभाषा नहीं होगी, जो तुलसी दे रहे हैं। और जब तक आदमी का मन प्रेम से परिपूर्ण नहीं होता, तब तक आदमी सच्चा मौनी बन ही नहीं सकता। एक जगह तुलसी ने जरूर व्याख्या की है। 'मन बुद्धि चित अहमिति बिसराई।' लेकिन ये व्याख्या इनसे भी आगे की है।

तो, रामराज्य के संचालन में ये पांचों तत्त्व चाहिए। वेदना चाहिए, संवेदना होनी चाहिए। आंसू की आलोचना नहीं होनी चाहिए। वायुतत्त्व सबका होता है। राजघाट की पीठ हमें यही राजधर्म सिखायेगी कि आदमी सबका हो। सबको पावन करता हो। सबको गति देता हो। सबके लिए वहन करता हो। सबका जीवन हो। सबकी श्वास हो। आदमी तपस्वी होना चाहिए, सहनशील हो। पृथ्वीतत्त्व, क्षमाशील हो। यह जानकीपना है। और प्रेमभरी स्थिति में आदमी आकाश की तरह स्थिर हो, मौन हो। तो शंकराचार्य के समन्वय विचार को स्वीकारते हुए 'मानस' के संस्कृत में सात मंत्रों में मंगलाचरण के पश्चात् ये पांच देवों की वंदना है। बाद में तुलसीजी ने गुरुवंदना की, जिसने हमको प्रकाश दिया, जिसने हमारा मोह-तम मिटाया। जो परमतत्त्व को अपने प्रयासों से पा ले उसको शायद गुरु की जरूरत न भी पड़े, लेकिन हमारे जैसों के लिए कोई न कोई गुरुपद की जरूरत रहती है, जिसके आश्रय में हम गति कर सके। गुरु चाहिए, ऐसा कठिन सिद्धांत पेश न करूं, लेकिन मुझे तो चाहिए ही। 'महाभारत' में प्रश्न आया कि लोग राज्यसत्ता का आश्रय क्यों करते हैं? जवाब ये दिया गया कि राज्यसत्ता के पास साम, दाम, दंड और भेद, ये नीतियां होती है इसीलिए प्रजा इसका आश्रय करती है। यदि मुझे मेरे घाट से कहना है तो गुरु भी चारों नीति रखता है, लेकिन ये नीति की बजाय प्रीति है।

गुरु में साम, दाम, दंड और भेद चारों है, पर प्रीति के रूप में। राजकीय क्षेत्र के लिए नीति आवश्यक है। गुरु में साम होता है। साम का एक अर्थ है शांति। दूसरा अर्थ है समाधान। तीसरा साम का एक अर्थ है विश्राम। गुरु के पास समाधान होता ही है। वहां शांति मिलती है, विश्राम भी मिलता है। क्यों हजारों लोग बुद्ध की आदेशना को झिलने के लिए बैठे रहते हैं भिख्खु के रूप में? हमारे यहां दो शब्द है, मेरे श्रावक भाई-बहन! साम का गान किया जाता है, सोम का पान किया जाता है। गुरु में सामवेद होता है। कृष्ण जगद्गुरु है और वो कहते हैं, वेदों में सामवेद मैं हूं। अथवा तो गुरु में गायन होता है। गाना सामवेद है, प्रसन्न रहना सामवेद है। गुरु प्रसन्न नहीं तो शिष्य को क्या खुशी दे पायेगा? यद्यपि गुरु गगन-गांभीर्य में स्थित होना चाहिए साहित्य जबान में लेकिन मेघधनुष्य भी खिलते रहने चाहिए गुरु में। ये उसकी संपदा है। कृष्ण ने दोनों काम किये। कृष्ण जगद्गुरु है। जगद्गुरु के पास सोमरस होना चाहिए। इसीलिए पूर्णिमा की रात को उसने रास रचा था। उसकी वेणु बजी वो साम-गान था और चंद्र की उपस्थिति में जो रास हुआ, वो सोमरस का पान था। कृष्ण सोम और साम का समन्वय है।

दाम के दो अर्थ है। एक, पैसा; दूसरा, रस्सी। माँ यशोदा ने रस्सी से कृष्ण को बांधा। दामोदर नाम पड़ गया! गुरु बांधेगा क्या? बुद्धपुरुषों के पास पैसे होते है क्या? उनकी जेब में रूपये नहीं होते, रूपयेवाले होते हैं! यहां दाम माने संपत्ति, दैवीसंपत्ति उसके पास होती है उतनी किसीके पास नहीं होती। गुरु हमें दाम से भर देता है। और गुरु हमें प्रेमबंधन में बांधता है। ये बंधन नहीं है। लाखों मुक्ति निछावर हो इस बंधन के सामने करोड़ो निर्वाण निछावर होते हैं प्रेमबंधन में। याद रखना, गुरु कभी सिद्धांतों में नहीं बांधता, नीति-नियमों नहीं बांधता। ये बांधता है प्रेमतत्त्व से।

दंड; संन्यासी को हम गुरु मानते हैं। उसके पास दंड होता है। ये संन्यासी के पास दंड होता है ताडन के लिए नहीं, तारने के लिए। अथवा मेरे स्वभाव का अर्थ है, गुरु दंड भोगता है जो शिष्य अपराध करता है। ये गुरु की दंड प्रीति है। कैसा भी है, मेरा आश्रित है ना? झूठ बोल गया, अविवेक कर गया, राग-द्वेष कर लिया, वहां उसका दंड भोगेगा गुरु। और गुरु दुर्भाव से नहीं भोगेगा, सद्भाव से भोगेगा। भेद; 'भेद' शब्द तो खराब माना

जाता है। इसलिए मैंने कहा कि तुलसी का राजघाट है, वहां चारों वर्ण एक साथ स्नान कर सकते हैं। केवल राजपरिवार नहीं। ये भेद राजघाट का तुलसी ने मिटा दिया। लेकिन गुरु के पास भेद-प्रीति भी होती है वो ये कि बड़े-बड़े भेद को वो समझता है, बड़े-बड़े रहस्यों को वो आश्रित के पास खोलता है। अथवा तो गुरु एक ऐसी सत्ता है कि इसका भेद कोई पा नहीं सकता।

गुरु, तारो पार न पायो, हे, न पायो,
प्रथमीना मालिक, तमे रे तारो तो अमे तरीए...

भेद यानी यहां बिलगाव नहीं, असमानता नहीं। हम कहां समझ पाते हैं बुद्धपुरुषों को?

उलझनों में खुद उलझकर रह गये वो बदनसीब,
जो तेरी उल्झी हुई झूल्फों को सुलझाने गये।

तेरा भेद पाने गये, वो खुद खो गये! पता लगा ही नहीं!

इससे बढ़कर क्या मिलती हमें दादें वफ़ा,
हम तेरे ही नाम से दुनिया में पहचाने गए।

●

बतावी दउं तमोने ए अभेदी भेद ईश्वरनो,
के तमोने जे श्रद्धा छे, ते ज ईश्वर छे।

गुरु के पास भेद नीति के रूप में नहीं होता, प्रीति के रूप में होता है। दंड सजा के रूप में नहीं, खुद भोगने का दंड होता है। और दाम का बंधन नहीं होता, प्रेम का बंधन देता है। बाकी आश्रित को पूरी स्वतंत्रता देता है गुरु। और गुरु के पास साम होता है, वो नाचता है, गाता है, मुस्कुराता है। गुरु रज से अपनी दृष्टि को विशेष पवित्र करके, जगत को ब्रह्ममय देखते हुए तुलसी कहते हैं -

सीय राममय सब जग जानी।
करउँ प्रनाम जोरि जुग पानी।।

पूरी दुनिया को सीताराममय समझे। और गांधीबापू क्या कहते थे?

वैष्णवजन तो तेने कहीए जे पीड पराई जाणे रे;
परदु:खे उपकार करे तोये मन अभिमान न आणे रे।
वणलोभी ने कपटरहित छे, काम-क्रोध जेणे मार्या रे;
भणे नरसैंयो तेनुं दर्शन करतां कुळ एकोतेर तार्या रे।

गुरु की रजमात्र कृपा जिसको प्राप्त हुई उसका दृष्टिकोण इतना विशाल हो जाता है कि उसको सब ब्रह्ममय दिसता है। उसके बाद राजपरिवार की तुलसी ने वंदना की। सब माताओं की वंदना की। महाराज दशरथजी की वंदना की। जनकजी की वंदना की। संत भरत की, शत्रुघ्न की, लक्ष्मण की वंदना की। और फिर -

महाबीर बिनवउँ हनुमाना।
राम जासु जस आप बखाना।।

हनुमानजी की वंदना। हनुमानजी वायुतत्त्व है। हनुमानजी की वंदना नितांत आवश्यक है। हनुमानजी 'रामायण' के पंच प्राण के रक्षक है। पांच व्यक्ति 'रामायण' की जो प्राण त्यागने की कगार पे थी, उसको हनुमान ने बचाया। इसलिए हनुमान प्राणतत्त्व है। विश्व की युवानी को, भारत की युवानी को यदि बलवान होना है, बुद्धिमान होना है, विद्यावान होना है, तो हनुमंततत्त्व का आश्रय करे। हनुमान कोई एक धर्म का देव नहीं। श्वास तो कोई भी मज़हबवालें लेते हैं। श्वास में जो हवा आती-जाती है वो हनुमान है। उसके बिना तो हम जी नहीं सकते।

गुरुकृपा से मेरी जिम्मेवारी के साथ मेरा जानना–मानना है कि चेतना दो प्रकार की होती है। एक सुषुप्त, दूसरी जाग्रत। मुझे कहने दो, राजघाट पर जो चेतना है वो सुषुप्त नहीं, जाग्रत चेतना है। सोई हुई नहीं है। गांधीबापू यहां सोये नहीं है, जाग रहे हैं; कोई प्रतीक्षा में जाग रहे हैं। वो कुछ देखना चाहते हैं। बापू की समाधि के सन्मुख मेरी इस नव दिन की सर्वधर्म प्रार्थना 'मानस' की चौपाईयों के साथ शुरू हो रही है। और आप सभी जानते होंगे कि बापू ने तुलसी के पदों को आश्रम की भजनावलि में समाविष्ट किया है। दुनिया जानती है, गांधीजी पर 'रामचरित मानस' का प्रासादिक प्रभाव रहा है।

मानस-राजघाट : २

राजघाट राजधर्म की विद्यापीठ है

बाप, बांग्लादेश का निमंत्रण मैं स्वीकार करता हूं। हम जरूर रामकथा लेकर आएंगे, बापू की स्मृति के साथ। मैं अकेला नहीं, मेरा ये पूरा मेला आएगा! मुझे मुंबई में पूछा गया, मेरे कितने फोलोअर्स है? गलत प्रश्न पूछ लिया! मेरे फोलोअर्स नहीं, सब फ्लावर्स है। मेरा ये काफ़िला है, मेरी ये जो महफ़िल है। ये बापू की समाधि पर चल रही टोक में हिस्सा ले। तो आप सब मेरे फूल हैं। तो अल्लाह ने चाहा, तो ये सारी बगियां लेकर आएंगे।

'मानस-राजघाट', इस कथा का केन्द्रबिंदु है। एक घटना, मैंने पहले भी कही है। एक बार मनुबहन गांधी, जो महुवा के थे और पूज्य गांधीबापू के अंतेवासी थे। उसपे एक मुकद्दमा चल रहा था। महुवा तालुका में कुछ संघर्ष हुआ था। ये मनुबहन गांधी एक बार महुवा आये। मिलना हुआ। 'रामचरित मानस' की बात चली। स्वयं गांधीबापू ने तो कहा ही है कि 'रामचरित मानस' विश्व का एक ऐसा सद्ग्रंथ है कि जिसने लोगों को सत्य के प्रति आकर्षित किया है। और उसके पन्ने-पन्ने पर प्रेम उमड़ रहा है। भक्ति की गंगा बह रही है। मैं क्यों न राजघाट पर कथा कहूं? 'जोग लगन ग्रह बार तिथि।' जब हो तब घटना घटती है। मैं फिर कहूं, ये कोई एक धर्म की कथा नहीं है। गांधीबापू के समाधि के समीप ये नव दिन की मेरी सर्वधर्म प्रार्थना है। ये सब याद रखें।

तो, मनुबहन ने मुझे कहा, बापू, एक बार बापू से हमारी चर्चा हुई कि आप 'रामचरित मानस' को इतना आदर देते हैं। आपका जीवन राममय और 'गीता'मय है तो आप 'मानस' का अर्थ क्या करते हैं? गांधीबापू बोले, मनु, 'मानस' को यदि मैं मेरे शब्दो में रखूं तो 'म', 'आ', 'न', 'स'। 'म' का मतलब मर्यादा, 'आ' माने आदर, 'न' माने नम्रता, 'स' यानी समता। 'मानस' का अर्थ किया गया, सालों पहले!

उत्तर दिसि सरजू बह निर्मल जल गंभीर।
बांधे घाट मनोहर स्वल्प पंक नहिं तीर।।

तुलसीजी 'उत्तरकांड' में कहते हैं कि उत्तर दिशा में सरजू का निर्मल, स्वच्छ और गंभीर जल है। वहां रामराज्य में मनोहर घाट बांधे गये। पांच सौ साल पहले तुलसी ने लिखा कि इस घाट के तट पर जरा भी कीचड़ नहीं है। और आज करीब-करीब सब घाट कीचड़ से भरा है! सब घाट, आप समझ लीजिए! मैं धर्मघाट को

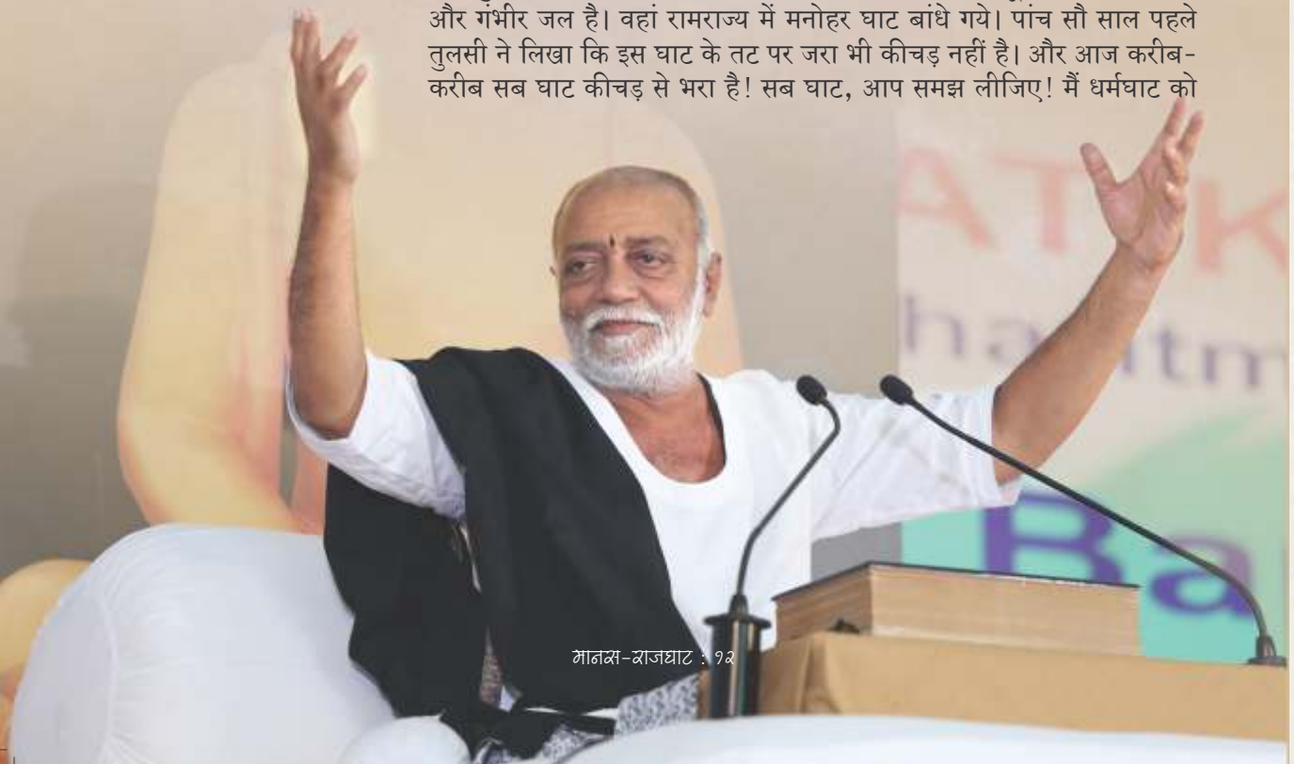

भी दूर करना नहीं चाहता। आपका जो मन्यू है, पुन्यप्रकोप कहते हैं जिसको। उसकी छूट दी गई है। साधु देशकाल के अनुसार विद्रोह करता है जगत की शांति के लिए, लेकिन साधु कभी किसीका द्रोह नहीं करता। बापू का चित्त कितनी बार व्यग्र हुआ है! और आखिरी बार कोंग्रेस-अधिवेशन हुआ। बापू के निर्वाण के पहले जो शब्द है, अब मेरी कोई सुनता नहीं! मेरा अरण्यरुदन है! एक विश्वविभूति की ये वेदना है। क्योंकि उसने देखा कि सब घाट में कीचड़ लगा हुआ है! कुछ न कुछ बुराईयां लगी हुई है। द्वेषमुक्त चित्त यदि जरा उग्र बन जाए तो उसको पुन्यप्रकोप कहा है। सराहनीय तो नहीं कहूं, लेकिन क्षम्य जरूर है। मैं क्रोध को सराह नहीं सकता। क्योंकि क्रोध वो ही करता है जिसको बोध की उपलब्धि नहीं हुई होती है। दोनों साथ नहीं रह सकता। या तो क्रोध, या तो बोध रहता है।

स्वच्छता अभियान तो तब से तुलसी ने चलाया। लोग मुझे पूछते हैं कि भारत में जो चल रहा, सरकार की ओर से; गांधीबापू की स्मृति में। हमने अभी स्वच्छता अभियान के लिए एक कथा भी की अहमदाबाद में। और मेरा स्वच्छता अभियान तो करीब-करीब पचपन साल से शुरू है। बाह्य शुद्धता तो ठीक, आंतरिक शुद्धता का अभियान तो हम चला ही रहे हैं। 'स्वल्प पंक नहिं तीर।' रामराज्य के घाट में।

पनिघट परम मनोहर माना।

वहां जनाना घाट थे। जहां बहन लोग स्नान करते थे, वहां पुरुष स्नान करने नहीं जाते थे। ये थी गांधी की मानस-प्रेषित मर्यादा। जरा दूरी पर एक दूसरा घाट था, जिसको गो-घाट कहते हैं, पशुघाट कहते हैं। जहां गाय-भेंस, हाथी-घोड़ें सब झूंड के झूंड जा करके स्नान करते थे। वहां सीढ़ियां नहीं होती। पशु को उसका अभ्यास नहीं होता। गो-घाट सीधा होता है, ताकि पशु आसानी से जा सके। उसे कहते हैं गो-घाट।

तो बाप, सरजू के तट पर रामराज्य के काल से स्वच्छता अभियान चल रहा है। कीचड़ की निंदा के बजाय उसमें कमल खील जाय, कोई खुश्बू आ जाय। राजकीय क्षेत्रवाला कमल नहीं! मुझे सबसे प्रामाणिक डिस्टन्स है। मेरा रिश्ता केवल व्यासपीठ से, केवल प्रेमघाट से; जो सत्य, प्रेम और करुणा का वरण कर चुकी है ओलरेडी। मैं पहले बोलता था कि इस देश में ऐसी एकता नहीं आ सकती कभी कि हाथ में कमल पकड़वा दिया हो! हाथ भी रह जाय, कमल भी रह जाय, देश का उद्धार भी हो जाय! और ये बात राजघाट से न बोलूं तो कहां से बोलूं?

मुझे मुस्कुराता हुआ श्रोता, मुस्कुराता हुआ वक्ता पसंद है। मुझे मुस्कुराता हुआ राजगुरु, मुझे मुस्कुराता हुआ धर्मगुरु पसंद है। क्या देश में ऐसी एकता-समता न आये, जिसकी बात गांधीबापू ने 'मानस' की परिभाषा में की। एक है गो-घाट, एक जनाना-घाट, एक है राजघाट। वहां मर्यादा का संकेत है।

तहाँ न पुरुष करहिं अस्नाना।

एक मर्यादा, एक संयम, एक सम्यक् समझ; बुद्ध का शब्द। लादी हुई स्वतंत्रता नहीं, निज बोध की स्वतंत्रता। 'म' यानी मर्यादा; 'आ' यानी आदर। यहां समाधि के पास जाते ही मर्यादा आ जाती है, क्योंकि ये चेतना है, ये ऊर्जा है। मेरी दृष्टि में ये जाग्रत चेतना का स्थल है, तीर्थ है। 'न' यानी नम्रता, 'स' यानी समता।

मनुबहन के साथ हुई ये बात मेरी स्मृति में है। यहां जो समाधि बनी है, उसके चार कोने हैं। ये राजघाट के चार कोने हैं। अध्यात्मजगत में भी ये जरूरी है, भौतिक जगत के लिए भी जरूरी है। याद रखे, राजघाट राजधर्म की विद्यापीठ है। यहां से राजधरम सीखा जाएगा। ये बापू की जाग्रत समाधि के चार कोने क्या है? मेरी जिम्मेवारी से मैं आपसे कहूं। आप बिलकुल स्वतंत्र है। मेरी हर बातों से सहमत होना कतई जरूरी नहीं है। सुनो तो भी काफ़ी है। सुनकर जीवन में मेल बैठ जाये तो ये आपकी संपदा है। मोरारिबापू ने कहा इसलिए नहीं। राजा के लक्षण तुलसी ने लिखे हैं -

सोक विकल सब रोवहिं रानी।
रूप सीलु बलु तेजु बखानी।।

राष्ट्र के नायक के चार लक्षण तुलसीजी ने 'मानस' में अंकित किये। महिपति दशरथ जब सूरधाम गये और शोक में डूबी रानियां! पूरा रानीवास रो रहे हैं! और रोते हुए राजा के लक्षणों की स्मृति कर रहे हैं। राजभवन में शोक छाया हुआ है। राजा के रूप की स्मृति, राजा के शील की स्मृति, राजा के बल की स्मृति, राजा के तेज की स्मृति।

विश्व की कोई भी सत्ता हो, राष्ट्रनायक के चार लक्षण होने चाहिए। राजघाट कह रहा है। राजा वो है जो राजा के दोष और गुण एवम् प्रजा के दोष और गुण जानता हो। दोनों का राज़ जानता हो। महामुनि विनोबाजी ने कभी कहा कि अपने गुण का भी कीर्तन करो। यदि आपमें कुछ अच्छाईयां है तो उसका अहोभाव हो। दुनिया के सामने न करो, पर अहोभाव खुद में होना चाहिए। खाली छिद्रान्वेषी न बने रहो।

एक प्रश्न, ग्रह पीड़ा की परेशानी है। मैं आपको पूछुं कि ग्रह बलवान होता है कि परमात्मा बलवान होता है? ग्रहों को छोड़कर परमात्मा के पैर में जाओ, भरोसा लेकर। बुद्धपुरुष के अनुग्रह से कोई बलवान नहीं हो सकता। अगर अपना अच्छा स्वभाव हो ना, तो अकेले-अकेले राजी होओ, तुलसी की पंक्ति गाओ कि -

हरि! तुम बहुत अनुग्रह किन्हों।

हे मालिक, हे परमात्मा, तूने हम पर बहुत अनुग्रह किया, कृपा की। राजा को चाहिए प्रजा के सभी आचार के राज़ जाने और खुद के आचार-विचार के राज़ को भी जाने। एक दूसरा शब्द है, 'शासक', जरा आक्रमक शब्द है। इसमें दूसरे के दोष को जानना होता है, खुद का नहीं। कई धर्मों में जब 'शासन' शब्द आ जाता है, तो मुझे जरा वो लगता है! धर्म तो करुणा, धर्म तो सत्य, धर्म तो प्रेम।

महात्मा महम्मद पयगंबर, उसके हाथ में जो तलवार थी, उसके उपर जो शब्द लिखे गये हैं वो पढ़ने योग्य है। आदरणीय गुणवंतभाई शाह ने वो शब्द निकालकर अपनी किताब में रखा। उनकी एक किताब है, 'गांधीनी लाकडी, गांधीना चश्मां, गांधीनी घडियाळ।' तो उस तलवार पर शब्द है, 'मेरा सत्य यदि मेरे हित के खिलाफ़ निकलेगा तो भी मैं सत्य नहीं छोडूंगा।' कभी-कभी सत्य उजागर करना खुद के खिलाफ़ हो जाय! ज्यादा से ज्यादा खुद ही खुद को जानता है, लेकिन स्वीकार बड़ा कठिन मामला है।

तो राजा के चार लक्षण। एक तो, राजा रूप में सुंदर हो। दूसरा, वो शीलवान हो। तीसरा, बलवान हो। चौथा, तेजस्वी हो। लेकिन मैं छूट लेना चाहता हूं। शास्त्रों में भी संशोधन जरूरी है। कुछ बातें काल-संदर्भ में लिखी गई हो। उस वक्त के देश, काल, व्यक्ति, समाज के अनुरूप बातें होती है। शताब्दियों के बाद उसमें संशोधन होना जरूरी है। उसमें शास्त्र नाराज़ नहीं होते। ऐसा साहस करनेवालों पर शास्त्र विशेष करुणा करते हैं। 'श्रीमद् भागवतजी' के माहात्म्य में लिखा है, 'वेद शास्त्र विशुद्धिकृत...' वक्ता को चाहिए कि देश-काल के अनुसार वेद और शास्त्र को, मूल को पकड़कर नए-नए फूल खिलाये, जरूरी संशोधन करे। मुझे थोड़ी छूट लेनी है कि एक निकालना हो राजा के लक्षणों में से तो राजा का रूप निकाल सकते हैं, उसको अनिवार्य न माना जाय। राजा के सभी अंग ठीक न भी हो। बुद्धपुरुषों में अष्टावक्र दृष्टांत है। राजा के बाकी के तीन लक्षण मैं हटा नहीं सकता, नितांत आवश्यक है। राजा शीलवान होना चाहिए। राजा बलवान हो और शीलवान न हो, इस बल की भारतीयों ने कभी पूजा नहीं की। राजा शीलवान भी हो, बलवान भी हो और राजा तेजस्वी होना चाहिए। 'हनुमानचालीसा' में कहा हैं-

सब पर राम तपस्वी राजा।

राम कैसा राजा? तपस्वी राजा। दशरथ कैसा राजा? यशस्वी राजा। रावण कैसा? मनस्वी। राजा मनस्वी नहीं होना चाहिए; यशस्वी, तपस्वी, तेजस्वी जरूर होना चाहिए।

बुद्ध कहा करते थे कि मैं राजा का बेटा हूं, रूपवाला हूं, बड़े घराने में पैदा हुआ हूं। और आज संन्यास का रंग है और तेज आ गया है, तो मेरे प्रभाव को याद करके, स्मरण करके मेरी बात मत मानना। मेरी बात आपका सत्य बने तभी ही मानना। मैं यही कहता हूं कि मोरारिबापू कहे वो सब मान मत लेना। बापू बोले तो बस, बात खतम! ऐसी श्रद्धा से बाहर आना। यहां कमज़ोरी से मुक्त कोई इन्सान नहीं होता सिवा परमात्मा। और कमज़ोरियों के साथ इन्सान को कुबूल करो। तभी मानवता मुखर होगी। हम एक फ्रेम में महापुरुषों को मढ़ लेते हैं! कमज़ोरियां ही मानव होने का परिचय है। मात्रा में अधिक-कम हो सकती है। दीक्षित दनकौरी कहते हैं-

या तो कुबूल कर मेरी कमज़ोरियों के साथ,
या छोड़ दे मुझे मेरी तन्हाइयों के साथ।

हे परमात्मा! मुझे कमजोरियों के साथ कुबूल कर। तेरा हूं, तेरा अंश हूं, जैसा भी हूं, तेरा हूं।

लाज़िम नहीं कि हर कोई हो कामयाब ही,
जीना भी सीख लीजिए नाकामियों के साथ।

बुद्ध कहे, मेरा गौरव, मेरी वाक्छटा, मेरा वक्तृत्व ये सब देखके सभी बातें मत मानना। तुम्हारे

जीवन का सत्य बने तो ही कुबूल करना। मैं भी कहूं, यहां से जो कहा जाय उसे अंधश्रद्धा से माने ना। आप अपने विवेक से कसे।

तो, राजघाट के चार कोने के बारे में मेरी जिम्मेवारी के साथ मुझे मेरे विचार प्रस्तुत करने हैं। और इसी तरह ठीक सोचें तो ये राजघाट हमें राजधर्म की दीक्षा दे सकता है। चार कोना। एक, अभेद; 'मज्जहिं तहाँ बरन चारिउ नर।' वहां सब वर्ण के लोग स्नान कर सकते हैं। कोई भेद नहीं था। बापू की समाधि का एक कोना अभेद है। कोई भेद नहीं। न जाति का, न वर्ण का, न मज़हब का। सर्वधर्म समभाव। तो अभेद ये राजघाट की समाधि का एक कोना है।

दूसरा कोना, अभय। गांधी का अभय। सत्य की कूख से जो बेटा जन्मता है वो ही अभय है। बिना सत्य कोई अभय हो ही नहीं सकता। अगर निर्भय और अभय होना है तो सत्य केन्द्र में होना ही चाहिए। गांधीजी के एकादश व्रत में भी कहा गया है-

सत्य, अहिंसा, चोरी न करवी, वणजोतुं नव संघरवुं,
ब्रह्मचर्य ने जाते महेनत, कोई अडे न अभडावुं।
अभय, स्वदेशी, स्वादत्याग, सर्वधर्म सरखा गणवा।
ए अगियार महाव्रत समजी नम्र पणे नित आचरवा।

तीसरा कोना, अमन, शांति, निर्वैरता। पूरे विश्व में अमन हो। चौथा कोना, अवध, अहिंसा। जहां किसीका वध होता न हो ऐसा एक जगत। अहिंसा का व्रत लिए हुए जगत, उसका संदेश बापू की समाधि का चौथा कोना है। इसलिए तुलसी कहते हैं -

राजघाट सब बिधि सुंदर बर।

सब चीज सब बिधि सुंदर नहीं होती, अगर हो तो श्रेष्ठ नहीं होती। जो तुलसी ने राजघाट की परिकल्पना की है, वो मुझे बापू की समाधि पर साकार होती दिखती है। ये अध्यात्म जगत के लिए भी आवश्यक है। अहमदाबाद में साबरमती आश्रम के पास मोरारजी देसाई की अंत्येष्टि की गई वो अभय घाट मैं जब भी जाता हूं, मुझे अभय घाट अच्छा लगता है।

एक ऐसा राष्ट्रपुरुष, एक महात्मा हमें मिला प्रभु की कृपा से। जब स्वातंत्र्य का झंडा फ़हराने का उत्सव चल रहा था और उसी समय एक फ़कीर, एक महात्मा नोआखली की हुई हिंसा पर मलम पट्टी कर रहा था। आंसू पोंछ रहा था। दिल्ही में नहीं थे, वो वहां थे। क्योंकि यों कीचड़ मुक्त घाट में रहता था। कुंभार होते हैं, वो मिट्टी के बर्तन बनाते हैं और उसको पकाने के लिए भठ्ठा गांव के बाहर बनाते हैं। हमारे पद्मश्री कवि काग ने लिखा कि गांधीबापू, तू देश का बहुत समझदार कुंभार है, तू भठ्ठा दिल्ही में रखना, पोरबंदर में न रखना! बहुत संकेत के रूप में ये पद लिखा था।

हळवो फेरवजे जूनो चाकडो,
चाकडे जूने उतारजे नवा घाट रे;
आखा देशना डाह्या! हळवो फेरवजे जूनो चाकडो.

अध्यात्म में भी अभेद, अभय, अवध और अमन जरूरी है। जहां अंदर-अंदर हिंसा हो, तो वहां राजघाट उदासीन हो जाता है कि मेरा कोई सुनता नहीं! बापू कहते थे, ये मेरा अरण्यरुदन है! ये बापू के बोल है। एक आदमी के पास बहुत किंमती हीरा था, अमूल्य था। राजा प्रधान और सेनापति के साथ निकले। हीरा देखते ही राजा लालायित हुआ। आदेश किया कि हीरा मुझे मिलवा दे। मेरी अंगूठी में लगवाना है। राजा गया। बाद में सेनापति आया और हीरे की मांग की। वो गया और बाद में वजीर आया। बोला, हीरा मुझे देना। राजा की तिजोरी में कोई कमी नहीं है और सेनापति कहीं से प्राप्त कर सकता है। खबरदार, मुझे ही देना! तीनों ने धमकी दी। वो कोई एक मर्मज्ञ के पास गया और पूछा कि मुझे कोई उपाय बताओ। हीरा मेरी जान लेगा! उसने सलाह दी कि हीरे कि तीन टुकड़े करके तीन अंगूठी बनाके उसमें लगा दे। इसने वैसा ही किया। बाद में तीनों आये और जब अंगूठी दी तो तीनों को आशंका हुई कि हीरा तो एक था, तीन कैसे हुआ? वो तीनों बड़े जोहरी के पास गये। उसने कहा, एक ही हीरे के तीन टुकड़े किये गये हैं। तीनों राजी हो गये। लेकिन वो हीरेवाला आदमी अपना बेग-बिस्तर भरकर बिदा मांगता है कि मैं आपके नगर में रहना नहीं चाहता! जिस देश में राजा, सेनापति और वजीर एक हीरे के लिए लड़ते हो उस देश में अमन कभी हो ही नहीं सकता। आध्यात्मिक क्षेत्र में भी अभेद, अभय लाना पड़ेगा। मैं 'अलीमौला' बुलवाता हूं। अध्यात्म अशांत नहीं होता। अध्यात्म अवध होता है।

कथा का क्रम। कल हनुमंतवंदना हुई। ये वायुतत्त्व, प्राणतत्त्व है। जरा भी मज़हबी तत्त्व नहीं है। 'हनुमानचालीसा' का पाठ बहनलोग भी कर सकती है।

लंका विजय के बाद हनुमानजी जब जानकीजी को खबर देने गये तब वहां राक्षसियों ने हनुमानजी की पूजा की है। मैं कहता रहता हूं कि हनुमानजी की पूजा का यदि राक्षसियों को भी अधिकार है, तो मेरे देश की बहन-बेटियों को क्यों नहीं? बापू ने महिलाओं की शक्ति का कितना आदर किया! आज राष्ट्र में नारी सशक्तिकरण का अभियान चल रहा है। पुरुषप्रधान समाज ने नारी का अपराध किया है और फल भोग रहा है! गांधीजी नाटक जरूर देखते थे। उस नाटक 'हरिश्चंद्र' ने बड़ा योगदान दिया गांधी को मोहन से महात्मा बनाने में। वहां से उसने सत्य की दीक्षा ली और रंभा नामक उसको पालनेवाली थी, उसने 'राम' नाम की दीक्षा दी थी। बापू निरंतर रामनाम के उपासक रहे। आपने खुद कहा था कि मेरी रामभक्ति तभी सच्ची मानना, जब अचानक मेरी मौत आये उसी समय यदि मेरे मुख से 'राम' शब्द न निकले तो समझना मैं दंभी था। और ३० जनवरी के दिन ५ बजकर १७ मिनट पर इस आदमी ने विश्व के सामने एक मिशाल रख दी, 'हे राम!' और अफ्रिका में उनकी जब पिटाई हुई तब भी वो राम बोले हैं। उसके जीवन में आदि, मध्य और अवसान तीनों जगह राम है। शास्त्र का मत है, तीनों जगह सिद्ध होना चाहिए। ये गांधीबापू के जीवन में बिलकुल खरा उतर रहा है। नारी का शोषण अब नहीं चलेगा। मैथिलिशरण गुप्त ने लिखा -

अबला जीवन हाय, तुम्हारी यही कहानी!
आंचल में है दूध और आंखों में पानी!

सब गुलामी से मुक्त हो। दुनिया में अब आदमी पदार्थ की तरह बिकता न हो। कौन-सी मानवता की हम बात कर रहे हैं? कौन-से संस्कारों को लेकर हम घूमते हैं? जहां इन्सान पैसों पे बिकते हो! गुलाम हो! एक नारी केवल किंकरी बनी रहे? माताओं को यज्ञ करने का अधिकार नहीं, ऐसा भी कहा जाता है! मैं तो सालों से कह रहा हूं कि माँ अपने परिवार के लिए या अतिथि के लिए रोटी बनाने के लिए चूल्हे में अग्नि प्रज्वलित करती है उन्हें यज्ञ करने की जरूरत ही नहीं। उसको यज्ञोपवित की क्या जरूरत? उसको यज्ञोपवित की कोई जरूरत नहीं। किसीको द्विज बनाकर संसार में भेजती है मातृशक्ति। अधिकार नहीं ये भूल जाओ, जरूरत नहीं। ऐसा भी कहा गया कि बहनों को वेद का अधिकार नहीं। जिसमें संवेदना नखशिख भरी हो उसको वेद की भी जरूरत नहीं। माताएं प्रवाहरूप में कितना देती है जलतत्त्व! एक तो आंसू; रक्त बहाती है; पसीना बहाती है और जब वात्सल्य से भर जाती है तब दूध बहाती है। है किसी पुरुष में ताकत! 'भगवद्गीता' के दसवें अध्याय में विभूति योग में परमात्मा ने अपनी विभूतियों की गणना की। सबमें एक-एक विभूति की बात की है, लेकिन मातृशक्ति की बात आई तो नारी में सात-सात विभूतियां बताई! ओशो को कभी पूछा गया था कि दुनिया में ऊंची प्रतिष्ठा के क्षेत्र में मातायें क्यों कम दिखती है? ओशो ने बहुत प्यारा जवाब दिया कि वो बच्चे को जन्म देती है उससे ज्यादा प्रतिष्ठा विश्व में किसी की नहीं! वो चेतना को जनम देती है।

हनुमंत के बाद सब सखाओं की तुलसीजी ने वंदना की। बाद में अभिन्न रूप सीता-रामजी की वंदना। शक्ति और शक्तिमान भिन्न कैसे हो सकते हैं? एक ही ब्रह्म ने स्त्री का विग्रह धारण किया वो सीता है, पुरुष रूप धारण किया वो राम है। तुलसी इसलिए वंदना करते हैं, क्योंकि उसको पतित, वंचित, जो खिन्न है, वो प्रिय है, परम प्रिय है। गांधीजी भी कहते हैं, वैसे मैं दूसरा जन्म लेना नहीं चाहता, फिर भी यदि मुझे दूसरा जनम मिले तो मैं वंचित, दलित के घर जनम लेना चाहूंगा ताकि इन लोगों पर क्या गुजरी है उसका मैं खुद अनुभव कर सकूं! फिर बहत्तर पंक्तियों में, नव दोहे में तुलसीजी ने राम नाम की महिमा का गायन किया, रामनाम की वंदना की। और विश्ववंद्य गांधीबापू की 'राम' नाम पर श्रद्धा थी। उन्होंने रामनाम पर अपने विचार प्रस्तुत किए, युवानों को पढ़ने योग्य है। उन्होंने कहा कि जब सब तरह से मैं निराश हो जाता था, मुझे लगे कि अब कोई चारा नहीं है, तब मुझे उगारनेवाला कोई होता था तो केवल रामनाम था। राम सांप्रदायिक नहीं है। राम को छोटी फ्रेम में आप मढ़ नहीं सकते। तुलसी तो कहते हैं, रामतत्त्व तो अमित अवकाश है। वो कोई मर्यादा में आबद्ध नहीं है, असीम तत्त्व है।

एक प्रश्न, 'बापू, क्या अधिकतम लोग जो श्रवण करते हैं, अपने ही विचारों की पुष्टि के लिए और अपनी सोच में प्रोत्साहन पाने के लिए सुनते हैं? कृपया कुछ कहे।' मोती का छिद्र ढंका हुआ हो तो उसमें धागा नहीं जा सकता। श्रोता को चाहिए खाली होकर आये। तब प्रेम का सूत्र अंदर जाएगा। रिक्त होकर इस महफ़िल में आओ। पूर्वग्रह लेके मत आओ। मेरे फ्लावर्स! कभी मुंह चढ़ाये न रहना। यहां एन्ट्री है, एक्झिट है ही नहीं।

चिंतन धर्म है, श्रवण धर्म है, मनन धर्म है, वैसे गायन और नर्तन भी धर्म है। धर्म के विशाल पहलू है। गाओ खूब!

'मानस' की नाम-वंदना की पंक्तियां -

बंदऊ नाम राम रघुबर को।
हेतु कृसानु भानु हिम कर को।।

'रा' और 'म' नाम भी है और शिव की मानसिकता में महामंत्र भी है। तो रामनाम मंत्र नहीं, महामंत्र है। शिव महामंत्र समझकर जपते हैं। शिवपुत्र गणेश 'राम' शब्द लिखकर परिकम्मा करते हुए विश्व में प्रथम पूज्य बन जाते हैं। आदि कवि वाल्मीकि ऊल्टा नाम जपते हैं। पार्वती ने 'विष्णुसहस्रनाम' के बराबर समझकर राम नाम लिया और पातिव्रत्य धर्म में नारीसमाज का आभूषण बन गई रामनाम के प्रताप से। सार्वभौम कर दिया रामनाम को। भगवान शिवजी नाम के प्रताप से कालकूट नामक बिष के साथ 'राम' बोले और एक संधि हो गई, 'विश्राम' हो गया। तुलसीजी ने भूरीशः रामनाम की महिमा गाई है।

सत्युग में ध्यान से परमतत्त्व का अनुभव करते थे। त्रेता में यज्ञ द्वारा अनुभूति होती थी। द्वापर में घंटों तक पूजा-अर्चा लोग करते थे। पर जब कलियुग में ओर कुछ न हो पाये, केवल राम-नाम, परमात्मा का नाम, परमतत्त्व का नाम लें। यज्ञ भी, ध्यान भी, पूजा-अर्चा भी हो जाएगी।

नहीं कलि करम न भगति बिबेकू।
रामनाम अवलंबन एकू।।

तो, नाम की महिमा अतुलनीय है। मंत्र जप करो, पर मंत्र में कुछ नीति-नियम लागू होते हैं। नाम में सब छूट है। भाव से, बिना भाव से, आलस से, पैर फैलाकर, लैटे-लैटे, बैठे-बैठे, चलते-चलते, सब छूट है नाम में। भगवान गौरांग ने, चैतन्य महाप्रभु ने तो ऊर्ध्वबाहु होकर नाम की घोषणा की थी। तो, नाम कलियुग की प्रधान साधना है और बापू ने यही साधना का आज़ादी के लिए उपयोग किया था। तुलसी कहे कि रामनाम की महिमा इतनी है कि स्वयं राम इसकी चर्चा करे तो वो भी असमर्थ हो जाए!

उसके बाद तुलसीजी 'रामचरित मानस' के सरोवर के चार घाट निर्माण करते हैं। एक का नाम ज्ञानघाट दिया, जहां भगवान शिव पार्वती को कथा सुनाते हैं। दूसरा उपासनाघाट, भुशुंडिजी गरुड को कथा सुनाते हैं। तीसरे घाट का नाम कर्मघाट, जहां याज्ञवल्क्यजी भरद्वाज को कथा सुनाते हैं। चौथा घाट दीनता का, प्रपत्ति का, शरणागति का घाट, जहां तुलसी खुद बैठकर अपने मन को रामकथा सुनाते हैं।

एक बार कुंभ का मेला लगा, तीर्थराज प्रयाग में सब महात्मा कल्पवास करके जाने लगे तब याज्ञवल्क्य के चरणों को पकड़कर भरद्वाजजी ने प्रार्थना की कि आप रुक जाइए। मुझे जिज्ञासा है कि रामतत्त्व क्या है? भगवान शंकर जिस रामनाम का जप करते हैं, उपनिषद जिस रामनाम की महिमा का उद्घोष करते हैं। क्या वो ही राम दशरथ का बेटा है? दोनों एक कि बिलग है? जैसे साधक अंदर से डेवलप होता है, तब उसका दर्शन बदलता है, कुबूल करना चाहिए। गांधीजी ने भी कहा था कि मेरा राम व्यापक होते-होते समष्टि रूप हो गया। पर पहले शुरूआत तो 'रघुपति राघव राजा राम' से ही हुई थी। पोरबंदर को पूछो, जहां गांधी का जनम हुआ है। पहले तो रंभाजी ने गांधी के मन में रामनाम डाला वो दशरथ का बेटा ही था, राघव राम ही था। लेकिन राम डेवलप होता है तो आदमी भी डेवलप होता है। फिर उसका राम विशाल गगन की तरह होता है। तो लंबी-चौड़ी थकावटवाली साधना करने की जरूरत नहीं, बस रामनाम लो।

ये राजघाट के चार कोने हैं। अध्यात्मजगत में भी ये जरूरी है, भौतिक जगत के लिए भी जरूरी है। राजघाट राजधर्म की विद्यापीठ है। राजघाट के चार कोने के बारे में मेरी जिम्मेवारी के साथ मुझे मेरे विचार प्रस्तुत करने हैं। एक, अभेद; बापू की समाधि का एक कोना अभेद है। कोई भेद नहीं; न जाति का, न वर्ण का, न मज़हब का। सर्वधर्म समभाव। दूसरा कोना, अभय; गांधी का अभय। सत्य की कूख से जो बेटा जन्मता है वो ही अभय है। बिना सत्य कोई अभय हो ही नहीं सकता। तीसरा कोना, अमन, शांति, निर्वैरता। पूरे विश्व में अमन हो। चौथा कोना, अवध, अहिंसा। जहां किसीका वध होता न हो ऐसा एक जगत।

मानस-राजघाट : ३

गांधी में राजनीति नहीं है, राजधर्म है

आईये, नव दिवसीय रामकथा का केन्द्रीय बिंदु है 'मानस-राजघाट', उसकी सात्त्विक-तात्त्विक चर्चा हम संवाद के सूर में कर रहे हैं। आगे बढ़ें। कथा के लिए जो भूमि पसंद की गई है, वो भूमि राजघाट की है। ये पूरा परिसर राजघाट है। हमारी यात्रा हो राजघाट से रामघाट तक और फिर सावधान! यहां 'राम' शब्द आता है तो कोई संकीर्ण अर्थ न करे, क्योंकि देश की कुछ विचारधारा को आदत-सी हो गई है कि जब भी 'राम' जो शब्दब्रह्म है, वो बात आती है तो संकीर्ण अर्थ लगा दिया जाता है! तो यहां 'राम' शब्द का प्रयोग हो रहा है वो ब्रह्मराम है, आत्माराम है। सबकी आत्मा के रूप में राम है। तो, राजघाट की भूमि पर यात्रा शुरू हो रही है, पहुंचना है रामघाट तक। 'रामघाट कह किन्ह प्रणामू।' गोस्वामीजी लिखते हैं, 'भए मनु मगन मिले तनु रामु।' दिल्ही का ये राजघाट हमें उस रामघाट की और निर्देश करता है। राम यानी जन-जन, राम यानी जाति-जाति, राम यानी धर्म-धर्म, राम यानी घट-घट, राम यानी 'सर्वम् खलु राम ब्रह्म।' इस अर्थ में रामतत्त्व है यहां। गोस्वामीजी ने 'मानस' में 'राजघाट' शब्द का प्रयोग एक बार किया है। 'रामघाट' शब्द का प्रयोग दो बार किया है। क्या संकेत है तुलसी का? 'रामचरित मानस' संकेतात्मक है। 'रामचरित मानस' सूत्रात्मक है। 'रामचरित मानस' सत्यात्मक है। 'रामचरित मानस' शास्त्रात्मक है; संवादात्मक है।

मैं दो दिनों से कह रहा हूं कि ये राजघाट राजधर्म की पाठशाला बन सकती है। और ये राजघाट राजधर्म की दीक्षा दे सकता है। बहुत विशाल अर्थ में राजधर्म सीखा सकता है, राजनीति नहीं। राजनीति सिखाएं वो राजघाट नहीं। राजधर्म और राजनीति में अंतर है प्यारो! राजनीति में सत्य कभी-कभी खो जाता है, कभी-कभी क्या; ज्यादा मात्रा में! राजनीति में कभी-कभी प्रेम की गेरमौजुदगी भी होती है, परस्पर प्रीत का अभाव नजर आता है। राजनीति में कभी-कभी करुणा कम दिखती है, कठोरपन ज्यादा उभर आता है। राजधर्म सत्यप्रधान होता है। राजधर्म प्रेमप्रधान होता है। राजधर्म करुणाप्रधान होता है। गांधीबापू को मैं राजनीति का आदमी नहीं समझूंगा, राजधर्मी समझूंगा। ये मेरा अंगत विचार है। ये महापुरुष राजधर्म का आदमी रहा। उसके राजधर्म के सत्य की ताकत तो देखो! अंग्रेज

सुप्रिटेन्डन्ट जिसके हाथ में पिस्तोल थी! गांधीबापू के हाथ में एक लाठी थी! और वो लाठी किसी को प्रहार करने के लिए नहीं रखी थी और कोई प्रहार करे तो उसे रोकने के लिए भी नहीं रखी थी। ये लाठी पर अदृश्य राष्ट्रध्वज फ़ैरता रहता था। केवल छब्बीस जनवरी को नहीं; केवल पंद्रह अगस्त को नहीं। निरंतर चौबीस घंटों गांधी की लाठी पर एक अदृश्य राष्ट्रध्वज था। काश, मेरा देश इस राष्ट्रध्वज को देख पाए! और गांधी की लाठी ही जंडा ऊँचा रख सकती है, ओर नहीं रख पाएंगे! तो, लाठी दंड का प्रतीक नहीं, उद्दंड का प्रतीक नहीं, सजा और शिक्षा का प्रतीक नहीं, सावधानी का प्रतीक रहा। अंग्रेज रिवोल्वर लेकर एक मुठ्ठीभर हड्डी वाले आदमी के सामने खड़ा रहता है! हमारे एक गुजराती कवि की कविता मुझे भेजी गई है। कवि का नाम है भावेश पाठक। मैं उसका हिन्दी करूंगा लेकिन पहले पढ़ूं। बाप, भावेश पाठक की गांधीबापू के प्रति एक अंजलि है। गुजराती शब्द है, सरल शब्दों में उसने कुछ पते की बात ही है।

पोतडी, चश्मां अने एक लाकडी।
जे हजारो तोपने भारे पडी।

उस आदमी ने बापू के सामने पिस्तोल करके कहा कि गांधी, सावधान! बापू ने हलकी-सी मुस्कुराहट देते हुए कहा कि मैं भी यही कह रहा हूं, सावधान! ये सत्य की ताकत थी। और साहब, इतिहास कहता है, उस अधिकारी के हाथ से पिस्तोल गिर गई! ठीक कहा था इतने बड़े साईन्टिस्ट आईन्स्टाईन ने कि शतकों के बाद हमारी पीढ़ी मानने को राजी नहीं होगी कि मुठ्ठीभर हड्डीवाला एक आदमी हमारे समय में इस जमीन पर कदम रख रहा था जिन्होंने अहिंसा के मारग से विश्व को आज़ादी का संदेश पहुंचाया, आज़ादी दिलवाई! 'क्विक ईन्डिया' एक बार ये आदमी बोला और जाना पड़ा! 'राम' 'राम' तो हम भी बोलते हैं, बापू भी बोलते हैं। लेकिन कितना फ़र्क रहा होगा! क्योंकि डेप्थ ओफ ट्रुथ; जहां रामनाम सत्य की गहराई से प्रगट होता हो, प्रेम की गहराई से प्रगट होता हो, करुणा की गहराई से प्रगट होता हो।

छाप आखा विश्व पर पाडी गई,
दांडीयात्राए गयेली चाखडी।

गांधी को माननेवालों को दो मंत्र लेने चाहिए, खादी और सादगी। एक तो खादी। आप कायम न पहनो तो मुझे कोई चिंता नहीं, मैं अपील करता रहता हूं व्यासपीठ से कि मेरे श्रोतागण कम से कम साल में दो-तीन पैर खादी के कपड़े रखे। एक बार खादी पहनकर स्वाद तो लो फिर ओर वस्त्र बेस्वाद लगेंगे! मैं सालों से पहन रहा हूं इसलिए बोल सकता हूं। और खादी की अपील करनेवाले खादी पहने! मेरी पोथी का वस्त्र खादी का है। पोथी भी खादी पहनती है। मेरी ये चादर, मेरा ये तकिया, सब अपनी जो सामग्री है। अपना जो साम्राज्य है इतना छोटा-सा, सब खादी मंडित है। मेरी रामनामी खादी की होती है। खादी और जीवन की प्रक्रिया सादी, दो मंत्र लेने चाहिए। जीवन में सादगी हो। प्लीझ, मैं खादी सालों से पहनता हूं। लगभग पैंसठ से मैं पहन रहा हूं।

'गांधीवाद' शब्द बापू को प्रिय था कि नहीं, मुझे खबर नहीं! लेकिन गांधीवादी चिकनें जरूर होते हैं! गांधी बहुत प्रेक्टिकल आदमी रहा, व्यवहारु आदमी रहा। देशकाल के आधारित सोचनेवाला महापुरुष। माधवबाग की कथा सालों पहले थी। मैं तो खादी पहनता था। तो एक पुराने गांधीवादी था उसने कहा, बापू, आप खादी पहनते हो? मैंने कहा, कोई गुनाह तो नहीं है! तो कहे, पहले कांतो, पहले रेंटिया कांतो फिर खुद बुनो, फिर पहनो। ऐसे ही पहन लिया! मैंने कहा, ऐसी सिखावन दोगे तो सब खादी भंडार पड़े रहेंगे! जो बिना कांते पहनते हो तो पहनने दो ना! मुझे तो कांतना भी आता है। मैं ट्रेनिंग ले रहा था शिक्षक की, एक साल मैंने रेंटिया कांता है। मुझे कापड़ बुनना भी आता है। अब थोड़ा भूल गया। ये मैंने किया है। एक साल का अभ्यास था मेरा, हमको कंपल्सरी पांच मीटर कपड़ा बुनता पड़ता था। प्राईमरी स्कूल के ट्रेनिंग में ये कोर्ष में आता है कि इतनी खादी कांतो। मैं प्रार्थना करूं, बापू के तीर्थ में बैठे हैं, खादी को नमन करना। मैं आप पर कोई दबाव नहीं डालना चाहता कि आप खादी पहनो जरूर। ओर वस्त्र भी पहनिये, आपकी मौज। आपकी रुचि के विरुद्ध मैं कुछ नहीं करना चाहता। लेकिन फिर भी एक-दो पेर यार छब्बीस जनवरी पे तो पहनो। पंद्रह अगस्त को पहनो। तीस जनवरी को पहनो। दो अक्टुबर को पहनो।

विनोबाजी की जन्मतिथि हो तब पहनो। गांधी की निर्वाण तिथि हो तब पहनो। आनंद आएगा। साहब, पवित्र रहे न रहे लेकिन खादी पहनने से ही पवित्रता महसूस होने लगती है। मेरे श्रोता तो ऐसा करते हैं, उसका मुझे आनंद है। चलो आगे बढें।

मोक्षने पामी ए त्रणेत्रण गोळीओ,
चामडीना तीर्थमां ए जइ चडी।

महात्मा की चमड़ी में ये गोली अंदर गई। एक तीर्थ में; चर्मतीर्थ, चर्मउद्योग पर गांधी ने बहुत काम किया। बाप, गांधी की लाठी प्रहार के लिए नहीं थी। और कोई प्रहार करे तो रोकने के लिए भी नहीं थी। ये लाठी पर फ़ैरता था आज़ाद भारत का किसी की नज़र में न आए ऐसा राष्ट्रध्वज। ये लाठी है गांधी की।

तो, हमारी चर्चा जो चल रही है कि गांधी में राजनीति नहीं है, राजधर्म है। राज्यसंचालन की अमुक नीति जरूर होती है। उसको कबूल करनी पड़ती है। 'महाभारत' में राजनीति, चाणक्य की राजनीति लेकिन राजनीति माने तो खटपट की बातें हैं, संघर्ष की बातें हैं, इधर-उधर करने की जो बातें हैं वो राजनीति बापू में कहां? तो मेरे भाई-बहन, मैं इसीलिए कहता हूं कि राजघाट की भूमि से हम राजधर्म सीख सकते हैं। और तुलसी कहते हैं-

राजधरम सरबसु एतनोई।
जिमिमन माँह मनोरथ गोई।।

'मानस' में जब राजधर्म की चर्चा चली तब भगवान ने ऐसा कहा।

एक सुभाषित में कहा गया है कि-

नृपस्य चित्तं कृपणस्य वित्तं मनोरथाः दुर्जनमानवानाम्।
पुरुषस्य भाग्यं स्त्रीणां देवो न जानाति कुतो मनुष्यः।।

राजा का मन किसी को जानने में न आए। ये राजनीति का एक लेकिन बोले तो सत्य न बोले, पता न लगे और अमारे आज के वर्तमान शासन में तो अच्छा है कि हमारे आदरणीय प्रधानमंत्री महिने में मन की बात तो करते हैं। ये अच्छी बात है, वर्ना राजा के चित्त को समझना मुश्किल माना गया। सुभाषितकार ने कहा, राजा का चित्त समझ में नहीं आता है; नहीं आना चाहिए। कुछ बातें गोपनीय रहनी चाहिए, उजागर नहीं की जाती, वर्ना राष्ट्र को नुकसान हो जाए। सुभाषित में कहा है, राजा का चित्त किसी को पता नहीं लगना चाहिए। लोभी के धन का किसी को पता नहीं चलता। अल्लाह भी नहीं जानता! दुर्जन व्यक्ति मनोरथ करता रहता है, पता नही है। स्त्री का चरित्र यहां आलोचना के रूप में नहीं। स्त्री चरित्र मानी सीताचरित्र। यहां स्त्री का चरित्र किसी की समझ में नहीं आता, वो आलोचनात्मक नहीं है। स्त्री चरित्र की महिमा का मंडन है। 'मानस'कार ने भी कहा, 'जाहि न जाई नारी गति पाई।' लेकिन यहां जो चरित्र है इस सीता चरित्र की बात है। एक महान महिमावंत पवित्र चरित्र की वंदना है। अहल्या, द्रौपदी, सीता, तारा, मंदोदरी। ऋषिओं की विचारधारा कितनी लोकतांत्रिक रही होगी! आज के परिप्रेक्ष्य में उसका अभ्यास किया जाए, उस पर खोज की जाए। लेकिन इन मूल पर नये-नये फूल खिलाने पड़ेंगे। हमारा शाश्वत जो मूल है उसको तो पकड़े रखना पड़ेगा। सीता को भूलना घाटे का सौदा है। अहल्या को भूलना घाटे का सौदा है। तारा को भूलना, मंदोदरी को भूलना, द्रौपदी को भूलना ये नुकसान का धंधा है। लेकिन चिंतन आगे बढ़ना चाहिए। विनोबाजी कहते हैं, मैं कल जो बोल गया हूं, आज कुछ नया बोलूंगा तो मेरे कल के निवेदन पर उंगली मत उठाएगा, क्योंकि में रोज नया हूं। और गांधी बापू कहते हैं कि मैं आज जो बोलूं, कल मेरे विचार बदले तो में दूसरा बोलूंगा। और कल जो मैं बोलूं उसको सत्य मानना। कल की बात वासी हो गई है। आदमी रोज नया होना चाहिए। नया चिंतन रोज होना चाहिए। जिसस ने भी कहा था, उसने सूत्रात्मक रूप में कहा था कि आदमी को चाहिए रोज नया कपड़ा पहने। वस्त्र नहीं, आदमी की सदवृत्ति रोज नई होनी चाहिए। आदमी ताजा-तरोजा होना चाहिए।

तो, जो निकट पड़े, एक नया फूल खिलाओना। मैं आपको गिना दूं। इसमें एक पहला नारीरत्न कस्तूरबा। कस्तूरबा का क्या गांधी के प्रति समर्पण था! कितनी सादगी से भरी महिला! और कहां बापू का उग्र स्वभाव! महादेवभाई देसाई लिखते हैं, उसके पर्सनल आदमी; उसने कहा कि गांधी के साथ जीना ये फ़टे हुए ज्वालामुखी के पहाड़ पर जीना! ये आदमी कब रूप

बदले! वो महिला बीसवीं सदी की एक महिला थी। ये मेरी व्यासपीठ की पंचकन्या है। नये फूल खिलाओ सीता, द्रौपदी, तारा, अहल्या, मंदोदरी को मूल में रखते हुए। ये नीव है, अवश्य नीव है। लेकिन नई खुश्बू है। दूसरी कन्या वीरांगना राणी लक्ष्मीबाई। तीसरी कन्या मेडता की महाराणी मीरां। मीरां निकट पड़ती है। क्या चरित्र है! मीरां निकट पड़ती है। काल में भी निकट पड़ती है। समझने में भी निकट पड़ती है। तो एक है कस्तूरबा। एक है राणी लक्ष्मीबाई। तीसरी है मीरां। चौथी है मेरी गंगासती। गंगासती एक आध्यात्मिक महिला हुई है। जो इस जमाने की महिला, एक बिलकुल देहात में पली क्षत्रिय कुल में उसने जो आध्यात्मिक ऊंचाई पकड़ी थी उसको मैं पंचकन्या में गणना में लूंगा। तो एक पहुंची हुई जागृत महिला गंगासती जो निकट पडती है। पंचकन्या में मैं उसका नाम रखूंगा मेरी जिम्मेवारी से और -

सोनलमाँ आभ कपाळी भजां तने भेळियावाळी।
उगमणा ओरडावाळी, भजां तने भेळियावाळी।

ऐसी तो कई हम पांच कन्या खोज सकते हैं। ये तो अभी चित्त के प्रवाह में जो आया सो मैंने गिनाया। लेकिन भारत को चाहिए पंच कुमार भी खोजे। वेदकालीन पंच कुमार है। चार सनतकुमार और पांचवा देवर्षि नारद ये पंच कुमार वेदकालीन है। अपने निकट पड़े ऐसे भी पांच कुमार, पांच युवक हम खोज सकते हैं। अभी हमारे हजार साल के अगल-बगल में जाए तो सबसे बड़ा कुमार मेरी नजर में आता है जद्गुरु आदि शंकराचार्य, बत्तीस साल की उम्र में जिन्होंने शांकर दिग्विजय करके विश्व को दिखा दिया। एक ओर स्वामी विवेकानंद उठा लो। तीसरा स्वामी रामतीर्थ ले लो, बादशाह राम, शहेनशाह राम; ये फ़कीर को आप उठा लो। और मुझे कोई आपत्ति नहीं, पंजाब से बुल्लेशाह को उठा लो, बुलिया को उठा लो। साहब, कोई भेद नही है, ये राजघाट है। यहां कोई भेद नहीं होना चाहिए। तो ऐसे पांच-पांच कुमार भी हम खोज सकते हैं।

तो, हमारी चर्चा चल रही है कि बापू राजधर्मी है। नीति में कुछ वस्तु आवश्यक होती है। लेकिन यहां से यदि राजधर्म सीख लिया जाए तो मुझे लगता है, हमारी यात्रा राजघाट से रामघाट तक संपन्न हो जाए। और यहां 'राजघाट' तो हमारा राष्ट्रीय शब्द है। रहना चाहिए लेकिन हकीकत में तो ये रामघाट ही है ना? समाधि पर तो 'हे राम' लिखा है। असल में तो रामघाट ही है। ये रामघाट है। राजघाट भूमि है, भूमिका है रामघाट। राजनीति और राष्ट्रप्रीति, राजनीति और राजधर्म में बहुत अंतर भी है। राष्ट्रधर्म हमारे जीवन में प्रधान हो। राष्ट्र को संचालित करने के लिए नीतिओं की जरूरत पड़ती है। उसका स्वागत किया जाए। लेकिन प्रधान राजधर्म हो।

महाकवि कालिदास से कौन अपरिचित है? कालिदास ने एक प्रश्न पूछा है कि हे अभिसारिका, मध्यरात्र में तेरे सिर पर एक गगरी लेकर तू कहां जा रही है? और तेरी गगरी में क्या है? तब वो अभिसारिका कहती है कि मेरी गगरी में आठ अनर्थ है।

मद प्रमादः कलहश्च निद्रा बुद्धिर्क्षयो धर्मविपर्ययश्च।
सुखस्य कन्था दुखस्य पन्था अष्टावनर्था निवसन्ति कर्के।।

आठ अनर्थ मेरी गगरी में है। एक मद; दूसरा आलस-प्रमाद; तीसरा निद्रा मानी बेहोशी; चौथा, कलह, कंकास, घर्षण, वाद-विवाद; धर्म से बिमुखता अनर्थ है। निद्रा अनर्थ है। और कहते हैं, 'सुखस्य कन्था।' कंथा उसको कहते हैं, जो साधु की-फ़कीरों की गुदड़ी होती है। 'सुखस्य कन्था', 'दुखस्य पन्था' और नरक के पंथ, 'अष्टावनर्था निवसन्ति कर्के।' मेरी गगरी में आठ अनर्थ है। राजधर्म पति है, राजनीति पत्नी है। और राजधर्म न हो तो राजनीति अभिसारिका बन जाती है। और केवल राजनीति में आठ अनर्थ होते हैं। पहला अनर्थ है मद। तुलसी कहते हैं-

नहि केउ अस जनमेहु जगमाही।
प्रभुता पाई जाई मद नाही।।

गोस्वामीजी कहते हैं, ऐसा दुनिया में कोई पैदा नहीं हुआ कि जिसको प्रभुता मिली और मद न आया हो। मत्त, प्रमाद; मथ, मथा का दूसरा अर्थ शराब। मैंने कल अखिल भारतीय नशाबंधी परिषद के तत्त्वावधान में नशाबंधी भवन की शिला रखी। बड़े-बड़े महापुरुष हमारे देश के उन्होंने उसकी अध्यक्षता की है। देश को नशामुक्त करने के लिए पूरी योजना की। मैं प्रार्थना करके आगे बढ़ूं कि वाल्मीकि ने राजधर्म को एक सूत्र दिया। राम, राजा जिस तरह वर्तता है, प्रजा उसी तरह चलती है। इसलिए

राघव, तेरा चरित्र ऐसा हो, तेरी प्रजा में गलत संदेश न हो। राजा शराबमुक्त होना चाहिए। राष्ट्र की सत्ता में बैठे हुए लोग नशामुक्त होने चाहिए। मैं तो कोई सलाह नहीं दे रहा हूं। लेकिन जो अपेक्षा है रामराज्य की वो कह रहा हूं। सलाह नहीं है। और मुझे पता है, अपनी सलाह कौन माने? ये शपथ दिलाते हैं, उसमें ये भी होना चाहिए कि 'मैं कभी पीउंगा नहीं।' बाप! अमृत पी रहे हैं। मैं किसी की आलोचना नहीं कर रहा हूं। लेकिन मेरा राष्ट्र नशामुक्त हो। मेरे राष्ट्र का परिवार, मेरे राष्ट्र की व्यक्ति नशामुक्त हो। गांधीबापू ने कहा कि एक घंटे के लिए मुझे यदि दुनिया का तानाशाह बना दिया जाए तो पहला काम ये करूं कि दुनिया को नशामुक्त कर दूं। राष्ट्रनायक नशामुक्त हो। अभक्ष; भक्षी न हो। राष्ट्र का सद्भाग्य भी है। जो बात है वो तो करनी पडे! बाकी तो चौबीस घंटे पीनेवाले भी आए हैं! जाग्रत न हो वो क्या काम करेगा दुनिया का बाप! 'नाम खुमारी नानका।' नाम का नशा हो। गांधी का नशा, राम का नशा था।

तो बाप! आठ अनर्थ भरे हैं। कभी-कभी तो मैं देखता हूं कि आदमी में ये अनर्थ न हो और कभी-कभी राजनीति में जाते ही अनर्थ आने लगते हैं! और फिर कहते हैं, भाई, ऐसे माहोल में रहना पड़ता है तो दो घूंट तो लेनी पड़ती है! दो घूंट चोपाई की पी ना! प्रमाद; आलस, अकर्मण्यता। कलह, तकरार। राजनीति में लोग एक-दूसरे से तकरार करते हैं तो मुझे लगता है कि अनर्थ नहीं तो क्या है? संवाद नहीं कर सकते? सही बात हो और संघर्ष हो तो समझ में आए लेकिन बस संघर्ष-संघर्ष! कलह-कलह! निद्रा, बेहोशी; भान में ही नहीं! कोई धर्म से विपरीत वृत्तियां! और नर्कस्य पंथा। नर्क का मारग। आठ अनर्थ अभिसारिका कहती है, मेरी गगरी में निवास करते हैं। तो कभी-कभी राजनीति में यदि राजधर्म न हो तो ये अनर्थ प्रवेश कर जाते हैं। अनर्थ उझलने लगते हैं। राजधर्म हो तो मद नहीं। पद का मद नहीं, पादुका का आनंद होता है। पद नहीं सद्; सुरा, शराब नहीं, सुधा। राजधर्म जब आता है तो पद का मद नहीं आता, सद् आता है। और गांधी में राजधर्म था इसलिए उसने सत्य का मार्ग उठाया। सद् है, सत्य है। प्रमाद अनर्थ है राजनीति में लेकिन राजनीतिज्ञ राजधर्मी हो जाए तो प्रमाद नहीं होता। अविरत कर्मनिष्ठा होती है। विवाद नहीं, संवाद। कुछ बातें मैं राजघाट पर न कहूं तो कहां कहूं? हम संवाद क्यों नहीं कर पाते ये बात मेरी समझ में नहीं आती!

बाप! कर्मयोग, कर्मशीलता सुधा है। जब राजधर्म आता है तो आदमी प्रमादी नहीं बनता, कर्मशील बन जाता है। आदमी सोया नहीं रहता। निद्रा नहीं, बेहोशी में नहीं, होश में रहता है। आज किसी ने मुझसे पूछा है कि 'बापू, समाज सो जाए तो साधु जगाए, साधु सो जाए तो कौन जगाए?' सो जाए वो साधु ही नहीं! बाकी निद्रा तो सबको लेनी चाहिए। मैंने बहुत सोच-समझकर कहा है कि गांधी की चेतना जाग्रत है, सोई हुई सुषुप्त चेतना नहीं है। आप मानो न मानो, आपकी मोज! मैं आपकी स्वतंत्रता छिनूंगा नहीं, लेकिन मेरी महसूसी तो मैं जरूर कहूंगा। ज्योति जल रही है। सोये वो साधु ही कैसा? न कलह हो, न आलस हो, न बेहोशी हो, वो राजधर्म। पद होते हुए सद् चुका न हो वो राजधर्म। धर्म से विपरीत बात न हो। धर्म मानी सत्य, प्रेम, करुणा। धर्म मानी सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह। विशेषणमुक्त धर्म। सबको अपने धर्म में निष्ठा हो लेकिन सबका समादर हो। और सनातन धर्म ने, भारतीय हिन्दु फ़िलोसोफ़ी ने जो औदार्य बताया! मैं आंकडों में नहीं जाता, वर्ना मैं आंकडें देकर आपको बता सकता हूं कि साहब, पूरी दुनिया में सर्वे कीजिए हिन्दुस्तान में कितनी उदारता के साथ सभी संस्कृतिओं को अपने में समाहित किया! हकीकत तो हकीकत है। अपनी बाहों में कितना समभाव, कितना समादर है यहां! तो बाप, यदि राजधर्ममुक्त राजनीति है तो आठ अनर्थ है। और राजधर्म से जुड़ी हुई राजनीति है तो वो ही आठ सार्थक अर्थ हो जाते हैं। जीवन के लिए उपयोगी मूल्य प्रगट हो जाते हैं। तो हमारी यात्रा है राजघाट से रामघाट तक, 'हे राम' तक। परम के नाम तक की ये यात्रा है।

अब थोड़ा कथा का क्रम आगे उठाउं इससे पूर्व कलके और आज के आपके कुछ प्रश्न यथामति, यथाअवकाश मैं कोशिश करुं, उसका उत्तर दूं। पूछा है मुझे व्यक्तिगत तोर पे, 'बापू, एकांत में आप किन खयालों में डूबे रहते हैं?' जब तक कोई भी खयाल बचता है तब तक एकांत है ही नहीं! एकांत का अर्थ है शून्य। एकांत का अर्थ है एक का भी अंत। आदमी खुद भी

न बचे, एक सन्नाटा! एकांत में भी आदमी विचार की, मनोरथ की सीढ़ियां चढ़ता रहे ये तो एकांत नहीं है। वहां द्वैत हो गया। मुझे इतना ही कहना है।

'आपने पचास सालों में कितने लोगों को गेरंटी के साथ सुधारा है?' सुधारने का मेरा धंधा ही नहीं है, स्वीकारने का धंधा है ये मेरा। मैं सुधारने निकला ही नहीं। सबका स्वीकार करने का आदमी हूं। 'बापू, आप योगा करते हैं? आपकी फ़िटनेस का रहस्य क्या है?' ये गाना, मुस्कुराना, नाचना यदि फ़िटनेस का रहस्य है। हमारे पूजनीय रामदेवबाबा ने योग को ग्रंथ और गुफ़ा से निकालकर मैदान में रख दिया। मुझे योगा का कुछ पात नहीं है। योग आप करते हो तो जरूर करिएगा।

'पिछले पंद्रह साल से आपको सुनता रहा हूं और आपका पक्का श्रोता हूं। काफी समय से मेरे मन में ये सवाल है। इसका उत्तर शायद आपके पास ही होगा। सब ईश्वर-देवता की मूर्तिपूजा कर सकते हैं पर महादेव के लिंग की पूजा क्यों नहीं कर सकते?' आपको सुनने वाला एक श्रोता-अविनाश। आप कर सकते हैं। कोई विशिष्ट मंदिर हो वहां कुछ नियम हो तो उसमें जिद्द न करो। बाकी आप घर में शिवलिंग रख कर पूजा कर सकते हो। कौन मना करता है? आप कर सकते हैं। मैं करता हूं। आप भी कर सकते हैं। किसी बुद्धपुरुष के आश्रित की सबसे बड़ी सफलता क्या है?' अखंड विश्वास, विश्वास टूटा, सफलता गई! अखंड भरोसो।

तो बाप, कल हम कथा के क्रम में जिस नाम के प्रभाव से बापू ने आज़ादी दिलवाई, जिस नाम पर गांधीबापू की पूर्णत: निष्ठा बनी रही उस रामनाम की महिमा जो गोस्वामीजी ने लिखी है उसकी कुछ संक्षिप्त चर्चा करते थे। तीर्थराज प्रयाग में भरद्वाजजी के द्वारा की गई जिज्ञासा परमविवेकी याज्ञवल्क्य को कि रामतत्त्व क्या है? याज्ञवल्क्यजी ने भरद्वाजजी को सुनाया वो है शिवचरित्र और ये भी सेतुबंध है। ये भी गांधी की विचारधारा पर अनुकूल है कि जोड़ो सबको। क्या शैव? क्या वैष्णव? क्या शाक्त? क्या जैन? क्या बौद्ध? क्या शीख? क्या ईस्लाम? क्या ईसाई? कल किसीने मुझे पूछा था कि बापू, आप सब धर्म का कीर्तन कराते हैं तो इसाई का कुछ कीर्तन क्यों नहीं कराते? इसाई की हमको कोई प्रार्थना आती नहीं है। इसाई का कीर्तन हम खोज करेंगे। बाकी आइ डोन्ट नो हाउ टु प्रे? तो तुलसी का 'रामचरित मानस' सेतुबंध है। जोड़ने का काम करता है। राम की कथा पूछी गई और याज्ञवल्क्य ने विवेक से शिवकथा शुरू कर दी। ये है सेतुबंध, ये है समन्वय। और जब शंकर कथा कहेंगे तो और त्रिवेणी हो गई। संगम हो जाता है कि शक्ति सुन रही मानी शाक्त सुन रहा है। कथा राम की मानी वैष्णव की और कह रहे हैं शिव, शैव कह रहा है। तो शाक्त, शैव, वैष्णव ये त्रिवेणी हो जाती है। सेतुबंध की ये कथा है। सब का मिलन करती है कथा। यहां राम फूल है, जानकी खुश्बू है। यहां राम सिंधु है, जानकी तरंग है।

कल विश्वशांति की चर्चा होती थी ना तब शांति पाने के दो ही उपाय मेरी नजर में है। एक तो जनक ने हल जोता तब शांति मिली। सीतारूपी शांति को प्राप्त करनी है तो हल जोतो। आदमी आंतर् मंथन करे। हल जोतना मानी जनक का आंतर् मंथन, मिथिला का आंतर् दर्शन। और दूसरा ये हो जाने के बाद यदि ये हम कर सके तो जानकी मिल जाती है। जानकी मानी शांति। कन्या के रूप में शांति हमारे घर में आती है। लेकिन कन्या के रूप

> गांधी में राजनीति नहीं है, राजधर्म है। राज्यसंचालन की अमुक नीति जरूर होती है। उसको कबूल करनी पड़ती है। 'महाभारत' में राजनीति, चाणक्य की राजनीति लेकिन राजनीति माने तो खटपट की बातें हैं, संघर्ष की बातें हैं, इधर-उधर करने की जो बातें हैं वो राजनीति बापू में कहां? यहां से यदि राजधर्म सीख लिया जाए तो मुझे लगता है, हमारी यात्रा राजघाट से रामघाट तक संपन्न हो जाए। और यहां 'राजघाट' तो हमारा राष्ट्रीय शब्द है। रहना चाहिए लेकिन हकीकत में तो ये रामघाट ही है ना? समाधि पर तो 'हे राम' लिखा है। असल में तो रामघाट ही है।

में आई शांति उम्र होते ही दूसरे घर चली जाती है। उसका ब्याह करना पड़ा था। तो शांति जाएगी अयोध्या लेकिन अयोध्यावालों को शांति कैसे मिली? धनुष तोड़ने से। जब तक साधक अहंकार नहीं तोड़ता, अशांत ही रहता है। जब अहंकार टूटा तब आदमी को शांति मिलती है। बाकी तो मंत्रों में बोलना पडता है 'ॐ शांति।' अहम् टूटे या तो खुद का मंथन हो, संशोधन हो। रावण शांति पाने नाटक करके गया तो शांति तो हाथ में नहीं आई, शांति की छाया हाथ में आई। प्रयास तो रावण ने भी किया लेकिन मूल जानकी तत्त्वत: शांति नहीं मिली, शांति की छाया मिली। कहने का मतलब, सीता शांति है। तो ये सेतुबंध की कथा, शिवकथा आरंभ होती है।

एक बार त्रेतायुग में भगवान शिव कैलास से अपनी धर्मपत्नी दक्ष कन्या सती को लेकर कुंभज ऋषि के आश्रम में कथा सुनने हेतु गए। कुंभज ऋषि ने जगत के माता-पिता की पूजा की। शिव और पार्वती जगत के माता-पिता है। सतीने गलत अर्थ निकाला। परिणाम ये हुआ, सती वहां बैठी जरूर लेकिन उसने सुना नहीं। उसको कोई सुख मिला नहीं। बिना सोचे, बिना जाने किसीके प्रति पूर्वग्रह की गांठ बांध लेना रामतत्त्व गंवाने का धंधा है। साधकों को बहुत सावधान रहना चाहिए। थोड़ा धैर्य धारण करे, किसी के प्रति किसी के कार्य कलाप से तुरंत निर्णय न करे। बाप, परिणाम तो आया कि जिस कथा से परम सुख मिलने वाला था वो सती चुक गई। भगवान की कथा परम सुख प्रदाता है। केवल सुख नहीं देती। 'सुनी महेस परम सुख।' जहां-जहां तुलसी 'परम' शब्द लगा देते हैं, अर्थ बदल जाता है।

कथा सुनकर सती संग शिव लौटते हैं। उसी समय त्रेतायुग तो था। भगवान राम का अवतार हो चुका था। दंडकारण्य में भगवान राम लीला करते थे। सीता का अपहरण हो गया था। नरलीला करते हुए भगवान राम-लक्ष्मण जानकी की खोज करते रोते-रोते जा रहे थे उसी समय शिव और सती वहां से निकले। भगवान शंकर ने दूर से ब्रह्म राम को 'सच्चिदानंद' कहकर प्रणाम किया। सती को संदेह हो गया कि ये कौन है, जिसको मेरे पति सच्चिदानंद कहते हैं? ये तो रो रहा है! और शिवजी भाव में डूब गये। रामकथा परम सुख से सुनकर निकले तो शिव को घर पहुंचने से पहले ही राम के दर्शन हो गए। और सतीने सुना नहीं तो दर्शन तो उसको भी हुआ लेकिन शंका हुई। अंतर्यामी भगवान शिव जान गए। भवानी को शिव समझाते हैं कि देवी, जिसको आप रोते हुए देख कर शंका करती हैं ये वेद-पुराण-आगम 'नेति नेति' कहकर आखिर में जिसका वर्णन करते रुक जाते हैं वो ही राम ब्रह्म है। और व्यक्ति के रूप में होते हुए व्यापक तत्त्व है। सती मानने को राजी नहीं हुई! तर्क-वितर्क करती रही! और भगवान शंकर ने कहा, देवी, मेरे कहने पर भी आपका संदेह यदि निर्मूल न होता है तो फिर आप खुद जाकर परीक्षा करे कि ये ब्रह्म है कि कोई सामान्य इन्सान है?

सती में बुद्धि की प्रधानता है। दक्ष की बेटी है। और इश्वर एक ऐसा तत्त्व है केवल बुद्धि से नहीं जाना जाता। मेरी व्यासपीठ ने कई बार कहा कि ब्रह्म परीक्षा का विषय है ही नहीं, प्रतीक्षा का विषय है। उसकी प्रतीक्षा की जाए शबरी की तरह, अहल्या की तरह, सुग्रीव की तरह, विभीषण की तरह। परीक्षा कैसे करे? लेकिन बौद्धिक होने कारण सतीने ये बात कबूल की, ठीक है, मैं परीक्षा करूं। सती एकदम सीता का रूप बना लेती है। तो रूप बनाया सीता का और राम-लक्ष्मण जा ही रहे थे और सीता का रूप बनाकर वो सामने से आई! राम पहचान गए। अंतर्यामी है। सती पकड़ी गई! हम और आप रूप बदल सकते हैं, स्वरूप नहीं बदल सकते। स्वरूप तो खुल ही जाता है। सती वापस लौटती है। सती को लगा कि अब मैं शंकर को क्या जवाब दूं? शिवजी ने ते तुरंत ध्यान में देखा तो सती ने सीता का रूप लिया और सीता तो मेरी माँ है! अब जब माँ का रूप लिया तब मेरा और उसका दांपत्य कैसे हो सकता है? भगवान कैलास पहुंच गए। भवन में नहीं गए। बाहर आसन लगाकर बैठ गये। भगवान शंकर को अखंड समाधि लग गई और सती अकेली भवन में रह गई! सत्तासी हजार साल बीत गए। इतने सालों के बाद शिव जागे। सती एकदम बाहर आई। प्रणाम किया। शिवजी ने सन्मुख आसन दिया। उसी समय दक्ष प्रजापति के यज्ञ की बात आती है। सती प्रश्न करती हैं और दक्षयज्ञ में जाने के लिए जिद्द करती है। वो सब कथा मैं कल की कथा में आगे बढ़ाऊंगा।

मानस-राजघाट : ४

मंदिर का पाटोत्सव होता है वैसे राजघाट का पाटोत्सव होना चाहिए

राजघाट को केन्द्रबिंदु बनाकर मूल में 'मानस' रखते हुए पू.गांधीबापू के विचारों में कहां-कहां 'रामचरित मानस' प्रगट हो रहा है इसकी कुछ विशेष चर्चा कर रहे हैं। गोस्वामीजी ने 'बालकांड' को एक सरोवर का रूपक बनाया और इसके चार घाट बनाये। चार घाट है चार दिशा में, उसमें पूर्व दिशा का घाट वो प्रपत्ति का घाट, शरणागति का घाट है। केवल वहां प्रसाद ही बरसता है, जहां कोई प्रयास की जरूरत ही नहीं है। उसके प्रधान वक्ता स्वयं गोस्वामीजी खुद है, उसका खुद का अपना मन है। ओर तीनों घाट, जिसमें पश्चिमघाट, हिमालयघाट, कैलासघाट है। उत्तरघाट नीलगिरिवाला घाट, भुशुंडिवाला और दक्षिण का तीरथराज प्रयाग का घाट है। तीनों जगह 'नाथ' शब्द से शुरूआत होती है। तीनों घाट में प्रथम संबोधन 'नाथ' है। आईये, शुरूआत पहले उत्तरघाट से करें। जो बाबा भुशुंडि का घाट है, जिसे उपासनाघाट माना गया है।

नाथ कृतारथ भयउँ मैं तव दरसन खगराज ।
आयसु देहु सो करौं अब प्रभु आयहु केहि काज ।।

हे नाथ, अनाथ की स्वीकृति है। तो क्या भुशुंडिजी अनाथ है? ये महात्मा जिसके पास लबालब संपदा भर जाती है उसको कोई विशेष व्यक्ति झिलनेवाला मिल जाता है तो उसको उड़ेलनी ही होती है। मैं दूं किसी को। शिष्य गुरु को खोजता है पर गुरु आश्रित को खोजता है कि मुझे कोई रिसिव करे। इसलिए एक महान बुद्धपुरुष भुशुंडि के पास रोज हंस कथा सुनते थे फिर भी उसको खोज थी, कभी खगराज आ जाये और मैं उसको कथा सुनाउं। उसकी उड़ान से चोपाईयां गुंजे। लेकिन गरुड का भुशुंडि के एक जोजन परिसर में प्रवेश करते ही 'गयउ मोर संदेह सुनेउँ सकल रघुपति

चरित।' आप सदा-सदा कृतार्थरूप है। तो, उत्तर दिशावाला घाट जो उपासना का घाट है वो 'नाथ' शब्द से शुरू होता है। घूमते-घूमते मुझे राजघाट पहुंचना है।

उत्तरदिसि सुंदर गिरि नीला।
तहँ रह काकभुसुंडि सुसीला।।

दक्षिण दिशा का घाट है तीरथराज प्रयागघाट। उसको पंचायती घाट भी कहते हैं। उसका दूसरा प्रसिद्ध नाम है कर्मघाट। यहां तीन नदियां बहती है, एक प्रगट और दूसरी अप्रगट। उसका आरंभ भी 'नाथ' शब्द से होता है -

नाथ एक संसउ बड़ मोरें।
करगत बेदतत्त्व सबु तोरें।।

भरद्वाजजी ने याज्ञवल्क्य को 'नाथ' कहके पुकारा। यहां वक्ता को नाथ कहते हैं और आरंभ करते हैं। पश्चिमघाट है वो कैलासघाट, वो ज्ञानघाट है। उसको संतों की बोली में राजघाट भी कहते हैं। क्योंकि ज्ञान से उंचा पवित्र और कौन है? और ज्ञान का अधिकार चारों वर्णों को है। ये घाट कठिन भी है और दुर्गम भी है। क्योंकि ये ज्ञानघाट है। विवेक को भी ज्ञान कहते हैं। वो राजघाट है। उस राजघाट की छाया में, इस राजघाट को समझने की कोशिश करें। यहां भी 'नाथ' शब्द से शुरूआत होती है -

बिस्वनाथ मम नाथ पुरारी।
त्रिभुवन महिमा बिदित तुम्हारी।।

हे विश्वनाथ, हे ममनाथ, याद रहे तू मेरा भी नाथ है। पार्वती ने संकीर्ण अर्थ किया। अब तुलसीवाला जो घाट है इसमें 'नाथ' शब्द से आरंभ नहीं हुआ है -

कहहु कथा सोई सुखद सुहाई।
सादर सुनहु सुजन मन लाई।।

बाप! कैलास का घाट ज्ञानघाट कहा जाता है। संतों ने इसे राजघाट कहा है। राजघाट को गांधीबापू ने तो उंचाई दी पर अब जिसकी जिम्मेवारी है उनको उसे उंचा उठाना पड़ेगा। गांधीजी की सभी बातों को लेने के लिए कैलास के स्मरण के साथ समझना पड़ेगा। कम से कम जहां बने पड़े है वहां रहे तो भी अच्छा। जैसे प्रतिवर्ष मंदिर का पाटोत्सव होता है, वैसे राजघाट का प्रतिवर्ष पाटोत्सव होना चाहिए। राजघाट के पाटोत्सव का एक अंग है राजघाट पर ये रामकथा। यहां उसकी नींव डाली जा रही है क्योंकि उस पर कैलास का वरदान है।

बाप! पाटोत्सव एक नवदर्शन है। गांधी के विचार आज के युवक जल्दी कबूल नहीं करेंगे। रोज कांतना, खादी पहनना! कल मैंने खादी पहनने की अपील भी की है। करोगे तो अच्छी बात है क्योंकि कई सालों से मैं खादी पहनता हूं। पर मैं कांतता नहीं हूं। भीड के लिए मैं बोलता नहीं हूं। मेरे अंदर का एक आदमी सुनता है वो ही काफ़ी है। आज का युवान नवदर्शन करें। खादी नहीं परंतु ज़िंदगी को कम से कम सादी रखे। 'मानस' ने शिक्षा का एक अद्‌भुत सूत्र दिया है।

चातक कोकिल कीर चकोरा।
कूजत बिहग नटत कल मोरा।।

जनक की पुष्पवाटिका में पक्षी चातक, कोयल, तोता और मोर है। चातक का स्वभाव है, एक विशेष जल को पीना, खाली नक्षत्र के जल के लिए वो लालायित है। ऐसी वृत्ति अपनाकर कोई विशेष विद्या प्राप्त करके अंदर मोती पकाना चाहिए। कोकिल का टहुका होना चाहिए। बुद्धपुरुष बड़ी मछली पकड़ लेता है। कहते हैं, तोता 'राम राम' बोलता है। 'भारत' में बीच में 'र' आता है, 'इन्डिया' में नहीं है। बीच वाला 'र' तुलसी ने शिक्षा में रखा है। व्यासपीठ का 'राम' एक फ्रेम में नहीं मढ़ा जाएगा। वो आकाश में भी नहीं समायेगा, इतना विशाल 'राम' है। विद्यार्थी के जीवन में कोई मंत्र होना चाहिए। चकोर की दृष्टि एक चांद के लिए लालायित है। चकोरभाव रखना है। और आखिर मोर था। मोर नाच रहा है। शिक्षक छात्र को उठ-बेस ना कराये। बेड़ियां नहीं डालनी चाहिए, नर्तन घुंघरू बांधो। 'विद्या, विनय निपुण गुन सीला।' 'मानस' से शिक्षासूत्र राम चार वस्तु सीखे शिक्षा दरम्यान। कर्म-कौशल्य निपुण का अर्थ है। शिक्षणनीति का सूत्र है। रचनात्मक हो। स्कूल-कालेज शील प्रदान करे। थोड़ा नवदर्शन करे। पाटोत्सव करे।

कैलासघाट को-ज्ञानघाट को राजघाट बताया गया है। गांधीबापू ने अपने ढ़ंग से कोशिश की। मैं कहता हूं तो आज का युवक खादी पहनता है। जीवन की रीत सादी हो।

सादगी शृंगार बन गई,
आईने की हार हो गई।

बेकल उत्साहीसाहब का मशहूर शे'र है। वस्त्र लज्जा शोभा जरूरी है। तुलसी ने छूट दी है। पर सादगी होनी चाहिए। गांधीबापू में भी थी। उस समय भी गांधी के सूत्रों पर बहुस बहस होती थी। आज भी होती है। गांधीबापू ने कहा, ब्रह्मचर्य व्रत रखो। क्या आज का युवान करेगा?

सत्य, अहिंसा चोरी न करवी, वणजोतुं नव संघरवुं।
ब्रह्मचर्य ने जाते महेनत कोई अडे नहीं अभडावुं।

आज का युवक ब्रह्मचर्यवाला व्रत कबूल न करे पर ब्रह्मचर्य को सुनने के लिए तैयार हो तो भी बहुत। वो तुम्हें ब्रह्म में आचार करनेवाला बनायेगा। और दूसरा स्वाद; इसके आगे फ़ीके पड़ जाएंगे। गांधी का व्रत अस्वादव्रत। युवान तो नहीं, मैं भी नहीं कबूल करता! भजिया दो और स्वाद न हो तो वो भजिया का अपमान है! गांधी के साथ विवेकपूर्ण असहमत होना वो भी गांधी का वंदन है। आदमी स्वंतंत्र होना चाहिए। सद्‌गुरु से सही स्वतंत्रता प्राप्त हो वो मर्यादा नहीं तोड़ेगा। पदार्थ के स्वाद से युवान को मुक्त करना है। उसको कभी प्रेम से सत्य का, प्रेम का या करुणा का स्वाद बताओ, वो अपने आप छोड़ देगा। बापू के व्रत बहुत तीक्ष्ण थे। बापू की सब बातों से मैं भी सहमत नहीं हूं, ये मेरी स्वतंत्रता है। परिग्रह न करो, बापू का सूत्र है। आज के युवक के पास कितने बूट-चप्पल होते हैं! युवान से प्यार से कंधे पर हाथ रखकर कहो, संग्रह करो पर अंत मे संतुष्ट हो जा। मूल को पकड़कर कुछ नया देना पड़ेगा।

यदृच्छा लाभसंतुष्टो द्वन्द्वातीतो विमत्सर:।
सम: सिद्धावसिद्धौ च कृत्वापि न निबध्यते।।

ऐसी फोर्म्यूला विश्व में हमारे गोविंद ने दी है। सक्रिय होते हुए तुम कैसे अक्रिय हो जाय। पूरा लाभ के बाद तू संतुष्ट हो जाये। कर्म करते हुए भी तू मुक्त है। सूर्यनमस्कार, स्नान, प्राणायाम न करो; माला न करो, कोई जरूरत नहीं। कर्म करते हुए भी कर्ममुक्त रहो। गांधीजी ने शायद इस अर्थ में कहा, 'अनासक्ति योग', 'गीता' का अर्थ निकाला। राग-द्वेष आपको जिसके प्रति है वो अच्छा काम कर रहा हो, आप उसके भी विरोधी बन जाते हो! कुछ न करने पर भी आप बंधे जा रहे हो! शुभकार्य में सत्तापक्ष और विपक्ष न हो। कहीं भी शुभ हो रहा हो तो उसका स्वागत करो। प्रोब्लेम क्रिएट ना करो। लोग समझ नहीं पाते हैं इसलिए उलटी-सूलटी बातें करते हैं! यहां सीता भी बदनाम हुई। राम पर भी उंगली उठी। वालि को छिपकर मारा! समय तो रागद्वेष वालों को है! आध्यात्मिक साधना करनेवालो के पास इतना समय कहां? बस हरि भजो। लाओत्सु के अनेक सूत्र हैं पर एक सूत्र है जो मेरे निकट पड़ता है। कोमलता हो और कमजोरी हो वही जीवन है। जहां सख्ताई है, जो अपनेआप को मजबूत मानते हो वो मरे हुए हैं! कमजोरी को जीवन कहा है।

आपने कभी 'महाभारत' की द्रौपदी का दर्शन किया? जीवनभर ये महिला सख्त रही और पल-पल खतरों को निमंत्रित करती रही। उसमें स्वभावग्रस्त उग्रता थी पर आखिर में पाया क्या? उसका चीर खींचा गया तो भी वो सख्ति से मुकाबला करती रही और कृष्ण प्रतीक्षा करता रहा, तू कोमल बन। एक क्षण आई और आंखें बन्द करके घूमी रही ओर उसको लगा कि उसकी चारों और चक्र घूम रहा है और चक्र है तो चक्रधारी भी है। मैं आपको निवेदन करना चाहता हूं, मेरे फ्लावर्स, सुन लो। किन-किन को जवाब दोगे? मैं जो सत्य, प्रेम, करुणा की बात करता हूं तो पहेले विनोबा ने भी कहा, लेकिन निझाम ने तीन शब्द का प्रयोग किया-हक, महोब्बत और कमजोरी। ये तीन जिसके पास हो उसको निर्वस्त्र कर सकते हैं पर कोई नग्न नहीं कर सकता। नग्नता हमारी निजता है, मौलिकता है। साधकों, यदि हम में सत्य है, प्रेम है, करुणा है, तो कोई साहस करेगा निर्वस्त्र करने का पर कोई माई के लाल की ताकत नहीं है कि वो हमें नग्न कर सके। इसलिए शब्द आता है 'नग्न सत्य।' प्रेम में परदा नहीं आता है। और करुणा कोई आंचल में छूपी

नहीं रहती। बापू के सूत्रों की आलोचना होगी पर नवदर्शन होना चाहिए। हमारे पूरे प्रयत्नों के बाद प्राप्त हुआ लाभ, इसमें हम संतुष्ट रहे। कर्मयुक्त होते हुए भी कर्ममुक्ति का पहला लक्षण, 'यदृच्छा लाभसंतुष्टो।' दीक्षित दनकौरी साहब का शे'र है-

खुलूसो-मुहब्बत की खुशबू से तर है।
चले आइए ये अदीबों का घर है।
अलग ही मज़ा है फ़कीरी का अपना,
न पाने की चिंता, न खोने का डर है।

हिन्दुस्तान का आखिरी वाइर्सरोय माउन्ट बेटन; रानी की बेटी की शादी जो ब्रिटन में थी। गांधीजी जेल में थे। जेल से एक पत्र लिखा और जेल में एक अपने हाथों से कांतकर सफ़ेद टेबलक्लोथ दिया। साथ में एक चिठ्ठी लिखी और कहा, मैं तो जेल में हूं। मैं तो एक फ़कीर हूं। हो सके तो मेरी और मेरे भारत की ओर से ये टेबलक्लोथ रानी को दे देना। वाईसरोय ने ले लिया और गांधी का ये उपहार रानी को दिया। साथ में चिठ्ठी थी और गांधी ने लिखा था, 'मेरे देश से विदेशी सत्ता को जाना ही पड़ेगा। हम उसको यहां से उठायेंगे। हमें उसको बिदा करना है, लेकिन मैत्री और सद्भावना के साथ।- मो.क.गांधी। रानी ने पढ़ा और वो थोड़ी देर चुप हो गई। क्योंकि इसमें द्वेष नहीं था। गांधी का चित्त विमत्सर था, द्वेषमुक्त था। सामाजिक जीवन में, व्यक्तिगत जीवन में, पारिवारिक जीवन में, राष्ट्रीय जीवन में, ईवन धार्मिक जीवन में द्वेष बहुत नुकसान करता है। कई लोग देश छोड़ने के लिए तैयार है पर द्वेष छोड़ने को तैयार नहीं! गुरु का आदेश, बुद्धपुरुष का उपदेश, वेद का संदेश छोड़ देते हैं पर द्वेष नहीं छोडते! राजी होना सीख लो।

एक प्रश्न है, 'महत्त्व दर्शन का है या महत्त्व चरणस्पर्श का है?' सब का अपना-अपना महत्त्व है पर मुझे पूछते हो तो कहूं, महत्त्व है द्वेष को त्यागने का। द्वेष छोड़ दो, जहां बैठोगे वहां दर्शन होगा। चरण तुम्हारी गोद में होगा। दंडवत् करो लेकिन द्वेष न छोड़ा तो? क्रोध न छोड़ा, काम न छोडा तो? सत्वचन क्यों छोड़ दिया? मैंने हरिभजन क्यों छोड़ दिया? कोई साधन करने की जरूरत ही नहीं है। पूरे आलम में सक्रिय होते हुए बीच में रहकर भी कोमन बन जाओ, अक्रिय बन जाओ। तो चक्र और चक्रधारी दोनों तुम्हारी अगल-बगल में रहेंगे। दुनिया आप को निवस्त्र कर सकती है पर नग्न नहीं करत सकती। क्योंकि हक है, मोहब्बत है, करुणा की कोमलता है। नग्न को नग्न कौन कर सकता है? और जो दुनिया में सबसे हार गया, उसको कोई हरानेवाला पैदा ही नहीं हुआ। याद रखना मेरे फ्लावर्स, एक युवान ने कहा, मैं तो अभी कली हूं। हां, फ्लावर्स से भी कलियों की ज्यादा महिमा है।

गांधी उन चार सूत्रों से निकले। ये आदमी ने काम बहुत किए। जहां गये वहां असंतोष जैसी बात नहीं। इसके साथवाले हार गये! मैं किसी का नाम नहीं लेता। आईनस्टाइन ने कहा है ये जो मिलटरी मानसिक्ता में मेरी भी संमति नहीं है। मैं भी शांति चाहता हूं और विश्व में शांति देने के लिए ठीक से कदम उठाये तो वो एक मात्र गांधी है। विनोबाजी ने कहा, 'विश्व को एटमबोम्ब की जरूरत नहीं, आतमबोम्ब की जरूरत है।' गांधी रहे विमत्सर, संतुष्ट, द्वन्द्वों से मुक्त, समता ली है। गांधीदर्शन को नवदर्शन के रूप में, कैलास की छाया में समझना पड़ेगा। क्योंकि कैलास असल में राजघाट है, विवेक का शासन है।

सचिव बिरागु बिवेकु नरेसू।
बिपिन सुहावन पावन देसू।।

ज्ञान की पीठ को संतों ने राजघाट भी कहा है। व्याधि जहां होती है वहां आहें होती है। जहां उपाधि होती है वहां संताप की आग होती है। लेकिन जहां समाधि होती है वहां न धूंआ, न आग होती। वहां ज्योति होती है। वो ज्योति चाहे घी की, तेल की या गेस की ज्योति हो। यद्यपि ये तो स्थूल समाधि है। गांधी की तो अपनी आंतरिक ज्योति भी है। इस ज्योति के प्रकाश में हम आपस में वार्तालाप संवाद कर रहे हैं।

पनिघट परम मनोहर नाना।
तहां न पुरुष करहि अस्नाना।।

'मानस' में पनघट का अर्थ गौघाट, ज्ञानघाट, शरणागति का घाट। वहां पुरुष यानी घमंड स्नान नहीं करता। इसका तात्त्विक अर्थ ज्ञान का घमंड, वैराग्य का दंभ भी है लेकिन गौघाट है, शरणागति है, नारीपणा है, शरणागति है, वहां अहंकार स्नान नहीं करता। वहां पुरुष को प्रवेश नहीं है। तुलसी ने सामाजिक मर्यादा भी स्थापित की और तात्त्विक संदेश भी दिया। जहां शरणागति होती वहां अहंकाररूपी पुरुष नहीं आ सकता। वहां दंभ भी प्रवश नहीं कर सकता।

'राजघाट' शब्द एक है पर उसमें दो शब्द का जोड़ है, राज और घाट। और उसका क्या अर्थ है वो एक साधु ने मुझे लिखकर दिया है। राज और घाट के विषय में 'भगवद् गोमंडल', 'मानस' पीयूष आदि-आदि से संकलन किया है। 'राज' शब्द के कई अर्थ है। संस्कृत शब्दकोश में भी है। राज मानी परमात्मा का पर्याय। राजघाट, कैलास है, तो वहां बैठा हुआ राज परमात्मा भगवान शंकर शिव परमात्मा है। राज एक मंत्री भी माना गया है। इसका राज़ हम नहीं खोल पाते। राज़ मानी रहस्य। राज का एक अर्थ है अंधेरा। राजनीति लो तो कुछ नीति, उसमें भी अंधेरा ही होता है, उजाला होता ही नहीं। राज का एक अर्थ कपूर, जो आरती करते हैं। चंद्र को भी कहते है, चोर को भी राज कहते है। राज का एक अर्थ है स्वामी, शेठ। राज का अर्थ शोभा; राजमान राजेश्वरी, संबोधन होता था। राज मानी खीजडा, प्रजा का रंजन करनेवाला। राज के बहुत अर्थ है। घाट का अर्थ चेहरा, चहेरा का घाट, सिकल; फेस; देहात में देहाती लोग सौराष्ट्र में एक ऐसी चुनरी, एक ओढ़णी का नाम घाट है। पर्वत तोड़कर जो रास्ता बनाया जाता है उसे घाट कहते हैं। लकड़ी का या मिट्टी का बर्तन बनाये उसके लिए घाट शब्द है; घाट लाना, अवसर लाना, मौका लाना, मनसूबा पूरा होना। घाट रोकना, रास्ता रोकना। घाट-घाट पर जो टेक्ष कर लेते हैं उसको घाट कहते हैं। पहाड़ी रास्ते की जो देखभाल करते हैं ऐसे रक्षकों को भी घाट कहते हैं। तीर्थों में यात्रालु को जबरदस्ती पकड़कर चांदला करके थाली में पैसा लेना घाट है। कथा में आरती लेकर घूमना, रुपया, तिलक, टीका करना घाट है। ऐसे ये सब अर्थ है।

राजा के आठ रूप है, ग्रंथकारों ने बताया है। चंद्र, सूर्य, अग्नि, पवन, ईन्द्र, कुबेर, वरुण और यम। विद्वानों का मत है, चंद्र के अंश से जो नीति निकली वो राजनीति में सामनीति कहते हैं। कुबेरांश जो है उसे दाम नीति। इन्द्रांश, भेदनीति। दंड़नीति, यमराज के अंश से। ये पौराणिक अर्थ है, बाकी यम वैदिक परंपरा में सौम्य है। यम सज्जन आदमी है, अतिथि सत्कार करने पर तुला रहता है। वो आक्रमक नहीं है। नीति में दमांशदंड आता है, बस। यमराज से डरना मत। कथाओं ने भयभीत किया है। मूल बात यम बड़े दयालु है।

राजघाट पर ये कथा चल रही है उसके बारे में कुछ वार्तालाप कर रहे थे। आइए, कथा का दौर लेते हैं। सती शिव से रसमय कथा सुन रही है ताकि शिव-वियोग का दुःख कम हो। भगवान की कथा दुःख मिटाती है, दुःख भगाती है। लेकिन संतों की कथा संशय को मिटा देती है। इसीलिए हमारे यहां विष्णु की कथा से भी वैश्णव की कथा महिमावंत मानी गई है। सती दुःख को भूले इसीलिए शिवजी कथा कह रहे हैं। इसीमें दक्ष के

> कैलास का घाट ज्ञानघाट कहा जाता है। संतों ने इसे राजघाट कहा है। राजघाट को गांधीबापू ने तो उंचाई दी पर अब जिसकी जिम्मेवारी है उनको उसे उंचा उठाना पड़ेगा। गांधीजी की सभी बातों को कैलास के स्मरण के साथ समझना पड़ेगा। जैसे प्रतिवर्ष मंदिर का पाटोत्सव होता है, वैसे राजघाट का प्रतिवर्ष पाटोत्सव होना चाहिए। राजघाट के पाटोत्सव का एक अंग है राजघाट पर ये रामकथा। यहां उसकी नींव डाली जा रही है क्योंकि उस पर कैलास का वरदान है। पाटोत्सव एक नवदर्शन है। आज का युवान नवदर्शन करें।

यज्ञवाली बात आई है। भगवान शिवजी ने कहा कि देवी, आप न जाओ तो अच्छा। वहां जाना ठीक नहीं है निमंत्रण बिना। लेकिन सती मानती नहीं है। पिता के घर यज्ञ में जाने के लिए जिद्द करती है। सती यज्ञ के मंडप में जाती है। सब देवता है, लेकिन ब्रह्मा नहीं है, विष्णु नहीं है और महादेव नहीं है। भगवान शिव का इतना बड़ा अपमान पिता के यज्ञ में देखकर सती आक्रोश में आ जाती है और अपने देह को यज्ञकुंड में विसर्जित करती है। हाहाकार हो गया!

सती का दूसरा जन्म हिमालय के घर पुत्री के रूप में होता है। केवल बुद्धि यज्ञ में जल गई और हिमालय की अचलता से स्थिरता से श्रद्धा के रूप में पार्वती के रूप में प्रकट हुई। बेटी बड़ी होने लगी। और 'मानस' में तो लिखा है कि जब कन्या प्रकट हुई तब हिमालय की समृद्धि बढ़ने लगी। बेटा और बेटी के बारे में कोई फ़र्क नहीं होना चाहिए। आज शायद सुप्रीम ने जजमेन्ट दिया है, जो अखबार में पढ़ा, जिस घर में बेटी बड़ी हो तो उस परिवार की मुखियां वही कहलायेगी। स्वागत है, ये योग्य निर्णय है। कन्या महान है। बेटी, स्त्रीओं को ये सन्मान मिलना ही चाहिए। कई मंदिर में देवदर्शन के बारे में आज-कल जो चर्चा चलती है! देवमंदिर में भी नारी का प्रवेश हरजगह होना चाहिए, ऐसा मेरे स्पष्ट मानना है। अपने परिवार में बेटी का जन्म हो तो उत्सव मनाना। सात-सात विभूति आपके घर आ गई कन्या के रूप में। और सबसे बड़ा फ़ायदा होने लगा कि श्रद्धा के रूप में हिमालय के घर बेटी जन्मी तो बिना बुलाये संत-योगेश्वर, महात्मा, विरागी, सिद्ध लोग हिमालय के घर जाने लगे। उसी शृंखला में नारदजी पधारे। नारदजी ने नामकरण किया। हस्तरेखा देखके नारदजी ने पार्वती के दोष-गुण की चर्चा की। और कहा कि हिमालय, तुम्हारी बेटी तप करे। और मैंने जो दोष गिनाये वो शिव के पास है और शिव मिल जाए तो फिर कहना ही क्या? पार्वती तप का मारग लेती है। और यहां शिवजी समाधि में बैठ गये हैं। शिव के नेम और प्रेम को देखकर भगवान प्रकट होते हैं और भगवान ने कहा कि एक वरदान दो। अब पार्वती का आप स्वीकार करो। शिव हां बोल देते हैं।

भगवान शंकर ने हाथ में त्रिशूल और डमरू धारण किया है। नंदी पर सवारी। मर्यादा के लिए एक मृगचर्म कटि भाग पर लपेट लिया है। शिवगण भूतप्रेत आये हैं। बारात चली। हिमाचल प्रदेश नगाधिराज के द्वार नगर के बाहर आई। भगवान शिव का स्वागत हुआ। महारानी मैना आरती करने आई, लेकिन शिव का विकट रूप देखकर आरती गिर गई! और नगाधिराज हिमालय, सप्तऋषि, नारद सब आये। नारदजी ने कहा कि मैना, तू जिसको पुत्री मानती है वो तेरी पुत्री नहीं है, तेरी माँ है। और ये तेरी अकेली की माँ नहीं है; ये जगदंबा है, पराम्बा पार्वती है। और जिसकी आरती पूरी नहीं हुई वो शिव साक्षात् भगवान शिव है, परमात्मा है, ब्रह्म है। जब नारद ने ये बात खोली तब सबको ये पता लगा और उसको मैं ऐसे ही रूप में मोड देता हूं कि हमारे घर में ही शक्ति होती है, हमारे द्वार पर ही परमात्मा खड़ा होता है, लेकिन नारद जैसा सद्गुरु हमको बात खोले नहीं तब तक हम उसको समझ नहीं पाते हैं। नारद की बात सुनकर सब पार्वती को प्रणाम करने लगे। शिव के प्रति एक विशेष सम्मान और आदर प्रकट हुआ है। उसके बाद वेद और लोकरीति से भगवान शिव और पार्वती का ब्याह संपन्न हुआ। और शिव पार्वती को लेकर कैलास पधारते हैं।

समय बीता। पार्वती ने पुत्र कार्तिकेय को जन्म दिया। पुरुषार्थ षड्मुखी होता है। ऐसे प्रबल पुरुषार्थ का जन्म होता है। और कार्तिकेय ने ताडकासुर को निर्वाण किया। फिर एक बार शिव कैलास के वेदविदित वटवृक्ष के नीचे सहजासन में बैठे हैं और पार्वती भला अवसर देखकर शिव के पास जाती है। वामभाग में शिव ने आसन दिया। पार्वती कहती हैं, महाराज, कुछ प्रश्न है। प्रभु, आप उसका उत्तर देने में मुझे रामकथा सुनाओ। शंकर को रामकथा पूछा और भगवान बहुत प्रसन्न हुए, धन्यवाद दिया। और भगवान शंकर पार्वती के सामने रामकथा का आरंभ करते हैं।

गांधी अगस्त्य तारक है

बाप! ठाकुर रामकृष्ण परमहंस ने कभी ऐसा कहा है, विवेकानंद है जो आकाश में सात ऋषि में से एक ऋषि धरती पर आया। कोई भाव-बहाव में नहीं बोल रहा हूं। सहर्ष स्वीकार है कि विवेकानंद आसमां से उतरा हुआ एक ऋषि है। उन्नीसवीं-बीसवीं शताब्दी की काल सीमा में सातों ऋषि धरती पर उतरे हैं। कौन ऋषि कौन रूप में आया ये चर्चा बाद में करेंगे। मेरी अंत:करण की प्रवृत्ति ये मानने को राजी है कि गांधीजी भी सप्तऋषिओं से उतरा हुआ एक ऋषि है। मेरा आप पर कोई दबाव नहीं है। ये इक्कसवीं शताब्दी भी सोलह साल की युवान हो चुकी है। सोलह साल की उम्र की बहुत महिमा होती है। सोलह कला भी होती है। दो सौ साल में विवेकानंदजी है और गांधीजी भी है। गांधीजी अगस्त्य ऋषि का तारा है।

गांधी अगस्त्य सत सागर को पी गयो।

भक्त कवि दुला भाया काग ने ये कविता लीखी होगी, ये वो जाने। इक्कीसवीं सदी में पूरी दुनिया ने आकाश में एक गांधी तारक निश्चित किया है। ये अच्छा हुआ पर फिर से आकाश में मत ले जाओ। बस, हमारें बीच में रखो। मर्हूम मजबूरसाहब का शे'र है-

आसमां पर तेरी हस्ती, जमीं पर मेरी हस्ती।
या तो तू थोड़ा झुक या थोड़ा मुझे उपर उठा।

तो बीच में कहां मुलाकात हो सकती है? नहीं तो कहां मैं, कहां तू! मुलाकातें कम से कम असंभव है।

ये अच्छा है, हम गांधी का स्टेच्यू बनायें, मूर्ति बनायें फिर उसको आसमां में भेज देते हैं! गांधी हमारा व्यवहार बने, आचार बने, देश-काल के अनुरूप सविनय असहमती में भले हो पर गांधी राजी होगे। वो हमारे जैसे नहीं है कि बात-बात में नाराज हो जाए! नाराज हो वो गांधी नहीं। कभी-कभी मैं भी गांधी की बातों में सहमत नहीं

हो सकता। वो मेरी निजता है। बारडोली सत्याग्रह में सरदारजी ने मजाक की थी। बड़े-बड़े नेता इकठ्ठे हुए। वेडछी के जुगतरामकाका बापू को मिलने के लिए आये। एक आदमी गांधीजी का एक फ़ोटो अखबार से लेकर अपनी जेब में रखता था। बहुत वंचित आदिवासी, बीस-बाईस कि.मि. चल के गांधीजी के पास आया पर गांधी के पास पहुंचे कैसे? जुगतरामकाका को मिलने को बोला पर वो तो निकल चुके थे। आखिर में वो मिले। तब बापू को बोला, एक आदिवासी आपको बहुत मानता है, आपका दर्शन चाहता है। आप एक मिनट मिलेंगे? बापू ने कहा, पहले उसको भोजन करवायेगा। वहां सरदार बैठे थे। आगे के कमरे में वो बेचारा गया और पूछा, गांधी कौन है? सरदारजी ने बोला, 'मैं गांधी हूं!' वो बेचारा व्यंगात्मक बोली में मुस्कुराता गया, 'आप गांधी नहीं हो सकते, 'मैं-मैं' करे वो कभी गांधी नहीं हो सकते !' गांधी का 'मैं' शून्य हो चुका था। व्यवहार में गांधी के कम से कम पांच विचार रखे तो भी जीवन को बहुत विश्राम मिलेगा।

कुंभजतत्त्व क्या है? दो विचारधारा थी। एक निर्वाण और दूसरा निर्माण। भगवान राम ने वनयात्रा दरम्यान तीन मुनियों से राय ली। वन में तीरथराज प्रयाग में भरद्वाज से पूछा, हम यहां से वनयात्रा में आगे किस मार्ग से जाये? मेरे युवान भाई-बहन, उसको पूछना जो स्वार्थ के मार्ग का निष्णात न हो, परमार्थ मार्ग का निष्णात हो।

भरद्वाज मुनि बसहिं प्रयागा ।
तिन्हहि राम पद अति अनुरागा ।।
तापस सम दम दया निधाना ।
परमारथ पथ परम सुजाना ।।

ये भरद्वाजजी के जितने लक्षण बताये उतने लक्षण किसी भी व्यक्ति में मिले उसको ही जीवन का मारग पूछना, नहीं तो भटक जाओगे! किसी अनुरागी को पूछना। जिसकी आंखों में करुणा हो, हृदय में सबके लिए प्रेम हो, जिसके वचन में अपने जीवन विकास के लिए सत्य हो ऐसे को पूछना। जो तपस्वी हो उसे पूछना। आज के तप के तीन सूत्र, निंदा और अस्तुति को मुस्कुराते हुए स्वीकार करे वो तप है। तपस्वी को जंगल में जाने की जरूरत नहीं है। एक सास अपनी बहु की निंदा-स्तुति को शांति से सहन करे वो तप ही है। किसीने कितना भी हमारा बिगाड़ा हो लेकिन हर वक्त उसको क्षमा करते जाना ये तप है। ऐसा अभ्यास करते-करते अंदर से कोई हरिनाम जपता रहे वो तप है। ऐसे व्यक्ति को जीवन का मार्ग पूछना। सम दम; सम यानी शांति। जिसको देखकर लगे वो अशांत नहीं। जो खुद अशांत है उसको खुद को ही सुख नहीं मिलता। शांति जिसका स्वभाव हो, जो अंत:करण की प्रवृत्ति कबूल करे ये शांत है। एक तो इश्वर है। अधिक शांत बुद्धपुरुष है।

शान्तं शाश्वतमप्रमेयमनघं निर्वाणशान्ति प्रदं
ब्रह्माशम्भुफणीन्द्रसेव्यमनिशं वेदान्तवेद्यं विभुम्।
रामाख्यं जगदीश्वरं सुरगुरुं मायामनुष्यं हरिं
वन्देऽहं करुणाकरं रघुवरं भूपालचूडामणिम्।।

जो शांत है; जो शांतिप्रद है। यम; जिन्होंने अपनी इन्द्रियों के साथ वार्तालाप करके समझौता करके बहुत प्यार से इन्द्रियों को समरस बनाई वो यम है। आंख फ़ोड़ना नहीं है, सम्यक्ता प्रदान करनी है। राम ने हमें बताया, भरद्वाज एक ऐसे मुनि है जो परमारथ मारग के जानकार है। राम ये नहीं पूछते, मुझे कहां जाना है? पर पूछा, मैं किस मारग से जाऊं? फिर राम वाल्मीकि मुनि के आश्रम में गये-

बालमीकि मन आनंदु भारी ।
मंगल मूरति नयन निहारी ।।

वहां रात्रि विश्राम करके पूछते हैं, मैं कौन जगह पर निवास करूं? कोई पशु-पक्षी, मुनि को कष्ट न हो। वाल्मीकि स्थान पूछने योग्य है। आध्यात्मिक दृष्टि से चौदह स्थान बतायें। लेकिन कहा, पहले ये कहो, आप कहां नहीं हो? आप सब जगह हो। पर आप पूछते हो तो मैं बताऊं -

जिन्ह के श्रवन समुद्र समाना ।
कथा तुम्हारि सुभग सरि नाना ।।

जिसके कान निरंतर हरिकथा सुनते हो वहां भगवान रहते हैं। फिर कुंभज के आश्रम में आये तब रामजी ने पूछा, आप मुझे ऐसा मंत्र बताओ कि मेरी अवतार प्रवृत्ति में निर्वाण और निर्माण कर सकूं। राम को कुंभज ऋषि ने कहा, आप यहां से गोदावरी तट पर पंचवटी जाओ, वहां से ये अभियान आगे बढ़ेगा और सफल भी रहेगा। निर्वाण करना है आसुरी वृत्ति का संसार से और निर्माण करने का है रामराज्य का।

गांधी के दो विचार ऐसे ही चलते हैं। गांधी को अस्पृश्यता निवारण, बेरोजगारी का निवारण करना था। अंधश्रद्धा और वहम की दुनिया से लोगों को बाहर निकालना था। ग्राम्य उद्धार योजना निर्माण करनी थी। रामराज्य निर्माण करना था। राष्ट्र में सादगी का साम्राज्य निर्माण करना था। अपने निजी जीवन में सादगी लाकर व्यसन मुक्त जीवन बनाकर निजी जीवन में अस्पृश्य किसीको ना समझकर जिसके पास काम न हो उसको काम देकर हम इस महापुरुष का थोड़ा श्राद्ध करे। कुछ बातों से मुक्त करना, कुछ बातों का नवनिर्माण करना, जो गांधी का जीवनकार्य था। ये मैं सूत्र में बोलता हूं। ये विचारधारा उतरी, उसमें गांधीदर्शन समाविष्ट है क्योंकि गांधी अगस्त्य तारक है।

कुंभज ऋषि कहते हैं, तीन अंजलि में समुद्र को पी गया। और गांधीबापू ऐसे अगस्त्य रूप में आकर ब्रिटिशरों की सत्तारूपी समुद्र थे, वो गांधी तीन अंजलि में भी गये। तानाशाहीरूपी विन्ध्याचल बढ़ता जाता था। भोगवादी का साम्राज्य, दुनिया को कायम परतंत्रता की बेड़ी में जकड़ने की विचारधारा का विन्ध्य बढ़ता जाता था। ऐसे वक्त में गांधी कुंभज तारक गांधी बनकर आता है और फैली हुई, दबाती हुई सभ्यता को रोकने में कुंभजकर्म कर गया। अंग्रेजों को बिदा करेंगे पर दोस्ती के साथ। समाज के लिए कुछ तथाकथित सिद्धांत जो दंभ का अंचला ओढ़कर बढ़ता था ऐसे विन्ध्य को रोका। गांधी ने राष्ट्र का घाट घड़ा। एक नया मोड देने का, घाट देने का नाम है राजघाट।

महापुरुष अपने समय में बहुत नहीं पहचाने पाते हैं। कभी पचास साल या शताब्दी भी लग जाती है। गांधी एक ऐसा व्यक्ति है। हम छोटे थे तब गुजराती में पढ़ाया जाता था। 'परदेशी भूख्या टोपावाळानां टोळां उतर्या।' इन्डिया से एक आदमी लंडन गया तो एरपोर्ट के बाहर एक गोरा बूटपोलिस कर रहा था। उसने पूछा तो कहा, दस पाउन्ड। उसके पास सिर्फ़ दस पाउन्ड ही थे फिर भी स्टेन्ड के उपर पांव रखा और बूटपोलिस करवाया। इतने में दूसरा आदमी भारतीय वो उसको जानता था कि उसके पास ज्यादा पैसा नहीं था। उसने पूछा तो बोला, इतने साल तक इन लोगों ने हमको दबाया है और ब्रश लगवाया! बड़ें-बड़ें का सिर झूक गया है पर गांधी ने उसका कोई गर्व नहीं किया। पृथ्वी पर एक उपकारक अवतरण हुआ गांधी के नाम से। तो ऐसे गांधीबापू के राजघाट पर राष्ट्रपिता को 'रामचरित मानस' के आधार पर हम कुछ विशेष रूप से समझने की कोशिश कर रहे हैं।

घाट के अनेक अर्थ होते हैं। एक अर्थ होता है घाट बनाना, विशिष्ट रूप देना। जैसे मूल्यवान हीरा या गहना बनाया जाता है उसी तरह गांधीबापू का ये राजघाट हमको एक नया रूप देता है। तो मैं आपको ये बताना चाहता हूं, गांधीबापू को कितने लोगों ने घाट दिया? मो. क. गांधी से गांधीबापू बनाने में कितने लोगों ने काम किया? एक महात्मा बनाने में कई लोगों का साथ होता है व्यक्ति के निर्माण में। जन्मभूमि पोरबंदर में पैदा हुए। जन्मदात्री पूतलीबाई। जीवन का मंत्र देनेवाले कोई आचार्य होते हैं। पोरबंदर की भूमि ने घाट दिया। मैं पोरबंदर जाऊं तो समय निकाल कर माथा टेकने जाता हूं और सुदामा के मंदिर पे जाता हूं। चाय पीने भाईश्री के आश्रम सांदीपनि आश्रम जाता हूं। महान पुरुषों जहां प्रगट हुए उस भूमि में चेतना-उर्जायें होती है। जन्मभूमि सौराष्ट्र, हिन्दुस्तान; पूरी पृथ्वी के तारक है। दूसरी जन्मदात्री, जनम देनेवाली माँ बहुत महान होती है। मेहुल ने लिखा था, 'जो विश्राम हिमालय नहीं दे पाता वो माँकी गोद देती है।' परवाज साहब के शे'र है-

हारी है मोत माँ की दुआं के सामने।
मैं डूबने चला हूं तो दरिया उतर गया।

दुनिया में सबसे बढ़ के दवा माँ का हाथ है।
जब छू लिया मुझको तो हर घाव भर गया।

●

'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरियसी।'

आदमी का घाट घड़ने में जन्मभूमि और जन्मदात्री का हाथ है। चार घाट, पांच व्यक्ति का बहुत योगदान है। रंभा को भी ना भूले जिसने 'राम' मंत्र दिया गांधी को। वो काम करती थी फिर भी आचार्य वो बनी। चार घाट, चार कौना, चार व्यक्ति का योगदान इस समाधि का पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण। और बीच में ज्योति जलती है। एक घाट है, गोपालकृष्ण गोखले। तीन विदेशी है, एक भारतीय है। गांधी को महात्मा बनाने में ये चार महापुरुषों का योगदान है। गांधी ने खुद कबूल किया है, मेरे लिए गोखले गंगा की धारा है। उसमें स्नान कर सकता हूं। आज मैंने गांधी को आकाश से उतारा है। व्यवहार में 'शठम् प्रति शाठ्यम्', शत्रु के प्रति शठता, जैसे के साथ वैसा, व्यवहार करना चाहिए। मगर गोखले ने कहा, 'शठम् प्रत्यापि सत्यम्।' शठ के प्रति भी सत्य और सद्भाव से वर्तन करना। और गांधी ने ये पकड़ लिया, शठ के प्रति सत्यम्। युवानो, बहुत ही मुश्किल है। शठता के सामने सत्यता कठिन है। 'मानस' की चौपाई-

सठ सन बिनय, कुटिल सन प्रीति ।
सहज कुपन सत सुंदर नीति ।।

तो बाप, रामजी कहते हैं, शठ के साथ विनय सफल नहीं होता। गांधी ने कबूल कर लिया, 'शठम् प्रत्यापि सत्यम्।' पर उसका भाषांतर छोड़ो। कुछ जीवनकोश के अर्थ समझो, शब्दकोश छोड़ दो। भगवान नकारात्मक नहीं होते। बोले, जो शठ है उसके साथ विनय की कसौटी है। उसको दुर्जन को बदलना है। व्रजांगना कहती है, 'कुटिल कुन्तलम्', यदि साधुता है तो कुटिल के साथ भी सरल नीति और ममतारत, ममता में डूबा है इसके सामने ज्ञान रखा जाय। अर्जुन ममता में डूबा है इसलिए कृष्ण ने इसके सामने ज्ञान का बोध कहा, 'अति लोभी सम वैराग', जो अत्यंत लोभी है उसके सामने वैराग समझाना चाहिए। अति एक उर्जा है तो उसको दूसरे अति तक ले जाना सरल होता है। अत्यंत क्रोधी हो उसके सामने शांति की बातें जरूर करो, उसे तो जरूरत है। 'अति कामी सम हरिकथा', कामी को ही कथा सुनाना चाहिए। ये जो कथा गा रहा हूं वो स्वयं भी पूर्ण जीवन में अति कामी रहे। 'रामायण' शास्त्र पूरा हुआ तब भी कहा गया-

कामिहि नारि पिआरि जिमि लोभिहि प्रिय जिमि दाम ।
तिमि रघुनाथ निरंतर प्रिय लागहु मोहि राम ।।

जो कामी है उसको रामी बनाओ। डोक्टर की वहां ही जरूरत है जहां बीमारियां होती है। सद्गुरु बैद; जिसस समाज स्वीकारे नहीं ऐसी महिलाओं के पास जाते थे। जैसे खाराशवाली जमीन में जितने भी बीज बोये फिर भी कभी अंकुरित नहीं होते। जो संगदिल में प्रेम निकले, करुणा निकले वहां जादू है। एक गांव मे शहनाई बजानेवाला गया। शेठ दुकान में बैठा था। उसको लगा, एक घंटा सूरीली शहनाई बजाई। शेठ को कुछ देना नहीं था। शेठानी अंदर घर में थी। शेठ अंदर गया और सांबेला लेकर आया और कहा -

पोलुं छे ते वाग्युं तेमां करी तें शी कारीगरी ?
सांबेलुं वगाडे तो हुं जाणुं के तुं शाणो छे।

जो अंदर से भरा हो, अंदर का कचरा खाली कर दे यही तो करिश्मा है। उसको हकारात्मक सोचो। गोखले कहते हैं, 'शठम् प्रत्यापि सत्यम्', गोखले ने बहुत अद्भुत काम किया! गांधी के घाट में दूसरा आदमी है टोलस्टोय, गांधी के घडवैया थे उसके बारे में आत्मकथा में भी लिखा है। तीसरा घडवैया है रस्किन। अद्भुत काम किया है गांधी के जीवन को मोड देने में। रस्किन युरोपीयन है। चौथा है महात्मा थारा। अमरिकन था जो गुलामी के विरुद्ध लड़ा, एन्ड्री थारा। सरकार प्रजा से टेक्स लेकर शराब बेचती थी। प्रजा का शोषण करती थी। सत्तावाले लोग वैभव में मौजमजा करते थे तब थारा ने कहा, मैं टेक्स नहीं दूंगा। दलितों के, किसानों के पैसों से तुम भोग करते हो! उसकी आवाज़ में ताकत थी। थारा को सरकार ने जेलमें डाला। एक मित्र उसको मिलने गया।

कहा, तुम यहां अंदर कैसे ? उसने जवाब दिया, तू बाहर कैसे ? राष्ट्रगौरव के लिए भी अंदर आ जा। बापू को थारा ने सविनय भंग सिखाया। दोनों में भेद भी है। गांधी कानूनभंग करते पर सविनय। आखिरी तक अहिंसा रखे लेकिन थारा राष्ट्र के लिए हिंसा भी करे। थोड़ा विचारभेद था। गांधी कहते, कुछ भी हो जाये, अंतिम तक अहिंसा ही होनी चाहिए। बाकी थारा ने गांधी के घाट घड़ने में बहुत बड़ा योगदान दिया।

गोखले, महात्मा टोलस्टोय, रस्किन और महात्मा थारा ये चार घाट है। अब समाधि में एक ज्योति है लेकिन ज्योति कौन थी ? श्रीमद् राजचंद्र। पूरा प्रकरण उसके नाम अलग किया। मोरबी पास गुजरात में उसका गांव था। उसको गुरुपद के रूप में मानते वो जैनधर्म की विचारधारा वाले बड़े तपस्वी। उसने शरीर को बहुत कष्ट दिया। लेकिन हीरा के व्यापारी थे। जब गांधी की हिन्दुधर्म से आस्था उठ गई और इसाई की ओर उसके कदम चले उसी समय गांधी को रोकनेवाले राजचंद्र निकले। बापू गये थे उसके पास तब सनातन धर्म की बात जैन फिलसूफी बताई। सो उसको मैं ज्योति कहूंगा। प्रकाशित किया गांधी को। शाश्वत चीज हो उसका कभी इन्कार मत करो। ये सूत्र को गांधी ने पकड़ा, सत्य ही शाश्वत है, अहिंसा ही शाश्वत है। उसने सात लाइट लेम्प्स की बात की। गांधी ने सातों प्रकाश पकड़े और अपने घाट को सुशोभित किया। राजचंद्र है अखंड ज्योति। बहुत पत्रव्यवहार हुआ। तीन-चार फेमस है, उसे पढ़िये।

तीन बार महात्मा पर मैं कथा कर चुका। पहली 'मानस-महात्मा' साबरमती पर। 'मानस-महात्मा-२' दांडी गुजरात में। 'मानस-महात्मा-३' राजघाट के बाहर। अंदर नहीं आने दिया मगर दस्तक देता रहा और आज तेरे करीब बैठे हैं! तीन संकल्प था वो तो पूरा हो चुका था। गुरुकृपा से 'मानस' के साथ जोड़कर कथा करते हैं लेकिन रजनीश गजब का आदमी है! पूरा पांच साल मंथन चला। उसने ठान लिया था और सविनय साहस को मेरा नमन! सर्वधर्म प्रार्थना की इज़ाजत मिली इसकी मुझे खुशी है। गांधीबापू की सर्वधर्म प्रार्थना। सब अपने-अपने ढंग से प्रार्थना करते हैं। मेरी ये प्रार्थना है लेकिन काम तो हुआ। बाप! बापू की समाधि पर चलती ये सर्वधर्म समभाव की बातें, सर्वधर्म प्रार्थना की बातें। ये वो घाट है जहां कोई जातिभेद, वर्णभेद नहीं; कोई मजहबभेद, धर्मभेद नहीं। ये कोई धर्मकथा थोड़ी है? सबने आदर के साथ ये विचार को कबूल किया इसकी मुझे विशेष खुशी है। तो ये है 'मानस राजघाट।'

पनिघट परम मनोहर नाना ।
तहां न पुरुष करहि अस्नाना ।।

गांधीबापू इतने बड़े महापुरुषों से कुछ सीख लेते ऐसा नहीं। छोटे-छोटे बच्चों से भी सीखते थे। सत्य जहां से मिले वहां से ले लो। गांधीबापू बहुत नियमपालन में चुस्त थे। साथ चलनेवाले थक जाते! इतना ही खाना, ऐसे ही टाईम टु टाईम भोजन करना। एक परिवार बापू को मिलने आया। साथ में एक बच्चा था। माँ ने कहा, ये गांधीबापू। बच्चे ने कहा, ये बापू नहीं, पागल है! हां, ये पागल है! बापू ने बच्चे से पूछा, क्यों ? तो, बच्चे ने जवाब दिया, हम यहां बैठे हैं और तुम अकेले खा रहे हो! बापू की आंख उस समय भर आई! तब से निर्णय कर दिया, कोई भी मुझे मिलने आये, पहले भोजन कराओ। सत्य जहां से मिले, ले लो। बस कमरें-खिडकी खूलें रखो। दांडीयात्रा में गांधीबापू बहुत तेज चलते थे! साथवालें को दौड़ना पड़ता था बाप! गांधीजी से हम बहुत सीख ले सकते हैं। जीवन के विश्राम के लिए ये महापुरुष का जीवन खुद बहुत बड़ा जीवनसंदेश है। बापू ने खुद ही कहा है, मेरा जीवन ही मेरा संदेश है।

अब रामजन्म की कथा का क्रम मैं आप के सामने रखूं। कल भगवान शिव कैलास के बेदबिदित वटवृक्ष की छाया में सहजासन में बैठे हैं। भल अवसर पाकर पार्वती, भवानी शंकर के पास जाती है। और पार्वती ने रामकथा के बारे में जिज्ञासा की। भगवान शिव प्रसन्न हुए और पार्वती को बहुत धन्यवाद दिया, 'हे हिमाचल पुत्री! आप के समान कोई उपकारक नहीं है।' भगवान की कथा की गंगा प्रवाहित कराने में जो निमित्त बनता है वो सही में बड़े उपकारी है। 'राम ब्रह्म है देवी!

ये निराकार, नराकार हुआ था। ये व्यापक व्यक्ति बन गया था। ये विश्व का पिता दशरथ का बेटा बना था। ब्रह्मतत्त्व तो ऐसा है देवी कि जो बिना पैर चलता है, बिना जीभ बोलता है। बिना हाथ समस्त कार्य करता है। बिना पैर गति करता है। बिना आंख देख सकता है। देवी! राम का अवतार क्यों हुआ इसके लिए यही एक मात्र कारण है ऐसा कहना मुश्किल है। फ़िर भी कुछ कारण है।' पांच कारणों की चर्चा 'मानस' में आई है। पहला कारण राम अवतार का बताया वैकुंठ के द्वारपाल जय-विजय सनतकुमारों के श्राप पर वो धरती पर असुर बनते हैं। रावण-कुंभकर्ण बनते हैं और प्रभु उसका उद्धार करनेके लिए धरती पर आते हैं रामरूप में। दूसरा कारण, सती साध्वी वृंदा का श्राप। तीसरा कारण, नारद ने प्रभु को श्राप दिया इसीलिए भगवान को एक कल्प में आना पड़ा। चौथा कारण मनु और शतरूपा ने बहुत तपस्या की और भगवान ने दर्शन दिये और प्रभु ने वादा किया कि मैं अयोध्या में प्रगट होउंगा। पांचवां और अंतिम कारण राजा प्रतापभानु को मिला ब्राह्मणों का श्राप।

'मानस' में रामजन्म की कथा के पूर्व रावण के जन्म की कथा है। सूर्य उदित होता है इससे पहले रात्रि होती है। तुलसीदास ने पहले निशिचर की कथा लिखी फ़िर सूर्यवंश की कथा लिखते हैं। रावण-कुंभकर्ण-विभीषण बहुत तपस्या करते हैं। बहुत बड़े-बड़े वरदान प्राप्त किए हैं। और वरदान की शक्ति प्राप्त करके रावण पूरे संसार को बहुत त्रास देने लगा। धरती अकूला ऊठी और गाय का रूप लेकर धरती ऋषिमुनिओं के पास रो पड़ी। सब देवताओं के पास गये। देवताओं ने कहा, हमारे बस की बात नहीं है। ब्रह्मा के पास गये। ब्रह्मा ने कहा कि अब किसीके बस की बात नहीं है। हम सब मिलकर वो परम तत्त्व को पुकारे। सब देवता, सब ऋषिमुनि सब मिलकर परमात्मा की स्तुति करते हैं। सभी ने सामूहिक प्रार्थना की। विनोबाजी का एक विचार है 'समूह साधना।' सभी लोगों ने इकठ्ठे होकर परमात्मा को पुकारा। और आकाशवाणी हुई कि धैर्य धारण करो, मैं मेरे अंशों के साथ अवतार धारण करूंगा। ईश्वर को प्राप्त करने के लिए तीन सूत्र है। एक तो पहले हम पुरुषार्थ कर लें। देवताओं ने मुनिओंने बहुत पुरुषार्थ किया कि रावण के त्रास से हम मुक्त हो। लेकिन पुरुषार्थ की एक सीमा होती है। सफलता न मिली। फ़िर प्रार्थना की। हमारी सीमा है तो हमारी प्रार्थना की भी सीमा है। तो प्रार्थना कर ली गई। उसके बाद ब्रह्मा ने कहा, हम सब वानर बनके भगवान की प्रतीक्षा करें। और ये तीनों यदि क्रम में हम निभा पाएंगे तो चौथी जो उपलब्धि है वो है परमात्मा का प्रागट्य। मेरे भाई-बहन, पहले हम पुरुषार्थ करें। उसके बाद हम प्रार्थना करें। उसके बाद हम प्रतीक्षा करें।

अयोध्या नगरी। त्रेता काल। रघुबंश का शासन। वर्तमान राजाधिराज दशरथजी है। वेदों के तीनों कांडों का मानो समन्वित रूप है दशरथजी। ज्ञानकांड, उपासनाकांड, कर्मकांड, तीनों को अपने में समाहित किए हुए हैं। दशरथजी की प्रिय रानियां पवित्र आचरण में जीती है। राजा रानी को प्रेम करता है। रानी राजा को आदर देती है। मैं बार-बोला हूं, फ़िर एक बार बोलूं, हमारे जीवन में राम जैसे, भरत जैसे, शत्रुघ्न जैसे, लक्ष्मण जैसे संतान की प्राप्ति हो ऐसा यदि हम चाहते हैं तो दांपत्यजीवन के ये दो सूत्र समझ लें। पुरुष को चाहे पत्नी को प्यार दे। और पुरुष जरा घमंड़ी होता है, उसको पत्नी आदर दें। पत्नी पति को आदर दे। पति पत्नी को प्यार दे। और दोनों ऐसा मधुर जीवन जीते-जीते परमात्मा के चरणों में एकनिष्ठ हो। ये तीन सूत्र बस। लेकिन छोटे से छोटे सूत्र हम चरितार्थ नहीं कर पाते हैं! रामकथा सुनने के बाद यदि हम ऐसा कर पायें तो जीवन में राम आएगा, जीवन में आराम आएगा, जीवन में प्रसन्नता आएगी।

गोस्वामीजी कहते हैं, दशरथजी का ऐसा मधुर दांपत्य था। लेकिन एक ग्लानि थी राजा को, पुत्रसुख नहीं है। दशरथजी ने विश्व को एक मार्गदर्शन किया कि जब कहीं न जा पाओ तब अपने गुरु के पास जाना। आज राजद्वार गुरुद्वार की यात्रा करते हैं। उसमें तीन बातें होती है। कभी-कभी गुरु जब हम अंधेरे में भटक जाते हैं, तब गुरु हमारा एक दीपक बन जाता है, एक ज्योति बन जाता है। गुरु की आंखों से हम दुनिया को देखते हैं। आज दशरथ गुरु के पास जाते हैं। शृंगीऋषि को बुलाया। शुभ यज्ञ का आरंभ हुआ। भक्ति सहित आहुतियां डाली गई। आख़िरी आहुति के साथ यज्ञकुंड से यज्ञपुरुष स्वयं प्रसाद की खीर लेकर प्रगट हुए हैं। और प्रसाद की खीर का कलश वो वशिष्ठजी को यज्ञपुरुष ने दे दिया। कहा कि ये प्रसाद राजा को दे देना अपनी रानीओं को योग्यता के अनुकूल प्रसाद बांट दे। राजा ने अपनी प्रिय रानीओं को बुलाई और प्रसाद वितरण किया। आधा प्रसाद श्री कौशल्याजी को दिया। एक चौथाई कैकेयी को दी। शेष रहा उसके दो भाग करके कैकेयी और कौशल्या के हाथों से प्रसन्नता से सुमित्रा को दिलवाया। तीनों रानीओं ने प्रसाद पाया। सगर्भा स्थिति का अनुभव होने लगा।

दिन बीतने लगे। और कुछ काल बीता। भगवान को प्रगट होने की घड़ी निकट आई। पंचांग के पांचों अंग अनुकूल हुए। नौमि तिथि है। मधुमास, चैत्र मास है। शुक्ल पक्ष है, अभिजित नक्षत्र सोह रहा है। मध्याह्न का समय। उसी समय प्रभु प्रगटने की तैयारी है। देवतागण हर्षित हो रहे हैं। संतों के मन में अंदर से परमानंद हो रहा है। गर्भस्तुतियां देवताओं की ओर से शुरू हुई। सभी देवगण परमात्मा की स्तुति करके अपने-अपने धाम में गये हैं और 'जगनिवास' पूरे जगत में जिसका निवास है, सभी ब्रह्मांड जिसमें निवास करता है ऐसा परमात्मा, ऐसा ब्रह्म, ऐसा प्रभु, जो कहना चाहो, माँ कौशल्या के भवन में चतुर्भुज लेकर प्रगट हुए हैं। उसके बाद संतों से मैंने सुना कि कौशल्याजी मुंह फ़ेर लेती है। कौशल्या ने कहा हरि आप आये, आप का स्वागत। लेकिन आप वचन चुक गये हैं। आपने वचन दिया था कि मैं आप के घर मनुष्यरूप में पुत्र बनकर आउंगा। न तो आप आज मनुष्य है, न तो पुत्र है। नारायण है, नर नहीं है। और बाप बनकर आये हैं, बेटा बनकर आये ही नहीं हैं। तब ठाकुर कहते हैं, माँ, मनुष्य कैसे हुआ जाय वो तू मुझे सीखा। और भारत गौरव ले सकता है कि मेरे देश की एक माँ परमात्मा को, भगवान को ईन्सान कैसे बनाया जाय उसकी फोर्म्यूला बता रही है। पहले तो आप ये करो, दो हाथवाले हो जाओ, ईन्सान के दो हाथ होते हैं। और दो हाथवाला ईश्वर ज्यादा प्रासंगिक है। तो दो हाथवाला रूप प्रभु ने लिया। नराकार हो गये। 'लेकिन आप जरा छोटे हो जाओ।' भगवान छोटे हो गये। बिलकुल नवजात शिशु की तरह ब्रह्मांड नायक परमात्मा बालक बना। माँ को कहते हैं, 'बस, अब हो गया?' बोले, हां, अब बालक तो दिखते हो लेकिन बोलते हो बड़ों की तरह! बच्चा तो रोयेगा। आप रोओ।' भगवान बालकरूप में कौशल्या के अंक में आकर रोने लगे। भ्रमसहित रानियां दौड़ आई, दास-दासी दौड़े! और महाराज को ख़बर करते हैं। महाराज बधाई हो, आप के घर पुत्रजन्म हुआ है। पुत्रजन्म सुनकर महाराज को ब्रह्मानंद हो गया। और सोचने लगे कि जिसका नाम सुनने ने से शुभ हो वो स्वयं मेरे घर आया? ये ब्रह्म है कि हमारा भ्रम है? इसीलिए जल्दी गुरुदेव को बुलाओ। गुरुदेव के सिवा ओर भ्रमभंजक कौन हो सकता है? गुरुदेव पधारे हैं और कहा कि महाराज, ये साक्षात् ब्रह्म आपके घर आज बालक बनकर आया है। और महाराज को परमानंद प्रगट हो गया। और राजा ने कहा, बधाईयां शुरू कीजिए। दिल्ही के राजघाट पर बापू की जागृत चेतना के पास आप सभी को रामजनम की बधाई हो।

> घाट के अनेक अर्थ होते हैं। एक अर्थ होता है घाट बनाना, विशिष्ट रूप देना। जैसे मूल्यवान हीरा या गहना बनाया जाता है, उसी तरह गांधीबापू का ये राजघाट हमको एक नया रूप देता है। गांधीबापू को कितने लोगों ने घाट दिया? मो. क. गांधी से गांधीबापू बनाने में कितने लोगों ने काम किया? जन्मभूमि पोरबंदर में पैदा हुए। जन्मदात्री पूतलीबाई। पोरबंदर की भूमि ने घाट दिया। मैं पोरबंदर जाऊं तो समय निकाल कर माथा टेकने जाता हूं और सुदामा के मंदिर जाता हूं। चाय पीने भाईश्री के सांदीपनि आश्रम जाता हूं। महान पुरुषों जहां प्रगट हुए उस भूमि में चेतना–उर्जायें होती है।

कथा-दर्शन

- राम संवाद-विग्रह है। उस पर विवाद न करो।
- राम को केवल मंदिर में न देखते हुए, एक पौधें के बहाने भी देख लो।
- गुरु के पास समाधान होता ही है। वहां शांति मिलती है, विश्राम भी मिलता है।
- साधु देश-काल के अनुसार जगत की शांति के लिए विद्रोह करता है, लेकिन साधु कभी किसीका द्रोह नहीं करता।
- महान पुरुषों जहां प्रगट हुए उस भूमि में चेतना-उर्जायें होती है।
- परंपरा जब जड़ बन जाती है तो इन्सान का कलेजा बिगड़ जाता है।
- क्रोध वो ही करता है जिसको बोध की उपलब्धि नहीं हुई होती है।
- जो खुद अशांत है उसको खुद को ही सुख नहीं मिलता।
- बिना हरिभजन समाजसेवा अहंकारी हो सकती है।
- मंत्र में विधि की जरूरत नहीं, विश्वास की जरूरत होती है।
- दीक्षा देने में विधि होती है। दिशा दिखाने में कोई विधि नहीं है।
- प्रेम के सूत्र से ही लोगों को एक किया जा सकता है।
- कहीं भी शुभ हो रहा हो तो उसका स्वागत करो।
- आदमी रोज नया होना चाहिए। रोज नया चिंतन होना चाहिए।
- कई लोग देश छोड़ने के लिए तैयार है पर द्वेष छोड़ने को तैयार नहीं!
- दुनिया आप को निर्वस्त्र कर सकती है पर नग्न नहीं करत सकती।
- राष्ट्रनायक तपस्वी भी होना चाहिए और तेजस्वी भी होना चाहिए।
- वस्त्र में खादी और जीवन की प्रक्रिया सादी, ये दो मंत्र लेने चाहिए।
- गांधी का सत्य विचार का, उच्चार का और आचार का है।
- पूर्वग्रह मिट जाये तो गांधी सर्वग्राह्य है।
- विश्व में आज सेतुबंध की बहुत जरूरत है।

गांधीजी के मन का घाट बहुत स्वच्छ था

मानस-राजघाट : ६

बहुत ही जिज्ञासाएं है। यथामति यथावकाश कोशिश करूंगा। अयोध्या के तट पर सरजू बह रही है। सरजू के तट पर नाना प्रकार के घाट बनाये गये हैं। इनमें से एक घाट गजघाट है। गजघाट यानी अश्वघाट। जो बोल नहीं पाते, जो अपनी फ़िलिंग व्यक्त नहीं कर पाते ऐसे लोगों का घाट। दूसरा घाट उसी तट पर माताओं के लिए घाट है। कहीं पानी भरा जाता है। तो नाना प्रकार के घाट है। राजघाट की चर्चा चल रही है, जहां अभेद, अभंग भाव से सभी वर्ण स्नान करते हैं। हमारे जीवन के भी कुछ घाट है। जीवन के घाट की कुछ चर्चा करें। संवाद के रूप में चार घाट की चर्चा करें। ये चार घाट प्रसिद्ध है; अंत:करणीय घाट है। सरजू के तट पर बहिर्घाट है। कुछ अंदर के घाट हम सब के पास तो हैं लेकिन यह चार प्रकार के अंदर के घाट में कोई घाट स्वच्छ है, आधा स्वच्छ है, पूरा अस्वच्छ है। फिर भी हम दरकार नहीं करते! तो हमारे भीतर चार घाट है। उसका नाम मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार। मन, उसकी कोई आकृति नहीं, मूर्ति नहीं, कोई ब्ल्यू प्रिन्ट नहीं। मन का क्या रूप? बुद्धि का क्या चित्र? क्या बनाये मगज का चित्र? हां, चित्र उसका शरीर विज्ञान में आता था। बुद्धि का क्या चित्र? चित्त की कभी कोई आकृति नहीं, मूर्ति नहीं। और अहंकार एक अर्थ में तो हमारे में है। उसका कोई रूप नहीं। अहंकार का कोई चित्र बनाये तो कैसा बनाये? आंखे खुली रखे! हाथ पछाड़े! पैर पछाड़े! लेकिन तत्त्वत: अहंकार का चित्र क्या है? गांधीबापू का मन का, बुद्धि का, चित्त का और अहंकार का घाट कैसा रहा? हमारा घाट कैसा है? आज दुनिया के करीब-करीब सब घाट अस्वच्छ है। धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष सबको स्वच्छता अभियान की जरूरत है। और यह अंदर के घाट बहिर् झाडू से साफ़ नहीं होते। यह असंभव है। घाट साफ़ करने के उपाय कठिन है। ध्यान में अंदर के घाट की सफ़ाई होती है। यह मुश्किल है। दो दिन पहले मुझे पूछा था, बापू आप ध्यान करते हैं? मैंने कहा, गुरुकृपा से ध्यान रखने की कोशिश करता हूं। शुभ देखें, शुभकर्म हो। आज मुझे पूछा है, 'गांधीबापू गुस्सा करते थे?' पुण्यप्रकोप था। 'आप को कभी गुस्सा आता है?' बुराईयां तो होती ही है। हमें क्यों पूर्ण समझते हो?

आदमी में कमज़ोरियां होती है। एक बात फैल गई थी, बापू गुस्सा नहीं करते, चिड़ते नहीं, उग्र नहीं होते। बड़े-बड़े साथ में रहनेवाले जानते थे कि ज्वालामुखी के शिखर पर रहना है! एक बार मोर्निंग वोक में बच्चों के साथ-साथ चलते थे। बापू बच्चों के साथ भी सरलता से बातें करते थे। चलते-चलते बच्चों ने पूछा, बापू, किसीका दिल दु:खाना यह हिंसा कहलाता है? मन-वचन-कर्म से किसी के दिल को ठेस पहुंचानी, दु:खाना हिंसा है? बापू बोले, बराबर। तो बच्चे बोले, तो कभी-कभी हमें बुलाकर आप क्यों चिमटा लेते हैं? बापू ने कहा, शरारती कहीं के! और जोर से हाथ दबाया! बच्चें बोले, बापू गुस्सा करते हैं! बापू गुस्सा करते हैं! गांधीबापू सिद्धांत के बारे में कठोर रहे, कड़क रहे। सब गिनती के मुताबिक होता। सबसे बड़ी बात, बापू की ज्यादा से ज्यादा कठोरता कस्तुरबा पर रही। वह नारी कितनी महान थी! कभी एक कवयित्री ने लिखा था, तुलसी को कौन तुलसी बनानेवाली? वो नारी तुलसीदासजी के बारे में कितनी महान रही वो रत्नावली को याद किया जाय। 'कस्तुर' शब्द कस्तुरी से आया है। कस्तुरी बसती है उसकी नाभि में। कस्तुर की गंध की खूबी कस्तुरबा में थी। बापू कुछ कठोर है लेकिन अपने साथियों के साथ उसका व्यवहार भी तो...! उसके साथ रहना बहुत कठिन था। लेकिन उसकी महात्मा की प्रक्रिया शुरू हुई तो कठोरता के प्रति द्वेष नहीं था। व्यासपीठ से मेरी जिम्मेवारी के साथ कहता हूं, गांधीजी के मन का घाट बहुत स्वच्छ था। जहां-जहां मन पर दाग रहे, कुछ ऐसी चीज़ ली, ओलरेडी लिख दिया, 'मैंने ये सेवन किया, मैंने ये पीया। आप हैरान रह जाओगे! दुनिया की कोई चीज़ ऐसी नहीं, जो मैंने छुई न हो!' गांधी हर घाट के पथ्थर थे। मैं तो बहुत ग्रंथ पढ़ता नहीं। मुझे ग्रंथ पढ़ने में रुचि नहीं। पढ़ भी लेता हूं। याद रह जाता है। बहुत कम लोगों ने निज कथा निर्दंभ स्थिति में लिखी है। बेनकाब लिखना बहुत कठिन है। कुछ आज की युवा पीढ़ी यह बात की समझ कबूल नहीं करेगी। गांधीजी के विचार जरा मजबूत थे। उसने सत्य के बारे में प्रयोग किया, संयम के बारे में प्रयोग किया। गांधीजी को समझना मुश्किल है। किया लेकिन किया, निर्भीक हो के किया! मन का घाट निर्मल रहा होगा। मैं इसलिए कहता हूं, रोज जैसे अपने कमरें, खिड़की, अपनी-अपनी सफ़ाई खुद करते थे, जब तक होती रही। मन की सफ़ाई भी नित्यक्रम के रूप से स्वयं निरंतर की होगी। रामनाम की महिमा यत्र-तत्र है। रामनाम या हरिनाम। रामनाम कुछ समय बढ़ी अशुद्धता को बढ़ने नहीं देता, अशुद्धि कम करता है। रामनाम सार्वभौम है। उसको क्यों एक धर्म में बांधा जाय? मेरी समझ में नहीं आया! रामनाम लेने के लिए देश में कुछ लोग डरते हैं, घबराते हैं! कोई सांप्रदायिक्ता का लेबल न लगा दे! भीरु राष्ट्र पूर्णत: स्वतंत्र कैसे हो सकता है? जिस ग्रंथ को देखकर इन्सान कैसा हो? उसका भाई कैसा हो? उसका परिचय हो। बहुत-बहुत ऋण है। किस जन्म चुका पाउंगा? मेरे दादा ने मुझे 'रामचरित मानस' पढ़ाया। मैं मालामाल हूं! मुझे वरदान मिला है। विश्व का आखिरी ग्रंथ लेकर घूम रहा हूं। ओर सद्ग्रंथ आएगा। अभी तक तो 'मानस' का राज है! खुशनसीब हूं। मैं गाता हूं और मैं गुरूर लेकर नहीं, आदर के साथ कहता हूं। समाधि के निटक बहुत बड़ा मेसेज है। आज नहीं तो पचास साल बाद पता चलेगा। कुछ बातें समझने में समय लगता है। एक मेसेज जाएगा। इस साहस को वंदन किया जाएगा, नमन किया जाएगा।

राज्य चलाने के लिए, सियासत चलाने के लिए राजाओं को तीन वस्तुओं का ध्यान रखना चाहिए। 'रामचरित मानस' में राजधर्म पर स्पष्ट लिखा है। तो पृथ्वी की रक्षा की बात हैं, केवल भारत की नहीं। काश, ये अहसास यूनो को हो सकता! विनोबा तो विकसित हुए। विनोबा ने कह दिया 'जय जगत।' हमारे यहां 'सर्वे भवन्तु सुखिन: सर्वे सन्तु निरामया।' कहा गया। 'जयभारत' अच्छा नारा है। 'जयहिंद' भी अच्छा नारा है। भारत की सोच संकीर्ण नहीं होती। आखिर में कह दिया, 'जयजगत।' 'रामचरित मानस' एडवान्स है उससे भी। इसमें 'जयजीव' का नारा है। समग्र जड़-चेतन का बहुत सूक्ष्मता से खयाल रखा है। कहीं प्रगट, कहीं सुषुप्त हैं। तो गांधी में राजनीति नहीं, राष्ट्रप्रीति थी। इसलिए तो

हमने उसे राष्ट्रपिता कहा। लोकनायक हमने जयप्रकाश को कहा। 'मानस' ने कहा, राजा का परम कर्तव्य धरती की रखवाली करे, पालन करे। ये चर्चा राजघाट पर न हो तो कहां हो? अपने-अपने देश में राजधानी होती है; जैसे हमारी दिल्ही। हरेक क्षेत्र की बिलग-बिलग। राज्य की बिलग। आध्यात्मिक जगत में बिलग-बिलग होती है। आश्रितों की राजधानी, बुद्धपुरुषों का आश्रय। भौतिक जगत में हर देश के पाटनगर होते हैं। 'रामचरित मानस' का राजधर्म प्रजा का पालन; राजधर्म का पालन। 'रामचरित मानस' स्पष्ट करता है-

भरत बिनय आदर सुनिअ करिअ बिचारु बहोरि।
करब साधुमत लोकमत नृपमय निगम निचोरि।।

तीन की सिखावन, तीन का मार्गदर्शन, तीन से सीखकर तीन की रक्षा करनी है। पहला पृथ्वी की रक्षा के लिए संतों का मत। कठिनाई यह हुई कि लोकमत केन्द्र में आ गया! संतमत को नकारा गया! लोकमत कभी शराब की बोतल पर लिया गया! कभी खरीदा गया!

कयों बापू को 'रामराज्य' शब्द पसंद आया? सब से पहला साधुमत। ये मौन बैठकर अबोल वाणी में मार्गदर्शन है। मौन बेठा है। मुनि है।

तुम्ह मुनि मातु सचिव सिख मानी।
पालेहु पुहुमि प्रजा रजधानी।।

हे बाप, पृथ्वी का पालन ऋषिओं के, फकीरों के मत अनुसार करो। क्योंकि मुनि कहता है, 'वसुधैव कुटुंबकम्।' हम भारतीयों को भारत का गौरव होना चाहिए। कोई भी साधु हो, आपत्ति नहीं। कभी ओशो ने कहा था, विश्व नागरिक होना चाहिए। विश्व का नागरिक। भारत का नागरिक गौरव होना चाहिए। वेद 'विश्वमानुष' की अवधारणता करते हुए विश्व मानुष कहता है। पूरी पृथ्वी का यदि पालन करना है तो संतों के मत से, मुनिमत से करना। केवल भारत की नहीं, पूरी पृथ्वी की बात है। और प्रजा का पालन करने के लिए माँ की सीख लेना। प्रजा का पालन माँ ही सीखा सकती है। पूरे देश की जो प्रजा है, पूरे देश का पालन सियासत नहीं, भारत माँ ही कर सकती है। भारत को माँ कहो। केवल एक देश पृथ्वी को माँ कहता है; सिर्फ भारत माँ। 'अमरिका माँ' कहो! अच्छा भी नहीं लगे! 'रशिया माँ', 'जर्मनी माँ!' संहार करे उसको माँ कैसे कहा जाए? माँ तो पालक होती है। अपनी प्रजा रक्त, पसीना, दूध, आंखों में आंसू बहाये यह चार प्रवाह का नाम है माँ। प्रजा का पालन तो माँ ही करती है। मा मानी 'मातु' शब्द एक कौशल्या के लिए नहीं है; सुमित्रा को पूछना, कैकेयी को भी पूछना। क्या नारी गौरव किया है 'मानस' ने! कुछ लोग बिना समझे टूट पडे हैं कि 'रामचरित मानस' नारी का गौरव नहीं करता! प्रजा का पालन माँ को पूछकर करना। प्रजा माने अपने परिवार की हो; जनपद की हो, राष्ट्र की हो, सोसायटी की हो या अपने गांव, या गली की हो। अपनी सोसायटी का पालन मातृभाव से करो। माँ ही पालन कर सकती है। माँ की महिमा उससे उजागर होती है। प्रजा का पालन मातृभाव से करे। सियासत माँ बने। माँ बनना चाहिए। माँ का दिल, माँ की आंख, माँ के आंसू। मैं आपसे पूछुं किसीको भी पूछो, जिससे बात करो, उसको अपनी माँ की याद आती है? अकसर कोई भी आदमी सें माँ की बात की जाती है, तो लगता है, मानो अपनी माँ से अधिक कोई है ही नहीं! ये सब कहते हैं, अपनी माँ की जोड़ नहीं। इतना सार्वभौम मातृत्व कैसे झीलें? क्योंकि वो पालक होती है।

प्रजा का पालन ऋषि के और राजधानी का पालन सचिव के मार्गदर्शन से। 'मानस' में स्पष्ट कहा है-

सचिव सत्य श्रद्धा प्रिय नारी।
माधव सरिस मीतु हितकारी।।

बिना मुगुट राजा बना देती है। गांधी कब राजा बना? दुनिया ने उसको अपने सिर का मुकुट बना दिया! बिना पद जिसकी महिमा बढ़ी, सही में शाश्वत है। पद गया तो कोई पूछता नहीं! परमात्मा से प्रार्थना करूं, ऐसा सचिव, मंत्रीगण हो तो वंदन। न हो तो कोशिश करें। खोज करो। सचिव के दो लक्षण। सचिव सत्य; और दूसरा, सचिव विरागी। सचिव वैरागी होना चाहिए।

तो बाप, 'रामचरित मानस' एक वैश्विक सूत्र कहता है, पूरी पृथ्वी का पालन करना है तो सीखो मुनि से। साधु, एक फ़कीर ये जो केवल जगत के लिए जी रहा हो। मौत उसकी मुठ्ठी में होता है। प्रजा की रक्षा कैसे हो, पूछो साधु को। प्रजा की रक्षा कैसे हो, माँ से पूछो। राजधानी का कैसे पालन करे, तो सचिवों को पूछो। गांधीजी का राजधर्म है, उसमें देखने से पता चलता है। गोळमेजी राउन्ड टेबल कोन्फरन्स में भाग लेने गये तब स्टीमर में साथ रखे सामान को देखकर महादेव देसाई से पूछा महादेव, ये सामान क्यों? 'सब लोगों ने ये सामान दिया।' बापू बोले, एक फ़कीर जा रहा है। इतना सामान शोभा नहीं देता। मैं गरीब देश का प्रतिनिधि हूं। मेरे लिए ब्रिटन में एक कम्बल काफ़ी है। लौटा दो सब! मेरा मन नहीं उठा पाएगा ये बोज। बांट दो अगले स्टेशन। मैं गरीब देश का प्रतिनिधि हूं। पोतडी पहनके जा रहा हूं। पंचम ज्योर्ज आदि सबको वही पोतडी पहनकर ही मिले थे। ऐसा कोई मुनि ही पृथ्वी की रक्षा कर सकता है। ऐसा वैराग! सब उतार देना! मुझे लगता है कि बापू ने मन की सफ़ाई बहुत की। तीक्ष्ण व्रत से मनकी सफ़ाई बहुत की। मेरी भाषा में कहूं तो जबरदस्त आंधी आयी थी उसका नाम गांधी! इन्कलाब की आंधी। सत्य की आंधी। जितने चींथड़े टूटे थे उन्होंने सांध दिये। एक साधुत्व निभाया।

ऋग्वेद के दस हजार पांच सौ से कुछ उपर मंत्र है। ऋग्वेद का आखरी संदेश द्वेषमुक्त एकता, द्वेषमुक्त अखंडितता, मानी एक दूसरे को जोड़ना। हम बोलेंगे वेदमंत्र। बापू की चेतना राजी होगी।

समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति।।

विनोबाजी ने भाष्य किया है। आकूति का अर्थ, भावना अथवा संकल्प। अंतिम संदेश है, भावनाओं का मात्राभेद हो सकता है। दृढ भावना; कमजोर भावना। सब की भावना एक हो सकती है? असंभव है। भावना और संकल्प दोनों अर्थ अच्छे लगते हैं। सबकी भावना एक है। हो सकती है? सब के मत कैसे एक हो? मत तो सब के अलग-अलग। झरणें बिलग-बिलग लेकिन आखिर में तो एक नदी। मेरा संकल्प, उसका संकल्प यदि सद्भावना है, दुर्भावना नहीं हो, तो नदी का रूप हो। हमारें मन की भावना और संकल्प एक हो। गांधी का मन निरंतर स्वच्छता अभियान चलाता। इसलिए मन द्वेषमुक्त हो। 'समाना', एक समान हो। एक जैसी धड़कन।

'मिले सूर मेरा तुम्हारा, तो सूर बने हमारा!'

'हृदयानि वः।' समान हमारी चैतसिक अवस्था। उसके बाद हमारा संगठन एक हो। मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार चार घाट महात्मा बनने की प्रक्रिया शुरू हुई तो उसका प्रत्येक संकल्प खुद के लिए नहीं, खुदा के लिए हुए। सब के शुभ के लिए हुए। दूसरा घाट बुद्धि का। शुरू में सोचते, ये करूं, ये करूं! बहुत ही डामाडोल रही बुद्धि का भटकाव धीरे-धीरे रुक गया। बुद्धि व्यभिचारिणी नहीं होनी चाहिए। मुझे लगता है, कई बौद्धिक निर्णय नेता लोगों को भी पसंद नहीं पड़ते थे। नहेरुजी ने आखिरी तक कहा, मैं अहिंसा के मत में नहीं हूं। सरदार भी कहते थे, यह मुश्किल है। सुभाष और गांधीबापू एक बार कलकत्ता गये थे। ट्रेनमें से उतर रहे थे तब 'महात्मा गांधी की जय' 'गांधीबापू की जय' सुनते रहे। 'सुभाष की जय' किसीने नहीं सुनाई! तो बापू ने उपवास रखा। लोगों ने सोचा, सुभाष और गांधी की नहीं बनती! बापू बोले, सुभाष की वीरता, शौर्य, समर्पण के लिए मुझे नाज़ है। लोग तो खुशामती ही होते हैं! गांधीजी नाराज हुए। ये था बुद्धि का सटीक निर्णय। कितने ही ऐसे निर्णय है।

एक बार जब गणेशजी ने दूध पीया देश में! हद हो गई थी! गजब हो गया था! हमने बछड़े का दूध छिन लिया! हमारे पास से गणेशजी ले गये! मैं अफ्रिका में था। फोन पर खबर आयी। कार में यात्रा में था तब खबर मिली, हिन्दुस्तान में गणेशजी दूध पी रहे हैं! मैंने कहा, चिमनभाई, आपणे जे तलगाजरडामां गणेश स्थाप्या छे ते पीए तो हुं मानीश। त्यां गणेशे दूध न पीधुं! मारो गणेश बीजानुं दूध न पीए! फिर फोन आया, नहीं पीया! उस समय सौरभ शाह ने लिखा, कभी-कभी लाखों लोग कहे तो भी असत्य हो सकता है, एक आदमी सत्य हो सकता

है। बापू की बुद्धि का निर्णय। लेकिन उसकी बुद्धि महात्मा बने तो भी व्यभिचारिणी नहीं रही।

बुद्धि का स्वच्छता अभियान तीन प्रकार से चलना चाहिए। यज्ञ, दान और तप। वेद का पहला मंत्र अग्नि से शुरू होता है। यज्ञ की महिमा है ही, लेकिन यज्ञ से बुद्धि को शुद्ध करना है। शुद्ध यज्ञ माने स्वाहा, स्वाहा। 'वाह-वाह' बुद्धि को मलिन करती है, 'स्वाहा' शुद्ध करती है। तो बाप, यज्ञ से बुद्धि शुद्ध होती है। और तप करने से बुद्धि स्वच्छ होती है। पंडितों की बुद्धि, मनीषीओं की बुद्धि भी।

जनकसुता जग जननि जानकी।
अतिसय प्रिय करुनानिधान की।।

जानकी की कृपा से बुद्धि निर्मल होगी। यज्ञ, दान, तपस्या की है; जनक ने यज्ञ कर के जानकी को प्राप्त किया था। जानकी यज्ञ का मूल अर्थ है। इसलिए आज हमने शब्द रखा है, 'कन्यादान।' कन्यादान जानकीदान है। जानकी जैसी जपस्विनी कौन है? आग में जली थी वो; कुटिया में भी बसी थी वो; पति के कदमों में कितनी तपस्या है! यज्ञ, दान, तप से बुद्धि स्वच्छ करते थे बापू। बापू ने यज्ञ करवाया। गांधी ने भूदान यज्ञ करवाया। समूह यज्ञ की प्रेरणा दी। आरोग्य यज्ञ शुरू किए। विनोबाजी ने कहा, भूमि छिनने से कुछ नहीं होगा। विनोबाजी जमीन-भूदान ले आये। सौराष्ट्र के कुछ गांव तक आये विनोबाजी। जो जमीन मिले वो गांव के दलित, अंतिम और वंचितों में बांटो। अब यज्ञ, श्रम, भू, आरोग्य के साथ जुड़े। गांव में भू-यज्ञ द्वारा शुद्धि की गांधीबापू ने। दान द्वारा कुछ दे दिया। दान द्वारा सब कुछ दे दिया। आखिर में आज़ादी भी दी। इसी पर तो गीत गाये जाते हैं-

दे दी हमें आज़ादी बिना खडग, बिना ढाल,
साबरमती के संत तुने कर दिया कमाल।

इसी से यह महापुरुष ने सब शुद्ध रखा, सबकुछ दे दिया। तप तो उसने समान किस का? वह बड़े तपस्वी रहे। यज्ञ, दान, तप। शुद्धि के लिए बुद्धि के घाट की सफ़ाइ इन तीनों शुद्ध साधनों से की। साधन शुद्धि। 'रामचरित मानस' के तुलसीजी ने साधनसिद्धि की बात कही। गांधीजी कहते हैं, साधनशुद्धि। बहुत अच्छी बात। 'गीता' में पांच साधन बताये हैं-करण, अधिष्ठान, कर्ता आदि। अधिष्ठान चाहिए, करण चाहिए। राम के सन्मुख जाते हैं तो सब पाप धूल जाते हैं। कुछ लोग कहते हैं, शूर्पणखा पंचवटी में सन्मुख गई थी तो उसका उद्धार क्यों नहीं हुआ? पाप जलने चाहिए, स्वरूपबोध होना चाहिए। लेकिन शूर्पणखा का साधन शुद्ध नहीं था। मूल रूप में जाती! ये तो दंभ करके गई! किसी का कंबल चुरा के ओढ़ लो तो ठंड जरूर जाएगी, भय नहीं जाएगा। सौ रूपिया दे के ओढ़ोगे तो ठंड भी जाएगी, भय भी जाएगा। दोनों चले जाएंगे। ये है साधनशुद्धि। मेरे देश के युवान भाई-बहन, अपना साधन शुद्ध रखो। थोड़ी कम आय हो तो भी।

ज्यादा की नहीं लालच हमको थोड़े में गुजारा होता है।
हम उस देश के वासी है, जिस देश में गंगा बहती है।

दिल्ही में गंगा नहीं बहती, दिल्ही में यमुना बहती है। वहां अभी साधनशुद्धि जरूरी है। मुझे रजनीशजी मिलने आये थे। दो-चार दिन पहले बोले थे, साधनशुद्धि रखूंगा। परमात्मा उसको बल दे। शूर्पणखा सन्मुख गई, पा नहीं सकी। केवट सन्मुख गया, पा गया क्योंकि दंभ नहीं था। 'साधनशुद्धि' बहुत प्यारा शब्द है। तो बाप, गांधी की बुद्धि शुद्ध होती रही है। और चित्त; इस आदमी की चित्त की एकाग्रता! बात मत करो। ओशो पहले गांधी की आलोचना कर चुके लेकिन वो कहते हैं, मैंने गांधी को भोजन करते समय देखा हैं। भोजन करते वक्त वो भोजन ही करते हैं। चित्त इधर-उधर नहीं। जिस काम में गांधी लगते थे। रेंटियो कांते तब तप करते हो, ध्यान धरते हो ऐसा लगे! चित्त की एकाग्रता आवश्यक है। चित्त की एकाग्रता गजब की थी! आखिर में आता है गांधी का अहंकार, निजी अहंकार। और वैश्विक अहंकार का प्रतीक शिव है। हम जीव है। गांधी का अहम् 'शिवोहम्' है, 'जीवोहम्' नहीं। में बलवान, बुद्धिवान, मैं यह कर दूंगा, ये कर दिया, ऐसा जीवोहम् नहीं। चिदानंदरूप शिव अहंकार पैदा होना चाहिए। शिवोहम् खुद का और सब का कल्याण करता है। जीवोहम् खुद का और जुड़े हुए सब का नाश करता है। कर्म का सिद्धांत है। लेकिन तुम जुड़े हो तो भुगतना ही है। पांच लोग जब जुआं खेलते हैं, इसमें एक तो सिर्फ़ चाय-पानी के लिए होता है, खेलता नहीं। लेकिन जब पुलिस पकड़ने आती है तो पांचों को पकड़ती है। पैर में कांटा लगे और रोती है आंख। आंख रोती है क्योंकि उसने कांटा देखा था। मस्तक को संदेश दिया फिर भी न सुनी। कांटा लग गया। देखनेवालों की सुनना जरा! सुना नहीं फिर भी पैर रखा! यह सब युनाईटेड है, संयुक्त है। कर्म का फल जरूर मिलता है। कर्म का फल चखना पड़ता है। कर्म का प्रमुख सिद्धांत है। भागीदारी में साथ में जुड़े होते उसको भी दंड़ित होना पड़ता है। जीव का अहंकार तुच्छ है। हमारा नरसिंह मेहता गुजराती में प्रभातिया में गाता है-

हुं करुं हुं करुं ए ज अज्ञानता,
शकटनो भार जेम श्वान ताणे।

तुच्छ अहंकार जीव का धर्म है। समष्टि का अहंकार वैश्विक अहंकार है। मुझे कहने दो, गांधी का अहंकार शिवोहम् है, जीवोहम् नहीं है। पूरी समष्टि का उद्घोष है। तो, यह चार अंत:करणीय घाट है। गांधीबापू महात्मा बने। हम भी साफ़सूफ़ी करे जितनी हो। पूरा पावन हो गये ऐसे दावे में न जाएं। लेकिन मुझे तो लगा है कि रामनाम से ही मन, रामनाम से ही बुद्धि, रामनाम से ही चित्त एकाग्र होगा। रामनाम से अहंकार से आज़ादी मिल जाएगी।

आज मेरे पास एक जिज्ञासा है। गांधी परिवार के पुत्र-पौत्र को पत्र है। उस में न जाय। हमारे परिवार की महिला की गोद में गांधी का मस्तक था। ५:१३ बचे गोली लगी। डेथ हुआ। निवेदन की ऐसी चर्चा हुई कि उस समय गांधी 'राम' ही बोले; 'हे राम' नहीं, 'राम' ही बोले थे। 'हे' पीछे से डाला गया। जो भी था, रामनाम तो था। संकीर्ण मानसिकता वाले राम नहीं, गांधी का राम सार्वभौम है। राम हो, श्री राम हो, रघुपति राघव राजा राम हो। 'हराम' नहीं है! कोई भी रूप में राम रखो। विवाद का विषय मत बनाओ। उसके उत्तर में जाना नहीं चाहता। गांधी के मुख से निकले राम की दीक्षा लो। पोस्टमोर्टम क्यों? राम ने सब को जोड़ा है। अयोध्या से गये थे तीन, आये पुष्पक में कितने? राम संवाद का विग्रह है। यह जोड़ते हैं सब को। राम के नाम में विवाद नहीं होना चाहिए। मेरे पास भी लोग आते हैं। पूछते हैं, आप कीर्तन करते हैं वो दशरथपुत्र राम का या योगीओं के राम का? यदि ये तेरा राम नहीं, तो ये मेरा राम है। राम का नाम संकीर्ण नहीं होता।

तो, राम संवाद-विग्रह है। उस पर विवाद न करो। 'मानस-राजघाट' के बारे में अंत:करणीय घाटों की चर्चा करते हुए थोड़ा कथा का क्रम। हम सबने कल बीच में रामजनम का उत्सव मनाया। 'मानस'कार कहते हैं, कैकेयी ने भी एक पुत्र को जन्म दिया। और सुमित्रा ने दो पुत्रों को जन्म दिया। इतना उत्सव बढ़ गया! एक महिने का दिन हो गया! रात हुई ही नहीं! और कई प्रकार के अर्थ इसके सुने हैं। जीवन में राम आये तो दिन ही दिन, रात होती ही नहीं! जनम-जनम का उजाला हो जाता है। इस परमतत्त्व अवस्था, जहां मोह निशा का प्रवेश नहीं है। सूरज तो निकलता होगा, उदित भी होता

> व्यासपीठ से मेरी जिम्मेवारी के साथ कहता हूं, गांधीजी के मन का घाट बहुत स्वच्छ था। जहां-जहां मन पर दाग रहे, कुछ ऐसी चीज़ ली, ओलरेडी लिख दिया, 'मैंने ये सेवन किया, मैंने ये पीया।' गांधीजी के विचार जरा मजबूत थे। उसने सत्य के बारे में प्रयोग किया, संयम के बारे में प्रयोग किया। गांधीजी को समझना मुश्किल है। प्रयोग किया लेकिन निर्भीक हो के किया! मन का घाट निर्मल रहा होगा। मैं इसलिए कहता हूं, रोज जैसे अपने कमरें, खिड़की, अपनी-अपनी सफ़ाई खुद करते थे, जब तक होती रही। मन की सफ़ाई भी नित्यक्रम के रूप से स्वयं निरंतर की होगी।

होगा, लेकिन परमानंद ऐसा रहे कि समय का भान नहीं रहा। भगवान राम और चारों भाई बड़े होने लगे। नामकरण का अवसर आया। राजा ने ज्ञानी गुरु को नामकरण के लिए बुलाया। चारों पुत्रों का नामकरण करते हुए वशिष्ठजी बोले, हे राजन्, महाराणी कौशल्या के अंक में खेलनेवाला श्यामवर्ण बालक जो विश्व में आराम, विश्राम, विराम प्रदान करेगा, उसका नाम मैं राम रखने जा रहा हूं। रामनाम अनादि है। जो चीज़ आराम दे, जो घटना आराम दे, जो विश्राम दे, जो प्रसंग आनंद दे, वो घटना-प्रसंग राम है। राम कोई व्यक्तिवाचक नहीं है। जहां से भी आनंद प्रदान करे वो राम। जिस व्यक्ति की मुलाकात से आनंद मिले, कोई गीत सुनने से आराम मिले वो गायन राम ही है। राम के समान जिनका वर्ण है, दैदीप्यमान बालक सबको भर देगा, पुष्ट करेगा, इसलिए मैं उसका नाम भरत रखता हूं। भरत की दो व्याख्या है। भरत प्रेम का पर्याय है, त्याग का पर्याय है। इन्सान को प्रेम ही भर देता है। त्याग ही भरपूर कर सकता है। सुमित्रा के दो पुत्र इसको क्रम पलटकर पहले बताते हैं, जिसका सुमिरन करते ही शत्रुबुद्धि का नाश होगा इसका नाम शत्रुघ्न रखता हूं। सभी लक्षणों के धाम, राम के प्रिय, जगत के आधार और परम उदार उस बालक का नाम लक्ष्मण रखता हूं। बार-बार दोहराता हूं, राम महामंत्र भी है। रामनाम लेनेवालों को तीन भाईओं का अर्थ अपनी कक्षा के अनुसार करना चाहिए। भरतजी शोषण नहीं, सबका पोषण करते हैं। राम साधन नहीं, साध्य है। भरत तुष्ट-पुष्ट करता है। रामनाम लेनेवाले दूसरों का पोषण करे। दूसरी बात, रामनाम जपनेवालों को चाहिए शत्रुबुद्धिनाश। सामनेवालों का नाश नहीं, उसमें रही शत्रुता का नाश। शत्रु का नाश नहीं, शत्रुता का नाश; वैरी का नहीं, वैर का नाश; दुश्मन का नाश नहीं, दुश्मनी का नाश। चाहे जिन के आधार बन सके आधार बन लो। दवाखाना न बना सके तो जरूरतमंद को दवा दो। कोलेज ना बना सके तो बुद्धिमान बालक की फ़ी भर दो, पुस्तकें दिलवा दो, भूखे को रोटी दो ये लक्षणत्व है।

चारों भाइयों का यज्ञोपवित संस्कार हुआ और गुरद्वार पर चारों भाई पढ़ने गये। अल्पकाल में सभी विद्याएं प्राप्त कर ली। विद्या जीवन में उतार रहे हैं। रोज माँ को प्रणाम करते हैं। पिता को प्रणाम करते हैं। गुरु को प्रणाम करते हैं। फिर विश्वामित्रजी आते हैं। राम-लक्ष्मण को मांगते हैं। राजा शुरू में इन्कार करते हैं लेकिन आखिर में प्रदान करते हैं। दोनों भाई को लेकर सिद्धाश्रम की और चल पड़ते हैं। रास्ते में ताडका का निर्वाण करते हैं। भगवान ने यज्ञरक्षा की। मारीच को शत जोजन दूर फेंका। सुबाहु का निर्वाण किया। आश्रम में कुछ दिन रहे। विश्वामित्र बोले, मेरा यज्ञ तो पूरा हुआ। एक अहल्यायज्ञ, एक धनुषयज्ञ बाकी है वो करे। पदयात्रा आगे चली। रास्ते में अहल्या का आश्रम आया। शिला देखकर जिज्ञासा हुई, भगवन्, यह किसका आश्रम है? सुनमुन ये क्या है? ऋषि बोले, राघव, ये गौतमनारी श्रापवश है, पाप वश नहीं। पथ्थरदेह धारण करके पड़ी है। सबने उसका लाभ लिया! इन्द्र उसको छल कर चला गया और उसके पति भी छोड़कर चले गये! आप के चरण की रजमात्र कृपा चाहती है। वाल्मीकि की अहल्या को स्वयं राम स्पर्श करते हैं। तुलसीदासजी के राम विश्वामित्र के कहने पर रजमात्र कृपा करते हैं। राम उद्धार भी करते हैं, स्वीकार भी करते हैं। कैसा स्वीकार? गौतम की मानसिकता बदली और गौतम के आश्रम में स्वीकार, सस्नेह स्वीकार हुआ। अहल्या विश्व का बहुत बड़ा आश्वासन है। राह देखो, प्रतीक्षा करो। अहल्या अपनी हुई भूलों का प्रायश्चित्त कर रही है। राम को नंगे पैर उसके पास आना पड़ा और उठाना पड़ा! सब आगे चलते हैं। गंगा तट पर गंगा स्नान करते हैं। जनकपुर पहुंचते हैं। जनक को खबर मिली। अपने सचिवों, महात्माओं को लेकर अमराई में ठहरे विश्वामित्र और कुमारों के पास आते हैं। जनकराजा ने प्रणाम किया। तीनों को 'सुन्दरसदन' में निवास करवाया। फिर दोपहर का भोजन हुआ। सबने बिश्राम किया। आप भी अब भोजन करो। भाग्य में हो तो बिश्राम करो!

गांधीबापू विश्व-मानुष हैं

बाप! राजघाट की इस तीर्थभूमि में, विश्ववंद्य गांधीबापू की जागृत चेतना की समाधि को प्रणाम करते हुए, आज की कथा में उपस्थित रमणरेती से पधारे हमारे पूज्य महाराजश्री को प्रणाम करते हुए और हम राग और अनुराग से लेकिन राग और द्वेष से मुक्त होकर शब्द-सूर का साथ लेकर और गांधीबापू को जो 'रामचरित मानस' अत्यंत प्रेरणादायी और प्रिय रहा, वो 'रामचरित मानस' लेकर ये नव दिवस की हम यहां सर्वधर्म प्रार्थना कर रहे हैं। उसीमें आप सभी और यहां आये पूजनीय गण, जो विधविध क्षेत्र से पधारे हैं, आप सबको आदाब, सलाम, प्रणाम, जय सीयाराम। और आपने कहा कि बापू उर्दू में बोले! आपको मुझे सिखानी पड़ेगी, साहब! आपको बाध्यता हो, आप जा सकते हैं। इतना सुना दूं-

वाईज़े मोहतरम् इस कदर आप का
बादाखाने में आना बुरी बात है।
अब आ ही गये हैं तो थोड़ी पी लीजिए,
बिन पीये लौट जाना बुरी बात है।

मेरी भी दो चौपाई सुनकर जाईए। मेरा सौभाग्य है, आप सब बुझुर्ग के चरणों में बैठने का मौका मिलता रहता है। आप स्नेह आदर देते हैं, ये आपका बड़प्पन है। मैं सबको प्रणाम करता हूं। आप सभी को मेरा प्रणाम।

'मानस-राजघाट', इस विषय को केन्द्र में रखते हुए 'रामचरित मानस' की चर्चा करेंगे और गांधीबापू के विचारों का भी स्मरण करते हैं। विनोबा ने विस्तार से जो बात कही, भगवान वेद ने शब्द दिया है, वहीं से उठाया और कहा कि विश्व में एक 'विश्व-मानुष' होना चाहिए। हम कितने छोटे मानुष हैं! कितने-कितने विभागों में बटे हुए हैं! जरा भी अतिशयोक्ति किए बिना मेरी अंत:करणीय प्रवृत्ति जो मुझे साथ देती है, उसके अनुसार कहूं तो विश्ववंद्य

गांधीबापू विश्व-मानुष है, अवश्य। विनोबाजी ने ये भी कहा कि गोस्वामी तुलसीदासजी विश्व-मानुष है। और विनोबाजी ने कहा, महात्मा महम्मद पयगम्बरसाहब विश्व-मानुष है। और यही विनोबाजी ने अपने प्राज्ञ विचारों से ये भी कहा कि जगद्गुरु शंकराचार्य भी विश्वमानुष है। विश्व को चाहिए विश्व-मानुष। महाराष्ट्र के ज्ञानेश्वर महाराज यद्यपि बोले मराठी भाषा में लेकिन उसने जो ग्रंथ रचना की, वो जब अर्पण करने की बात आई तो कहा, मैं मेरे इस ग्रंथ को विश्वात्मा को अर्पण करता हूं। कोई छोटा विचार नहीं इन महापुरुषों में। ये संकीर्ण दीवारों ने हमें कितने बिखेर दिये! जगद्गुरु तुकाराम की भी भाषा मराठी रही। पूछा गया कि आपका ठिकाना क्या? आप कहां रहते हैं? तो कहा, 'स्वदेशे भुवनत्रयम्', मैं त्रिभुवनवासी हूं। विश्व-मानुष; विश्व-मानुष की परिभाषा क्या? गांधी के दर्शन में जो दिखता है, उसका सहारा लूं। भगवान राम के दर्शन में दिखता हैं, उसका सहारा लूं। हनुमानजी में दिखता है, योगेश्वर कृष्ण के दर्शन में जो मिलता है, या तो सूफ़ी फ़कीर-संत-महात्मा लोग, पहुंचे हुए बुद्धपुरुष का सहारा लूं, तो इस राजघाट पर मुझे चार घाट नजर आते हैं।

गांधीबापू का एक घाट था नि:स्पृहता। 'भगवद्गीता' का जो अनासक्ति योग कहते हैं। ऐसे विश्व-मानुष हमें कम मिले हैं। अल्लाह करे, ज्यादा मात्रा में मिले! आज मेरे एक मुस्लिम श्रोता ने लिखा कि मैं भी बापू, आपका एक मुस्लिम फ्लावर हूं और आपके मुख से दो ही चीज़ सुनने आता हूं। आप कभी बीच में बोलते हैं, 'हे हरि', तो मुझे बहुत अच्छा लगता है। और आप बीच में कहते हैं, 'अल्लाह जाने'; तो मैं बहुत रोमांचित हो जाता हूं! मेरे 'या अल्लाह' और 'हे हरि' में कोई तफ़ावत नहीं है।

खुलूसो-मुहब्बत की खुशबू से तर है।
चले आइये, ये अदीबों का घर है।
अलग ही मज़ा है फ़कीरी का अपना,
न पाने की चिंता, न खोने का डर है।
- दीक्षित दनकौरी

मैं सहज बोलता हूं, मेरा कोई प्रयास नहीं। कभी मैं आपको 'यारो' कहता हूं, कभी 'साहब' कहता हूं, कभी 'बाप' कहता हूं।

तो, विश्व-मानुष की गांधीबापू के दर्शन में यदि गणना करे तो सूचि बहुत लंबी है। लेकिन चार लक्षणों में से एक नि:स्पृहता। ज्योर्ज पंचम जब सामने बैठे थे। चर्चिल को थोड़ा अच्छा भी नहीं लगा क्योंकि प्रोटोकोल के विरुद्ध था। गांधी ने वो ही लंगोट, अंदर का एक कपड़ा कंधे पर डाला हुआ था। और ज्योर्ज पंचम के पास बैठे थे बापू। उसके बाद गांधीबापू को एक बच्चे ने पूछा था कि 'आपके पास कुर्ता नहीं है? आपके पास न हो तो मेरी माँ को कहूं, वो आपको सिलाई करके एक कुर्ता दे।' बापू ने कहा, 'धन्यवाद बेटा, पर तेरी माँ कितने कुर्ते सियेगी? मुझे तो चालीस करोड कुर्ते चाहिए। मेरे देश के चालीस करोड लोगों के अंग पर कुर्ता नहीं है। यदि तेरी माँ मुझे इतने कुर्ते बनाके दे सकती है तो मैं कुर्ता पहन सकता हूं।' ये त्याग और एक सम्राट के सामने भीतरी वैरागी वृत्ति और हर चकाचौंध के प्रति नि:स्पृहता। ये गांधी को विश्व-मानुष बनाने में महत्त्व का काम कर गई। और अभी-अभी कश्मीर से आये शर्मासाहब ने स्मरण किया, 'दो अक्टुबर को विश्वसंस्था यूनो ने बापू के जन्मदिन को 'अहिंसादिन' का नाम दिया। ये विश्वमानुष है, अवश्य। फिर मैं दोहराते हुए आगे बढूं कि मेरी दृष्टि में सप्तर्षिओं में से उतरा ऋषि है गांधी। और वो कहीं गया नहीं है। जैसे यहां से कहा गया कि मैं किसीका भक्त नहीं हूं। मैं भी कहता हूं कि मैं किसीका गुरु नहीं हूं, न मेरा कोई शिष्य है। मजबूरसाहब का शे'र है-

ना कोई गुरु, ना कोई चेला।
मेले में अकेला, अकेले में मेला।

जगद्गुरु ने हमें यही सिखाया-

न मे मृत्युशङ्का न मे जातिभेद:
पिता नैव मे नैव माता न जन्म।
न बन्धुर्न मित्रं गुरुर्नैव शिष्य:
चिदानन्दरूप: शिवोऽहं शिवोऽहम्।।

इसका मतलब ये नहीं कि ये अद्भुत परंपरा का अनादर है, लेकिन गुरु बनने की हमारी कोई औकात नहीं। क्या

इस फ़कीर का त्याग था! नि:स्पृहता थी! स्वाभाविक व्रतों में कितने आबद्ध रहे बापू! दूसरा, गांधीबापू जवान किसान है। हमारे देश के एक बार के प्रधानमंत्री स्वर्गीय लालबहादूर शास्त्रीजी, आपका जन्मदिन भी दो अक्टुबर को ही पड़ता है। आपने ये दो सूत्र दिये थे। एक, 'जय जवान।' दूसरा, 'जय किसान।' लेकिन गांधीबापू के बारे में ये दोनों शब्द जोड़कर कहना चाहूंगा। जैसे यहां से कहा गया कि गांधी एक ऐसा आदमी, जिस पर रोज कुछ न कुछ लिखा जा रहा है। इतनी किताबें गांधीबापू के बारे में लिखी जा रही है। इनमें से जो कुछ समझ सकता हूं, पढ़ सकता हूं, सुन सकता हूं, उनके आधार पर मुझे कहना है। गांधी की विश्व-मानुषता का दूसरा पहलू है कि वो जवान किसान है पृथ्वी का, केवल भारत का नहीं। विनोबा ने एक बहुत अच्छी व्याख्या की कि 'ऋषि' और 'ऋषभ' दोनों शब्द हमारे यहां आये हैं। उसमें संस्कृत की धातु तो एक ही है। लेकिन 'ऋषभ' का अर्थ है बैल और 'ऋषि' का अर्थ है बैल के पीछे चलनेवाला किसान। गांधी युवान किसान है। और विनोबाजी वहां तक कहते रहे कि मेरे देश में पृथ्वी पर क्षत्रिय किसान होना चाहिए, ब्राह्मण किसान होना चाहिए, वैश्य किसान होना चाहिए, सेवक किसान और वन्यजाति किसान होना चाहिए। शरीर और उम्र को छोड़ो। 'युवास्यात् साधु, युवास्यात् अध्यापक:।' साधु को बूढ़ा होना नहीं चाहिए। शरीर की बात और है। विचारों से बूढ़े न हो।

मैंने जब भी गांधीबापू के बारे में सोचा, सुना, मुझे ये आदमी जवान किसान दिखा। ये विश्व-मानुषता का दूसरा पहलू है मैरी व्यक्तिगत दृष्टिमें, मेरी जिम्मेवारी के साथ। और तीसरा, गांधी संवेदना से भरा विज्ञान है। गांधीजी ने सात सामाजिक पाप की उद्घोषणा की, इसमें एक पाप आपने कहा कि संवेदनशून्य विज्ञान सामाजिक पाप है। महात्मा गांधीबापू की विश्व-मानुषता को सिद्ध करती है। संवेदनायुक्त एक विज्ञानी हम को मिला। ये जड़ पदार्थों का खोजी विज्ञानी नहीं था, ये चिद्विलास का विज्ञानी था। ये चैतसिक विस्तार का वैज्ञानिक था। इसीलिए संवेदनपूर्ण विज्ञानी है गांधीबापू। उसके हर प्रयोग, उसकी आत्मकथा का नाम भी यही है 'सत्य के प्रयोग।' और मैं भी कथाओं में अक्सर कहता हूं कि ये रामकथा, ये 'रामचरित मानस' की कथा धर्मशाला नहीं है, ये प्रयोगशाला है। ये प्रयोग हो रहा है सर्वधर्म को साथ लिए हुए। मेरा कोई मिशन नहीं है। शर्मासाहब, आपकी महिमा है, आपका औदार्य है; आपने कहा, हमारे एक लाख स्वयं सेवक है। अगर आप अगवानी ले तो आपके पीछे-पीछे चलें। ये तो आपका बड़प्पन है लेकिन विश्व-मानुष के जितने-जितने महापुरुष है उनके विचार लेकर चलोगे तो मेरी व्यासपीठ आपके साथ-साथ चलेगी। 'संगच्छध्वं संवदध्वम्।' मेरा कोई संगठन नहीं है। एक फिलम गीत गाऊं?

साथी हाथ बढाना...

ये वेद के अनुकूल बात पड़ती है। गाता हुआ और नाचता हुआ धर्म होना चाहिए। सबको साथ लिए, देश और विश्व चले। मैं कहता रहता हूं, मेरी कथा कोई एक धर्म की कथा है ही नहीं। एक बार मेरी महफ़िल में आकर देखो तो पता चलेगा। यहां सबका स्वीकार है। यहां कोई जड़ परंपरा की कथा नहीं है, यहां प्रवाही परंपरा की बात है। मैं परंपरा में मानता हूं। मैं अक्सर कहता हूं कि गंगा में पाप धूल जाते हैं, ये तो हमारी बड़ी श्रद्धा है। गंगाजल से कपड़ें धूल जाते हैं पर उसी जल का बर्फ़ बनाकर कपड़ें धोओ तो कपड़ा बिगड जाता है! परंपरा जब जड़ बन जाती है तो इन्सान का कलेजा बिगड़ जाता है। परंपरा प्रवाही होनी चाहिए।

कई प्रश्न है, जिज्ञासा है। उसमें पूछा गया कि 'गांधीबापू के दर्शन में उनके गुन-गान गा रहे हो, तो क्या उनमें कोई कमियां है ही नहीं?' मैंने कहां कहा? और गांधी ने खुदने भी कहां कहा? उनकी आत्मकथा पढ़ लो ना, यार! लेकिन मुझे जिस व्यक्ति को वंदन करना है, तो मुझे जो अनुकूल पड़े वो ही ले लेता हूं! दूसरे में मुझे जाने की जरूरत क्या है? मेरी औकात भी क्या कि महापुरुष के हर पहलू को हम छू पाये? जो शुभ मिले वो ले लो। जहां से मिले। बापू तो विश्व-मानुष है। कुछ विचार उनके प्रासंगिक न लगे तो हमारे सोच की कमी है। हम समझ न भी पायें। मुझे मेरे गुरु ने सिखाया है और तुलसी ने लिखा है-

श्री गुरु चरन सरोज रज
निज मन मुकुर सुधारि।
बरनउं रघुबर बिमल जसु
जो दायकु फल चारि।

वहां लिखा है कि मैं भगवान के निर्मल यश का वर्णन करता हूं। इसके दो अर्थ, परमात्मा के सभी यश निर्मल ही होते हैं, सवाल ही नहीं होता। लेकिन भगवान जब लोकसंग्रह के लिए धरती पर आते हैं तो उन पर भी उंगलियां उठती है। तुलसी कहते हैं, उसमें मुझे जाने की कोई आवश्यक्ता नहीं है कि राम ने सीता क्या त्याग क्यों किया? सीता की परीक्षा क्यों की? वालि को छिपकर क्यों मारा? मेरे तुलसी ने मुझे सिखाया कि निर्मल यश गाओ। मैं तुलसी को गाता हूं, इसका मतलब ये नहीं कि मैं तुलसी की हर बात मान लूं। मुझे भी मेरी स्वतंत्रता का आदर होना चाहिए। मेरे भाई-बहन, खिड़कियां बंद मत रखो, खुली रखो। 'आनो भद्रा क्रतवः।' शुभ विचार जहां से भी आये, इस्लाम से आये, सनातन धर्म से आये, इसाई से आये, जैन, बौद्ध, कहीं से भी आये, खिड़कियां खुली रखो।

राशिद किसे सुनाउं गली में तेरी गज़ल,
उनके मकां का कोई दरीचा खुला न था।

हम पंथवालें, प्रांतवालें हो गये! हम जातिवालें, भाषावालें हो गये! हम देशवालें, धर्मवालें हो गये! विश्व-मानुष के एक-एक अंग काट डाले जा रहे हैं! ये विचार विनोबा के है। जातिवालें होना बुरी बात नहीं पर विशेष जातिवालें दूसरे को निम्न समझे तो वो विशुद्ध अधर्म है! इससे बढ़िया साफ़-साफ़ कोई अधर्म नहीं होता! जाति, प्रांत, पंथ, धर्म को लेकर खंड-खंड हो गये हैं हम! पूरी दुनिया में जितनी विविधता है साहब, ये सभी विविधता एक हिन्दुस्तान में है। इसीलिए हिन्दुस्तान एक छोटा-सा विश्व है अपने आपमें।

तो, गांधी है विश्व-मानुष, जवान किसान। गांधी है संवेदना से भरा हुआ विज्ञान। जो चिद् का विलास कर रहे हैं। उन्होंने हर जगह से, हर धर्मों से शुभ-शुभ तत्त्व लिया। हर एक को हृदय से आवकार दिया। और फिर भी कहा, सनातन हिन्दु होने का मुझे गौरव है। ऐसी निर्भीक उद्घोषणा करते हैं। सबको अपना-अपना गौरव होना चाहिए। लेकिन खिड़कियां बंद न करे। और मेरी कथा के श्रोताओं को तो मैं खास प्रार्थना करूं कि रामकथा सुनते हो तो कभी संकीर्ण मत बनना। आप संकीर्ण बनोगे तो मेरी रामकथा को थोड़ा कहीं दाग न लग जाए! मेरे श्रोता संकीर्ण नहीं होना चाहिए। 'एकम् सद्' की हमारी परंपरा है। एक ही सत् बिलग-बिलग एंगल से देखा गया और हमने फिर संकीर्ण कर दिया! हमारी जो दिव्यता थी उसमें हमने बटवारा किया, ये तेरा, ये मेरा! कभी जातिवालें, कभी पंथवालें, कभी भाषावालें, कभी प्रांतवालें! बापू के विचारों को आत्मसात् करनेवाले हमारे पास अभी भी ऐसे महापुरुष हैं जो किसी भी धर्म के हो, अपनी-अपनी उपासना को बरकरार रखते हुए यही काम में लगे रहते हैं। इसीलिए ये कथा है। ऐसा रूप दिया जाता है कि प्रवाही परंपरा प्रवाही रहे, जड़ न हो जाये।

तो, गांधी ने चिद्विलास की चेष्टा की, इसीलिए ये विश्व-मानुष है मेरी समझ में। ये मेरी वंदना है गांधीबापू के प्रति आपकी दुआओं से। आप पर मैं लादता नहीं हूं। गांधी संवेदनायुक्त वैज्ञानिक है। कितने-कितने प्रयोग इस आदमी ने किये! स्वास्थ्य के प्रयोग, शिक्षा के प्रयोग, बेरोजगारी कैसे जाये, ग्रामराज्य का प्रयोग, ग्रामोद्योग का प्रयोग, सर्वोदय का प्रयोग, इस आदमी का समग्र जीवन प्रयोगात्मक रहा। हर प्रयोग से गांधी गुजरे। चौथा, सत्य और अहिंसा। उन्होंने कहा, सत्य ही मेरा धर्म है और सत्य को पाने का मेरा रास्ता है अहिंसा। अहिंसा से ही मैं इस सत्य तक जाता हूं। तो उसको विश्व-मानुष बना देता है सत्य और अहिंसा के तीक्ष्ण व्रत। नवाज देवबंदीसाहब का शे'र है-

मजा देखा मियां सच बोलने का?
जिधर तूं है, उधर कोई नहीं!

सत्य बोलनेवाला अकेला हो जाता है और वो अकेले में मेला होता है। पूरा अस्तित्व उसकी नौकरी में रहता है, किंकर बन जाता है। क्योंकि सत्य है।

कल एक अखबार के साथ साक्षात्कार चल रहा था। वो मुझे पूछते थे, 'बापू, सत्य का निर्वाह हो सकता है?' हमने कहा, ऐसा दावा नहीं कर सकते। बापू तो बापू है। हम कहां हरिश्चंद्र है? लेकिन मेरा मानना ये है कि सत्य जितनी मात्रा में भी हो। विचार का सत्य, उच्चार का सत्य और आचार का भी सत्य। ये भगवान शंकर का त्रिपुंड है। गांधी का सत्य विचार का, उच्चारण का और आचार का है। विश्व का कल्याण करनेवाले शिवतत्त्व का त्रिपुंड है ये। परिवार में, समाज में जितनी मात्रा में अधिकाधिक हो, सत्य में जीया जाय। सत्य बड़ा सरल है। उसको हम जटिल-कुटिल बना देते हैं। लोग कहते हैं, सत्य कटु होता है। मैं इस पक्ष में नहीं हूं। सत्य मधुर होता है।

सत्यं ब्रूयात्, प्रियं ब्रूयात्।

ये हमारी उद्घोषणा है। तो, गांधी का विश्व-मानुष का शिखरी प्रमाण है सत्य और अहिंसा। ग्यारह बस्तु थाली में परोसी हो, सब हम न खा सके लेकिन चार भी ठीक से खा ले तो पेट भर जाता है। वैसे गांधी के तीक्ष्ण व्रतों में से हम गुरुकृपा से, शास्त्रकृपा से, बुझुर्गों की कृपा से जितने भी सत्य के निकट जाए इतनी निर्भयता ज्यादा आएगी। इतनी अभयता जीवन में विशेषरुप में स्थापित होगी।

तो, गांधी को विश्व-मानुष कहना ही होगा। ये सर्वधर्म प्रार्थना रूप में गायी जा रही रामकथा है। शुरू-शुरू में तो मुझे भी थोड़ी तकलीफ़ आयी कि बापू ये सबको एकत्रित क्यों करते हैं? लेकिन जो सही में महापुरुष होते हैं वो तो मौन रहकर दुआ ही देते हैं। प्रेम के सूत्र से ही लोगों को एक किया जा सकता है। ये हमारी बापू की समाधि पर सर्वधर्म प्रार्थना है। राग और द्वेष से मुक्त ये प्रार्थना है। राग और द्वेष का योगसूत्रकार भगवान पतंजलि ने पंच क्लेश के रूप में उल्लेख किया है। राग और द्वेष क्लेश है। वो व्यक्ति को, जीवन को कष्ट देता है। लोग देश छोड़ते हैं, उपदेश छोड़ते हैं, संदेश छोड़ते हैं लेकिन द्वेष नहीं छोडते हैं! गांधी में कहीं द्वेष नहीं था। दुश्मनों के प्रति भी उसकी वो ही समता रही। जो कहना था वो सविनय कहते रहते थे। लेकिन महात्मा जो है वो द्वेष कैसे रख सकते हैं? हम जैसे संसारी को तो-

वेश लीधो वैरागनो, देश रही गयो दूर जी;
उपर वेश आछो बन्यो, मांहि मोह भरपूरजी.
त्याग न टके रे वैराग विना, करीए कोटि उपाय जी.
अंतर ऊंडी ईच्छा रहे, ते केम करीने तजायजी.

मैं मेरे श्रोताओं को, मेरी जात को जोड़ता हुआ प्रार्थना करूं, अल्लाह करे, द्वेष छूटे। बहुत खतरनाक वस्तु है द्वेष! गुरु-शिष्य के बीच में भी खतरा है द्वेष का!

कथा का क्रम। राम-लक्ष्मण महामुनि विश्वामित्र के संग मिथिला में पधारे। सुन्दर सदन में निवास दिया गया। भोजन और विश्राम हुआ। सायंकाल हुआ। मिथिला के किशोरों को रामजी के नैकट्य की अभिलाषा है। और लक्ष्मणजी जीव-जगत के आचार्य है, इसीलिए लक्ष्मणजी ने रामजी से निवेदन किया कि हम नगरदर्शन के बहाने सबको मिले। जब जन-सामान्य विशिष्टों तक पहुंच न पाये तो विशिष्ट लोगों का कर्तव्य है, वो सामने से जाय। गांधी ने यही सिखाया। विनोबाजी भी यही कहते थे कि हमारे यहां हिमालय की चोटी जैसे महापुरुष आये लेकिन छोटे आदमी की गरदन दुःख गई उपर देखते-देखते! न वो नीचे आये, न उनके लिए उपर जाने की सुविधा की गई! आखिरी व्यक्ति, वंचित व्यक्ति, जो दिल में प्यार लेकर खड़ा है लेकिन किसी कारणवश वहां नहीं पहुंच पाता! हमारे यहां अस्पृश्यता आदि इतनी गहन हो गई है कि अभी भी वो मानसिकता बची है!

मेरे गांव का राम मंदिर तलगाजरडा का। रोज दर्शन जाता हूं। मेरे गांव का हरिजन बाहर खड़ा-खड़ा दर्शन कर रहा था। ये बात इसीलिए कर रहा हूं कि शायद ये बात आपके काम आ जाय। मैं तो उनके घर की रोटी खाता हूं। रोज मेरे गांव में मेरा क्रम चलता है। एक लिस्ट बनता है कि इसके बाद किसके घर की रोटी लूंगा मेरे गंगाजल के साथ। मुस्लिम का घर आया बीच में तो उसकी भी रोटी मैं खाता हूं। दलित हो या कोई भी। पूरी दुनिया जानती है। तो, मैंने उस आदमी को मंदिर के अंदर आने को कहा, तो उसने सविनय मना कर दिया। अभी तक उन समाज में मानसिकता गई नहीं! वो निजगृह तक नहीं गया। तबसे मैं भी अंदर नहीं जाता। आखिरी व्यक्ति पूज्य होना चाहिए। 'रामचरित मानस' का ये प्रसंग गांधीविचार को पुष्ट करता है। लक्ष्मणजी के अनुरोध पर रामजी विश्वामित्रजी को नगर देखने को कहते हैं। ईश्वर

भी चाहता है धर्माचार्य इजाजत दे आखिरी व्यक्ति को मिलने की। और सही में धर्माचार्य है उसने कभी भेद किया ही नहीं। तथागत बुद्ध ने दलित बालिका से पानी मांगा। कन्या ने अपनी जाति से वाकिफ़ करवाया। बुद्ध ने कहा, मैंने पानी मांगा है, तेरी जाति नहीं मांगी। फिर से इस देश में बुद्धविचार की स्थापना हो। हर मंदिर के द्वार खुलने चाहिए इन आखरी व्यक्ति के लिए। ये काम है ईश्वर और आखिरी व्यक्ति के बीच में जिस पर लोगों की अपार श्रद्धा है ऐसे धर्माचार्यों की जिम्मेवारी का। मेरी समझ में ये प्रसंग बहुत मर्मवाला है 'मानस' में। ईश्वर चाहता है, मैं मेरे मंदिर से बाहर आऊं। मैं खुद दरवाजा खोलूं।

मंगल मंदिर खोलो, दयामय! मंगल मंदिर खोलो!
जीवनवन अति वेगे वटाव्युं, द्वार ऊभो शिशु भोळो;
- नरसिंहराव दीवेटीआ

परमतत्त्व चाहता है कि जड़तावाला धर्म मुझे रोके नहीं तो मैं आखिरी व्यक्ति तक जाना चाहता हूं। दूसरा अभिप्राय संतों से सुना, राम जगत को बताते हैं कि दुनिया देखो, एंजोय करो। लेकिन मेरी आंखों से दिखाऊंगा। संसार को देखो पर किसी बुद्धपुरुष की दृष्टि से देखो, जो दृष्टि राग-द्वेष से मुक्त है। विश्वामित्र ने प्रसन्नता से आज्ञा दी। किशोरों अपनी रुचि अनुसार नगर दिखाते हैं दोनों भाईओं को। जिसस ने कहा था, 'बालक जैसा जो निखालस होगा वो ही मेरे पिता के घर में प्रवेश पाएगा।' यहां रामजी की निखालसता, पारदर्शिता, आरपारता, ट्रान्सपरन्सी है। घर-घरमें राम जा रहे हैं। सब को प्रसन्न किया। और मिथिला के वयस्क लोग रास्ते पर आ गये, पास नहीं जा पाये, हाथ नहीं पकड़ पाये राम का। केवल देखते हैं। संतों से इसका मैंने अर्थ सुना कि ये बड़ी उम्रवालें लोग थे, वो ज्ञान के प्रतीक है। पंडित लोग परमतत्त्व को केवल देखेगा लेकिन स्पर्श नहीं कर पाते। ओशो ने कभी कहा कि मैं मृत्यु सिखाता हूं। मैं कहूंगा, मैं रोना सिखाता हूं। अंदर की मलिनता निकालनी हो तो सुनो रामकथा। ये अभ्यंतर स्नान है रामकथा। मंदिर को स्वच्छ रखे। शील से राम ने अयोध्या को वश कर ली; रूप से मिथिला वश कर ली; और बल से लंका को वश कर ली। रूप, बल, शील का सुंदर सदुपयोग किया गया। बाद में रामजी ने धनुष्य यज्ञ की भूमि का दर्शन किया। गुरु को सब बातें सुनाई। फिर भोजन, वार्तालाप और फिर विश्राम।

दूसरे दिन सुबह रामजी लक्ष्मण के साथ गुरुजी के लिए पूजा के फूल लेने गये। उसी समय जनक कन्या जानकी अष्टसखियों के साथ गौरी पूजा के लिए बाग में आती है। एक सरोवर है। वहां जगदंबा का मंदिर है। भारत की माताओं का कर्तव्य है कि अपनी क्वारी बेटियों को कभी-कभी गौरीवंदन करना सिखायें। बेटी को वर मिलेगा रघुवर। देश के कुमारों को गुरुजन ये सिखाये कि पूजा के पुष्पों के लिए वाटिका में जाओ। जननी के मार्गदर्शन में कन्या जाए और गुरु के मार्गदर्शन में कुंवर जाए तो ये घटना घट सकती है। एक सखी फूलवारी देखने में पीछे रह गई। यह बड़ी अद्‌भुत बात है कि लक्ष्य था गौरीमंदिर और फूलवारी देखने लगी! इसका मतलब, कभी मंदिर में जाओ तो अगल-बगल में प्रकृति का भी दर्शन करो। ये बाहर जो रोनक हैं वो माँ का ही वैभव है। विश्व के समस्त फूल जगदंबा के बच्चे हैं। तोड़ो मत, चुनो। सखी सयानी है इसीलिए वो प्रकृति में गौरी का दर्शन करती है। इतने में उसने लता के पीछे राम को फूल चुनते देखा। पहचान गई। सोचा, सीयाजू ने दर्शन नहीं किये तो जाके बताउं। जिसने देखा होता है वो ही दिखा सकता है। सखी ने आकर सीताजी को बात बतायी। सबने गौरी की अनुराग से पूजा की और क्षमता के अनुसार वरदान मांगा।

मुझे कल पूछा गया कि भगवान आपको एक चीज़ मांगने को कहे तो आप क्या मांगो? उसे कहूं कि तुझे कुछ जरूरत हो तो बावा से मांग! सच कहूं, मैं मांगू ना। पूछा, क्यों? मैंने कहा, दाता ने देने में कोई कमी नहीं रखी फिर भीख क्यों मांगे? क्या नहीं दिया?

बड़े भाग मानुष तनु पावा।
सुर दुर्लभ सब ग्रंथन्हि गावा।

पृथ्वी समान अभी तो कोई ग्रह नहीं है। पृथ्वी पर जन्म। इनमें भी भारत में जन्म। भारत में भी काठियावाड में जन्म। इनमें भी साधुकुल में जन्म। इनमें भी 'रामचरित मानस' गा रहा हूं। कुछ नहीं चाहिए। क्या कमी रखी है? ये अहंकार नहीं है, ये इनका होने का आनंद है। परमात्मा हमारे परम कल्याण के लिए कुछ दूसरा सोचता हो और हम हमारी मांग अड़ा दे तो फिर उसको बदलना पड़े! भगवान को पुनर्विचारणा करने के लिए बाध्य न करो। वो हमारे परम कल्याण की सोचता होगा। 'यथा योग्यं तथा कुरु।' ईश्वर से मांगना हो तो 'निज अनुरूप' और 'सुभगवर', अच्छा वरदान मांगो। इतने में सखी आकर जानकीजी को राम के बारे में बताते हुए ले चली। आगे सखी है, इसका मतलब जिसे परमतत्त्व को रखा है ऐसे गुरु को आगे रखना। यहां सब सूत्र है। और गुरु वो है जिन्होंने पाया है। सीयाजू के हाथ के कंगन, करधनी और नूपुर की आवाज़ गुंज रही है। हाथ का कंगन समर्पण का प्रतीक है। पग के नूपुर सदाचरण का प्रतीक है। और कटि का करधनी संयम का प्रतीक है। साधक का संयम, साधक का समर्पण, साधक का सदाचरण ये तीन आभूषण ऐसे हैं कि ईश्वर को भी हमारी ओर देखने के लिए मजबूर कर दे।

रामजी ने कहा, सीता का अलौकिक रूप देखकर मेरा सहज पवित्र मन क्षुभित हुआ है। भक्ति के रूप के आगे भगवान क्षुभित हो जाय। ये तो होना ही चाहिए। लक्ष्मणजी ने रामजी का फूल से शृंगार किया। तब जानकीजी सखी के संग आ पहुंची। रामदर्शन हुआ। जानकीजी धरती की कन्या है। मर्यादा से देखा। आंखों के रास्ते हृदय में छबी रखकर सीताजी ने आंखें मूंद ली। रामजी ने अपने अंत:करण के केन्वास पर जानकी का चित्र अंकित कर दिया। तुलसी इन चार आंखों को मिलवाते नहीं। ये मर्यादा दिखायी। सखी ने जानकीजी को भावावेश में देखा तो जगाया। गुरु भी जब शिष्य कभी इतना भावावेश में आ जाए तो उसको समय पर सचेत कर दे। ये गुरु का कर्तव्य है। जानकी सावधान हो गई और सब लौटे। पक्षी, झरनें, पौधें के बहाने पलट कर राम को देख लेती है। राम को केवल मंदिर में न देखते हुए, एक पौधें के बहाने भी देख लो। एक बहते झरने के बहाने भी देख लो। पक्षी के टहुके में भी देख लो। ये सब गजब के सूत्रपात गोस्वामीजी ने किये! मंदिर की महिमा तो है ही। सब सखियों के साथ जानकीजी ने मंदिर में आकर गौरी स्तुति की। मेरे देश की क्वारी बहन-बेटियों को सीखने जैसी ये स्तुति है। प्रलोभन नहीं देता हूं पर अच्छा आदमी मिलेगा।

जय जय गिरिबरराज किसोरी।
जय महेस मुख चंद चकोरी।।

भवानी की मूर्ति प्रेम के वश हो कर हिलने लगी, मुस्कुराने लगी, बोली और गले की माला कंठ से ऐसे ही गिरी। विनय और प्रेम हो तो मूर्ति हिल सकती है, बोल सकती है। मुझे कोई आश्चर्य नहीं। बुद्धि मना करेगी। कुछ बातें गुणातीत श्रद्धा जगत की होती है। ये संभव है, न हो तो आश्चर्य। पूरा छन्द भवानी ने गाया कि तुम्हारे मन में जो सांवरा बस गया है वो तुम्हें मिलेगा। मंगल सगुन हुए जानकीजी को। घर लौटे। माँ को सब बातें बतायी। यहां पुष्प लेकर रामजी लौटे। पुष्प से गुरु ने पूजा की। सायंकाल की संध्या की। वो रात बिती। दूसरा दिन धनुष्ययज्ञ का। सब राजें-महाराजें आ गये हैं। विश्वामित्र को निमंत्रित करते हैं, दोनों राजकुमारों को लेकर आप आईये। धनुषभंग का प्रसंग कल लेंगे।

> विनोबा ने विस्तार से जो बात कही, भगवान वेद ने शब्द दिया है, वहीं से उठाया और कहा कि विश्व में एक 'विश्व-मानुष' होना चाहिए। हम कितने छोटे मानुष हैं! कितने-कितने विभागों में बटे हुए हैं! जरा भी अतिशयोक्ति किए बिना मेरी अंत:करणीय प्रवृत्ति जो मुझे साथ देती है, उसके अनुसार कहूं तो विश्ववंद्य गांधीबापू विश्व-मानुष है, अवश्य। विनोबाजी ने ये भी कहा कि गोस्वामी तुलसीदासजी विश्व-मानुष है। और विनोबाजी ने कहा, महात्मा महम्मद पयगम्बरसाहब विश्व-मानुष है। और यही विनोबाजी ने अपने प्राज्ञ विचारों से ये भी कहा कि जगद्‌गुरु शंकराचार्य भी विश्व-मानुष है।

मानस-राजघाट : ८

जीवन के प्रत्येक घाट को सुंदर करने के लिए साधुचरितता अनिवार्य है

तुलसीजी ने 'मानस' के मानस-सरोवर के घाट बनाये और इन चार घाटों का नाम तुलसी ने दिया नहीं है; संतों ने दिया कि कैलासवाला घाट, जहां शिव पार्वती को कथा सुनाते हैं वो ज्ञानघाट। याज्ञवल्क्य भरद्वाजजी को सुनाते हैं वो कर्मघाट। बाबा भुशुंडि गरुड को कथा सुनाते हैं वो है उपासनाघाट और स्वयं गोस्वामीजी जिस घाट पर बैठे हैं वो दीनता का घाट। तुलसीदासजी ने स्पष्ट रूप में तीन घाटों का नाम दिया है। जिस नाम को लेकर हम इस कथा में मिलकर बातचीत कर रहे हैं वो राजघाट। 'राजघाट सब बिधि सुंदर बर।' दूसरा तुलसी ने नाम दिया है, रामघाट।

रामघाट कहँ कीन्ह प्रनामू ।
भा मनु मगनु मिले जनु रामू ।।

आनंद की बात ये है कि तुलसी जो-जो नाम देते हैं, वहां संतत्व जुड़ा हुआ है। और जहां संतत्व जुड़ा हुआ है उस घाट की महिमा गानी ही पड़ेगी। यहां राजघाट की चर्चा हो रही है उसका मतलब ये नहीं कि कोई राजकीय चर्चा हो रही है। यद्यपि तुलसीजी ने जो रामधर्म को अंकित किया है, उसकी चर्चा जरूर कूटस्थ-तटस्थ बुद्धि से हो रही है। यहां राजकीय चर्चा को तो अवकाश नहीं है, राजधर्म की चर्चा जरूर है। तो ये राजघाट है इसीलिए महिमावंत है, क्योंकि यहां एक जागृत संत की चेतना पड़ी है। जहां संत जुड़ जाता है, वो घाट 'सब बिधि सुंदर' हो जाता है। सब प्रकार से किसी वस्तु की सुंदरता करीब-करीब असंभव है। हम हमारे जीवन का अभ्यास करे, विश्व में कोई आदमी 'सब बिधि' सुखी हो सकता है? हमारे पास धनसंपत्ति हो, साधनों का सुख हो, साधना का भी सुख हो, पुत्र-परिवार-पत्नी, परंपरा सब ठीक हो, पर कहीं तबियत का सुख नहीं होता। रामकथा सब प्रकार से सुंदर है। ये घटना सब प्रकार से तब सुंदर है जहां संतत्व हो, साधुता हो। और जहां संतत्व जुड़ता है वहां अभेद होता है।

तो, तुलसी ने राजघाट को नाम दिया है, उसके साथ संतत्व जुड़ा हुआ है। और रामघाट है वहां एक संत स्नान करता है, वो है भरत। भरतजी जब अवध को लेकर चित्रकूट की ओर चले तब रामघाट पर स्नान करते हैं। तब

तुलसी कहते हैं कि रामघाट पर स्नान करने से भरत को ऐसा महसूस हुआ कि मुझे राम मिले हैं। वहां संत का स्मरण है। तीसरा एक घाट है, जो गोस्वामीजी के बारे में बहुत प्रसिद्ध है।

चित्रकूट के घाट पर भई संतन की भीर ।
तुलसीदास चंदन घिसे तिलक लेत रघुबीर ।।

यहां तो संतों की भीड़ लगी हुई है। हमारे जीवन के घाट को भी कोई संत छुए। राष्ट्र को जरूरत है साधुचरित व्यक्तिओं की। वेश के साधु हम भले न हो, ये हमारी औकात नहीं कि हम सबकुछ त्याग कर वन में रहे, लेकिन वृत्ति के साधु तो हम गांधी की तरह बन सकते हैं। और महिमा है वृत्ति के साधु बनने की। जीवन के प्रत्येक घाट को यदि सुंदर करने हैं, तो साधुचरितता अनिवार्य है। भारत धर्मगुरु बने ये सब चाहते हैं, हम भी चाहते हैं। लेकिन भारत धर्मगुरु बने, न बने उसकी मुझे चिंता नहीं, भारत गौरव ले कि भारत सद्गुरु है। पूरे विश्व का ये सद्गुरु है। भारत ऐसे रत्नों को बार-बार देता रहा कि जिसमें साधुता का दर्शन पूरे विश्व ने किया।

एक प्रश्न है कि 'संत की परिभाषा क्या?' मैं तो गांधी को देखकर संत की परिभाषा करूं। मुझे यहां कोई ओर ग्रंथ देखना नहीं है, गांधी-ग्रंथ देखना है। गांधी अपनेआप में एक ग्रंथ है। 'मानस' में तो संत लक्षण की भरमार है।

षट बिकार जित अनघ अकामा ।
अचल अकिंचन सुचि सुखधामा ।।
अमित बोध अनीह मितभोगी ।
सत्यसार कबि कोबिद जोगी ।।

नारदजी ने पंपासरोवर पर रामजी से कहा कि मुझे कुछ संतों के लक्षण बताइए। बहुत बड़ा प्रकरण है। रामराज्य के बाद भाईयों के साथ रामजी उपवन को गये तब भरतजी ने रामजी से पूछा कि प्रभु, मुझे कोई संत के लक्षण कहो, वहां भी राम ने संतों के लक्षण की चर्चा की है। लेकिन नारदजी के सामने संत-लक्षण की चर्चा की तब कहा कि हे नारद, सुनो, जिस लक्षणों के कारण मैं उनके वश हो जाता हूं, मैं पराधीन हो जाता हूं। शास्त्रों में तो बहुत व्याख्यायें है। उसके कुछ लक्षण निचोड़ के रूप में कहता रहता हूं। कोट-पेन्ट में हो, हाफ़-पेन्ट में हो। हमारे भावनगर के मानदादा भट्ट-गांधी विचार समर्थक-जिंदगीभर हाफ़ पेन्ट में घूमे। कोई गणवेश यहां अपेक्षित नहीं, यद्यपि गणवेश की महिमा है।

मैं अपनी बानी में कहूं तो संत का एक लक्षण मुझे ये दिखाता है कि जिसको महंत बनने की कभी भी इच्छा न हो वो संत। बनना पड़े, वो बात ओर हैं। वो इसलिए कि कोई ऐसी व्यक्ति ना आ जाए पद पर कि विशुद्ध परंपरा को बिगाड़ दे। यद्यपि शंकराचार्यजी ने 'संत' और 'महंत' शब्द का बहुत पवित्र अर्थ में उपयोग किया है। दूसरा, संत वो है जिसका कोई अंत न हो। 'गीता' में भगवान कहते हैं, 'न मे भक्त: प्रणश्यति।' मेरे भक्त का कभी नाश नहीं होता। संतत्व का अंत नहीं होता। भगवान स्वयं बोले, संतों के लक्षणों का कोई अंत नहीं। राम के शब्दो में, शेष और सरस्वती भी जिसके गुणों का अंत ना पा सके।

पांचीकाना होय, होय नहीं कदी संतना ढगला.
संत सहुने मुक्ति वहेंचे, नहीं वाघां, नहीं डगलां.
दुर्लभ ए दरवेश के जेनां काळ साचवे पगलां.
- रमेश पारेख

साधु वो जो कंठी न डाले, कंठ पकड़ ले। और आकंठ अमृत पिलाए; निरंतर अमृत का दान करे। प्रत्येक व्यक्ति को अपने धर्म की स्वतंत्रता होनी चाहिए। थोपना नहीं चाहिए।

गांधीबापू के पास स्वित्झरलेन्ड से एक पादरी आया। बोला, मैं धर्म प्रचार हेतु सभी जगह घूमता हूं। आपकी हर जगह प्रतिष्ठा है। सब लोग आपको जानते हैं। और इसीलिए आपकी प्रतिष्ठा है क्योंकि आप ख्रिस्ती है। गांधीजी ने कहा, मैं ख्रिस्ती नहीं हूं, मैं सनातनी हूं। कहा, आप काम तो ख्रिस्ती का कर रहे हैं! बापू बोले, शुभ तो हरेक धर्म में होता है। और मेरे हिन्दु धर्म में अधिकाधि शुभतत्त्व है। मुझे मेरे धर्म में इतनी अच्छाईयां प्राप्त है और जिस-जिस धर्म ने शुभतत्त्व समान हो, तो इसका अर्थ ये नहीं कि उसका पक्ष लेकर हम अपना धर्म उस पर स्थापित करने की कोशिश करे! ये आदमी बहुत स्पष्ट है। हां, शुरू में उनको इच्छा हुई थी कि मैं इसाई में जाऊं पर बचा लिया श्रीमद् राजचंद्र ने। गांधी बिलकुल

सर्वधर्म समभाव का संत है। गांधी स्पष्ट कहते हैं कि मुझे सनातनी होने का गौरव है। और आज गांधी के कदम पर चलनेवालें डरते हैं कि कहीं हम सनातनी हिन्दु हैं तो हमारी बिनसांप्रदायिकता वो हो जाएगी! डरे हुए लोग क्या राष्ट्र कल्याण कर सकते हैं? कभी-कभी छोटे लोग बड़े पद पर बैठ जाते हैं!

तीसरा, संत वो है जो तंत न करे, जिद्द न करे! हां, बापू सत्य के आग्रही जरूर। इसीलिए विनोबाजी कहते थे कि सत्य का आग्रह कभी बहुत ज्यादा हो जाय, तो जरा वो भी है। सत्याग्रही के साथ हम सत्यग्राही हो। हम जिसमें भी जितना सत्य पड़ा हो, हम ग्रहण करें! मैं इतने सालों से 'रामायण' लेके घूम रहा हूं। मैंने ये अनुभव किया है कि मेरे देश में कई लोग सत्य के पूजारी है, सत्य बोलते भी है, लेकिन दूसरे के सत्य को कुबूल करने की तैयारी नहीं है! वहां उनको अपने अभिमान को चोट लगती है! सत्य, प्रेम, करुणा जहां से भी मिले, ले लो। और कितनी भी किंमत पर लेना पड़े, ले लो। बापू का सत्याग्रह आत्मशुद्धि के लिए था। आक्षेप हुए भी कि गांधी के तीव्र सत्याग्रह से सबको झुकना पड़ता था। इसी मुद्दे पर कई बुद्धिमानों की टिप्पणियां है।

युवान भाई-बहन, अपना सत्य विनम्रता से पेश करना कि हमको ये लगता है, बाकी जिद्द मत करना। 'मम सत्यम्।' युद्ध का पर्याय हो जाता है। मेरे पास मोमबत्ती है, वो मेरा सत्य। आपके पास दीपक है, वो आपका सत्य। पर उपर सूरज है, वो हम सबका सत्य। ऐसे स्वीकार से बापू ने जो रामराज्य की कल्पना की थी वो आ सकता है क्रमशः। तो कोई किसी के साथ तंत न करे, सिद्धांतों के बारे में, व्रतों के बारे में। छोड़ो, तुम्हारा सत्य यदि ठीक है, बात खतम! और रोज जो नया जीवनवाला हो, स्फूर्त हो, ताजा-तरोजा हो, जो निरंतर जीवंत हो, उसको मैं संत कहता हूं। विनोबा ने तो कह दिया था कि रोज मैं नया हूंगा, मैं भरोसे का आदमी नहीं हूं।

मुझे पूछा गया कि आप रोज ये पुराना लेकर गा रहे हैं? मैंने कहा, मेरे लिए 'मानस' रोज नया है। ये अर्थवाद नहीं है। सही में, 'मानस' रोज नया अर्थ प्रदान करता है। आप भी रोज कथा क्यों सुनते हैं? लेकिन ये प्रमाण है, रामकथा रोज नूनत है। गायक एक ही चीज गाने में उब जाएगा। पर चौपाईयां रोज गाने में ऐसा क्यों नहीं होता? क्यों 'मानस' की पंक्तियां आंखें भर देती है? क्यों 'मानस' की पंक्तियां ओर मुखर होने की जिद्द करती है? बहुत बोलनेवाला इन पंक्तियों को लेकर अकेला चुप होकर कमरे में रोता क्यों है? क्या है इसमें? इसीलिए गांधीबापू ने कहा था, 'रामचरित मानस' जैसा उपकारक ग्रंथ मैंने नहीं देखा है। ये रोज नूनत है। तो, संत वो है जो नित-नूतन है, जीवंत है। एक शब्द 'साधु' भी आया है और 'भगत' शब्द भी आया। तीनों शब्दों को पर्याय माना। साधु माने क्या? गांधी को देखकर बोलूं तो जिसका जीवन सादा वो साधु। साधु में बंदगी और सादगी एक साथ-साथ चलती है अखंड। चार वस्तु की सादगी। एक, अपने आहार सादा हो। दो, जिसकी वाणी सादी हो। तीन, वेश सादा हो। चार, व्यवहार सादा हो।

ये सब हम कर सकते हैं। मेरा काम दीक्षा देना नहीं है, दिशा दिखाना है। दीक्षा देने में विधि होती है। दिशा दिखाने में कोई विधि नहीं है। हां, पूछनेवाले को विश्वास होना चाहिए कि वो मारग दिखाएगा, वो पथभ्रष्ट नहीं होने देगा। रामनाम जपने की कोई विधि नहीं, केवल विश्वास।

मंत्र जाप मम दृढ बिस्वासा ।
पंचम भजन सो बेद प्रकासा ।।

मनुबेन गांधी ने एक बार मुझे कहा था कि आपने कभी गांधीबापू की आंख में आंसू देखे? गांधी को आप रोते हुए कम देखोगे। वैसे तो वो करुणा का दरिया है। मनुबेन गांधी से बातें हुई करीब पचास साल पहले। कुछ बातें अंकित हो जानी चाहिए थी। तो मनुबेन गांधी बता रही थी कि एक दिन बापू सेवाग्राम की कुटिया में अकेले बैठे थे। ये दृश्य ही जरा डरानेवाला था! आप गांधी को अकेले में रोते हुए देखो तो क्या हालत होगी? हां, बा के देहांत के समय भी बापू रोये थे। बापू की एक पद-यात्रा में एक कुष्ठ रोगी था। बापू तेज गति से चलते थे। वो कुष्ठ रोगी का पैर तो कुछ दूर जाते ही लहूलुहान हो गया और वो वहीं बैठ गया। और सब पहुंच गये। भोजन की तैयारी हुई। विगतें पाकर बापू भोजन छोड़ के दौड़े। बापू ने अपने खदर का उपवस्त्र फाड़ा और उसके पैर पर पट्टियां बांधी। वो रो पड़ा! गांधी की यह थी

देवपूजा, यह थी उसकी नारायणवंदना। वो आदमी देखता रहा! कैसा था ये विश्वमानुष!

तो किसी कामवश मनुबेन बापू की कुटिया में गई। और ये तो फ़कीर था, साहब! जो उसकी बैठने की रीत थी। सिर झुकाये हुए आंखों से आंसू बहाते थे! मनुबेन की हिम्मत नहीं हुई पूछने की। मनुबेन बा के पास गई। बा मनुबेन के संग बापू की कुटिया आते हैं। बापू को पता न चला। उस समय राष्ट्र में बहुत कश्मकश चल रही थी। साथ में रहनेवालों का विरोध, गैरसमझ! बापू थोड़े व्यथित थे। तो बा ने बापू से पूछा, आप तो बड़े ही पक्के मनोबलवाले हैं। क्या हुआ, कारण बताइये। बापू ने कहा कि आजकी ये डामाडोल परिस्थिति में मुझे आज एक भय लगा कि इस स्थिति के कारण मेरी राम-नाम की श्रद्धा कहीं हिल तो नहीं जाएगी?

मंत्र जाप मम दृढ बिस्वासा ।

मंत्र में बिधि की जरूरत नहीं, विश्वास की जरूरत होती है। मेरा यदि रामनाम में विश्वास ड़िगा तो देश को आज़ादी मिलने में देर हो जाएगी। एक भरोसा! इसमें बिधि नहीं होती। सूरदास कहते हैं -

दृढ इन चरनन केरो भरोसो, दृढ इन चरनन केरो,
श्री वल्लभ नख चन्द्र छटा बिन, सब जग मांहे अंधेरो ...

मुझे बराबर स्मरण है, मैंने सिक्किम की कथा से कहना शुरू किया है, मौका मिलते ही ये बात दोहराता रहता हूं। खास करके मैं युवान भाई-बहनों को कहना चाहता हूं, हमारी तरह माला लेकर जप करने की सीख नहीं दूंगा। क्योंकि आपको पढ़ाई करनी है, दफ़्तर संभालना है, संसार में आनंद करना है। खूब करो, लेकिन रात को जब आपको ऐसा लगे कि अब कोई काम बाकी नहीं है और फिर नींद न आती हो, तो मेरी यही प्रार्थना है, आप जिसको मानते हो, उसको याद करो। उनके नाम का स्मरण पांच मिनट करो। ज्यादा न हो तो चिंता नहीं। हरिनाम, बाप! युवानों से ओर कोई मांग नहीं। तुम पूजा-पाठ, तिलक करो ऐसी कोई मांग नहीं है। पांच मिनट हरिनाम, बाप! सुबह कैसी होगी, देखना! मेरा तो हर वक्त यही मिशन है कि कोई भी नाम, आप जो चाहो। 'माँ, माँ।' करो। 'अल्लाह अल्लाह' करो। 'जिसस जिसस' करो। क्या फ़र्क पड़ता है? सबका स्वागत है, पर मेरे देश का युवान थोड़ा भजन करे। भोजन स्वाद से करो, भजन डबल स्वाद से करो। पांच मिनट हरिनाम लेने से कभी ऐसी लगन लग जाय और आंखों से आंसू निकल जाय, तो फसल पक जाएगी यारों! बिना हरिभजन समाजसेवा अहंकारी हो सकती है, सावधान! चलो, आप हरिनाम न लो, लेकिन ऐसी आदत तो थोड़ी डालो कि जपो ना लेकिन सोते समय उस परम की स्मृति आये। मुझे इन्टरव्यू में पूछा गया कि आप इतने व्यस्त रहते हैं, समय कब निकालते हैं? मैंने कहा, रात तो मेरी है न? पूछा गया कि कब सोते हो? मैंने कहा, नींद आये तब सो जाता हूं। रात साधक की होती है, दिन श्रमिकों के होते हैं।

युवान भाई-बहनों, आपको परम की स्मृति केवल दो मिनट हो जाय, आप स्फूर्त हो जाओगे। अर्जुन कहता है, 'स्मृतिर्लब्धा।' जैसे स्मृति आयी, सब मुसीबतें टल गई। तो, साधु वो जिसका जीवन सादा हो। जीवन सादा, आहार सादा, वेश सादा, बोल सादे, व्यवहार सादा। जिसका जीवन समाज के सामने हो। गांधीजी ने कहा, मेरा जीवन ही मेरा संदेश। कोई दंभ नहीं। जैसा है वैसा। मध्यकालीन संतों ने अपनी बातों को विश्व के सामने खोल-खोलकर रख दी।

मो सम कौन कुटिल खल कामी।।

●

एवा रे अमे एवा रे, तमे कहो छो वळी तेवा रे,
भक्ति करतां भ्रष्ट थईशुं, तो करशुं दामोदरनी सेवा रे.

जिसका जीवन साबून हो वो साधु। खुद घिस जाये, कपड़े को मैलमुक्त कर दे।

मारे साबू रे थावुं ने धोवुं जीवन,
मानवीना धोवा मेल रे...

काम विश्वविकास के लिए जरूरी है। क्रोध; दूसरें को सावधान करने के लिए सम्यक् क्रोध करे, क्षम्य है। भविष्य का सोच के आदमी थोड़ा संग्रह करे, क्षम्य है। पद मिलने पर आदमी थोड़ा मद करे तो, क्षम्य है। ये छहो षट्विकार है। साधु वो है जो तीन नहीं करता। किसीकी इर्ष्या नहीं करता। किसी की निंदा नहीं करता। किसी का

द्वेष नहीं करता। ये तीनों की जरूरत है जिंदगी में। काम की जरूरत है, काम की जरूरत न होती तो शंकर काम को जलाने के बाद रति को वरदान देकर काम को मनसीज क्यों बनाते हैं? क्योंकि दुनिया बिना काम ठप हो जाएगी। क्रोध सावधानी दिलाने के लिए जरूरी है। बापू तो अपरिग्रह में माने, लेकिन हम जैसे संसारी लोग, थोड़ा परिवार के व्यवहार के लिए रखते हैं। गांधी का भरोसा तो गज़ब है! मैं बहुत गहराई से सोचता रहता हूं कि समाज की ईर्ष्या करने की जरूरत है? एक-दूसरे की निंदा करने की जरूरत है? क्या उसके बिना जीवन नहीं चलता? द्वेष की जरूरत है? साधु वो है, तीनों में से एक भी नहीं करता। जगत ज्यादा खूबसूरत हो जाएगा, ये तीनों न हो तो। परीक्षा करना साधु की। इनमें यह तीन नहीं है ना तो फिर उनके पैर पकड़ो। और पकड़ने के बाद कभी छोड़ना मत। नरसिंह मेहता का भजन गांधी ने विश्व-भजन क्यों बना दिया?

सकल लोकमां सहुने वंदे
निंदा न करे केनी रे ...

वेद ने कहा है-

सप्तमर्यादाः कवयस्ततक्षुः।

कहते हैं, प्रत्येक व्यक्ति को सात मर्यादा का ध्यान रखना चाहिए। वेद ने खोलकर नहीं बताया। सायनाचार्य ने उसका भाष्य किया। सात मर्यादा कौन? इसमें पहला लिखा है, मद्यपान नहीं करना। द्यूत नहीं खेलना। कभी भी नारी का अपमान न करना। मारामारी न करना। निंदा न करना। ये जीवन साधना है। इसमें कोई प्राणायाम नहीं है। सीधे-सादे सूत्र हैं। ये सातों मर्यादा मैं जब देखता हूं तब देखता हूं कि ये सातों मर्यादा 'मानस' में स्थापित है।

विनोबाजी का अर्थ, दम माने घर। प्रत्येक घर में सात रत्न होने चाहिए। एक, आंगनवाला घर मिलना चाहिए। जहां बच्चे खेल सके; गो बंधी हो। सुबह-शाम गाय की घंटड़ी बजती हो। ऐसा हो तो तुम्हें आरती करने की जरूरत नहीं। दूसरा, प्रत्येक परिवार को अच्छी औषधि प्राप्त हो। वेदों ने हमारे जीवन के लिए कितना चिंतन किया! सबको ऐसी संजीवनी मिले कि मृतक भाव छूट जाय। आदमी ओर जीवंत हो। गांधीबापू ने निसर्ग-उपचार की पद्धति चलायी। ये रत्न है भारत का। तीसरा, सबको अच्छा लिबास मिले। साल में दो-तीन जोड़ खदर के कपड़ें पहने। गांधीजी ने कहा था, खादी वस्त्र नहीं, विचार है। भोजन कम मिले तो चलेगा, मर्यादा के वस्त्र लिए जरूरी है। चौथा, सबको अच्छी शिक्षा प्राप्त हो। सब गांधी के प्रोग्राम है। वेदों से ऊतरी है गंगा! पूरी नयी तालीम ले आये गांधीबापू।

मैं अनुभव के साथ थोड़ा बोल सकता हूं, क्योंकि मैंने इस पर थोड़ा काम किया है। मैं ऐसी गांधीवादी संस्था में पढ़ा हूं। अब तो कोई श्रम करने भी नहीं देते और आदत भी चली गई, लेकिन मैंने स्वयं श्रम बहुत किया है। श्रम जरूरी है। मेरे हाथ में कुछ हो तो सब ले लेते हैं कि बापू को श्रम न हो। साधुओं को इतनी सुविधा भी मत दो। साधु बहुत किमती है विश्व के लिए। उसको हद से ज्यादा सुविधा नहीं देनी चाहिए! इससे भी गहरी बात, साधु को कभी साधन बनाना नहीं चाहिए। फिर गांधी का वो मंत्र जैसा शब्द कहूं, 'साधन-शुद्धि।' पांचवां, कार्य करने के लिए सबके पास अच्छे ओज़ार होने चाहिए। किसान के पास अच्छा हल, बैल-गाड़ा; कुंभकार के पास अच्छा चाक होना चाहिए। चर्मकार के पास उनके अच्छे साधन होने चाहिए। छठ्ठा, वेद कहता है, प्रत्येक को अच्छा मनोरंजन मिलना चाहिए। निषेध नहीं है कि तुम एन्जोय न करो। लेकिन अच्छा होना चाहिए। चाहे गाओ, झूमो, नाचो, देखो। आज-कल इतना कचरा हमारे दिमाग में डाला जा रहा है! देखो, अगर घर में पंखा तेज चल रहा हो और आपको ठंड लगे तो आप उसकी स्वीच जरा कम कर देते हो, वैसे आप जब कुछ देखते हो और लगे कि ये मेरा दिमाग बिगाड़ेगा, स्वीच जरा ओफ कर दो ना! बच्चे भी आज-कल हाथ में फोन लेकर कुछ न कुछ करते ही रहते हैं! सात साल के बच्चों को हमने जवान कर दिया! टी.वी. देख-देखकर आज-कल के सात साल के बच्चें सत्तर साल के हो जाते हैं मानसिकता के स्तर पर! कहीं तो कंट्रोल करना पड़ेगा।

आज एक भाई ने लिखा, मैंने तीन दिन कथा सुनी और शराब छूट गई। मुझे कथा में मेरे माँ-बाप ले आये थे। मैं उनको छोड़ने और लेने आता था। एक दिन मुझे थोड़ा बैठने को कहा। मैं दो-तीन दिन बैठा और पता नहीं क्या हुआ, मुझे अब शराब में वो स्वाद न रहा! दबाव से कुछ नहीं होगा, प्यार और महोब्बत से क्रांति होगी। अच्छा मनोरंजन मिलना चाहिए। मैं तो युवानों से ये भी कहता हूं कि अच्छी फिल्म हो, अच्छा क्लासिकल नृत्य हो, संगीत हो, डायलोग हो, जो जीवन-विकास में सहायक बने तो ऐसे मनोरंजन से कोई आपत्ति नहीं है मेरी दृष्टि में। नाटक जरूर देखो, लेकिन ऐसे देखो कि बाद में तुम्हारे जीवन पर भी कोई नाटक लिखे। अभी भी मुझे कभी-कभी होता है कि मैं कोई एक फिलम देखूं! परमात्मा रसरूप है। 'रसौ वै सः।' लेकिन ध्यान रखना, सम्यक्ता को भूलना मत। गायन-नर्तन तो हमारी संस्कृति है। कृष्ण नाचा है। गोपियां नाची है। मीरां नाची है। शंकर नाचा, मर्यादा नहीं टूटी! राम भी नाचे।

नाचहिं निज प्रतिबिंब निहारी।

रिहर्सल रामावतार में हो गया था, कृष्णावतार में तो मंचन किया गया।

कल दिल्ही में 'जश्नेबहार' मुशायरा हुआ। अठारह साल से हो रहा है। इसमें इन्डो-पाक, केनेडा, अरब, पाकिस्तान से शायर थे और पाकिस्तान में रहे हमारे राजदूत महोदय भी। इस बहाने मैत्री दृढ़ हो। और वसीमसाहब तो बार-बार बोले कि सियासत ने बहुत कर लिया, कोई परिणाम नहीं आया! हमने पहले से मनोरथ कर रखा है कि हमको पाकिस्तान 'मानस' लेकर जाना है। जब अल्लाह मौका दे! मुझे पत्रकारभाई ने सूझाव दिया था, बहुत अच्छा था कि बापू, आप ७८६ नंबर की कथा पाकिस्तान में करना। मैंने पकड़ लिया। सत्य जहां से मिले, ले लो। मुझे पाकिस्तान बुलाये तो वहां जाऊं या तो करबला जाऊं। अथवा तो मेरे देश के मुस्लिमभाईलोग इकठ्ठे होकर मेरी कथा करे तो मैं नंगे पैर जाऊं! करो साहस! मैं आपको मजबूर नहीं करूंगा कि आप आरती ऊतारो। तुम्हारे धर्म के जो नियम हो, अक्षुण्ण रहे। आप आरती ऊतारने न आओ। आप पोथी पूजा में न आओ। कम से कम मिलकर आयोजन करो। एक सेतु हो जाय। राजकोट में तैयारी हुई थी। एक दरगाह पर मैं बोल रहा था। सभी मुस्लिम बिरादर, मौलाना आदि बैठे थे। मेरे प्रति सब स्नेहादर रखते थे। उन्होंने कहा, कथा दो। मैंने कहा, लो। गेंद उछाली है, केच कर लो! लेकिन किसी कारणवश नहीं हो पाया, क्योंकि अपने-अपने विचार होते हैं। लेकिन मैं तैयार हूं।

माणावदर के पास मैं दरगाह पर गया था। वहां एक घटना घटी। मैं आपको बताऊं कि प्रेम और मोहब्बत क्या कर सकता है? मैंने दरगाह पर जाकर सलाम किया। पहले तो मेरे पास डेईट लेने आये कि उत्सव है तो बापू, आप आओ। मैंने कहा, जरूर आऊंगा। मैंने कहा, आप भोजन ले लो। वो बोले, भोजन बाद में, पहले हम तलगाजरडा के राममंदिर में दर्शन कर आये। ये बनी घटना। मैं तो छः महिने बाद गया मस्जिद में। इससे पहले वो राम-मंदिर में दर्शन करके गये। तो, मैंने उनके आयोजन में जाकर दर्शन किया, तकरीर थी। फिर मौलाना ने मुझे जो तस्वीर दिखाई, उसमें ये मौलाना सावन महिने में शिव के शिवालय में अभिषेक कर रहे थे! प्यार और मोहब्बत क्या नहीं कर सकता, साहब!

गांधी ने सबको जोड़ा था, कुछ हम भी कदम उठाये। और जोड़े वो ही धर्म, तोड़े वो धर्म नहीं। वो तो शुद्ध अधर्म है। वसीमसाहब ने वहां भी जिक्र किया। मेरे गांव का एक मुस्लिम, नाथालाल। उसका इस्लाम नाम दूसरा था। कुछ लोग हज पढ़ने जा रहे थे। मैंने नाथाभाई

> राष्ट्र को जरूरत है साधुचरित व्यक्तिओं की। वेश के साधु हम भले न हो, ये हमारी औकात नहीं कि हम सबकुछ त्याग कर वन में रहे, लेकिन वृत्ति के साधु तो हम गांधी की तरह बन सकते हैं। और महिमा है वृत्ति के साधु बनने की। जीवन के प्रत्येक घाट को यदि सुंदर करने हैं, तो साधुचरितता अनिवार्य है। भारत धर्मगुरु बने ये सब चाहते हैं, हम भी चाहते हैं। लेकिन भारत धर्मगुरु बने, न बने उसकी मुझे चिंता नहीं, भारत गौरव ले कि भारत सद्गुरु है। पूरे विश्व का ये सद्गुरु है। भारत ऐसे रत्नों को बार-बार देता रहा कि जिसमें साधुता का दर्शन पूरे विश्व ने किया।

को पूछा, आपको नहीं जाना? उसकी आंख में आंसू आ गये! बापू, इच्छा तो बहुत है, लेकिन औकात नहीं! मैंने कहा, थोड़ी व्यवस्था हम कर दे तो? बोले, बहुत ही अच्छा होगा। डेईट तो चली गई थी। क्रम के मुताबिक लंबा लिस्ट था। दो-तीन साल लग जाय। मैंने पूछा, स्पेशियल जाता हो। वो बोले, पूछकर बताऊंगा। कुछ ज्यादा चार्ज था। मैंने कहा, आप जाओ, पति-पत्नी दोनों जाओ। फिर सब मुस्लिम भाई मेरे पास आये। कहा, बापू, हम उसको बिदा देना चाहते हैं, मौलाना भी आये। बापू, आपने उसको हज भेजा, ऐसा भाव प्रकट कर रहे थे। तब मैंने कहा, मैं नहीं, मेरा हनुमान उसको रहेमान के पास भेज रहा है। ये मेरे शब्द थे। जब हनुमान रहेमान के पास भेजेगा और रहेमान हनुमान के पास भेजेगा तब अखंड भारत हो जाएगा। कहीं भेदभाव नहीं, लेकिन उसके लिए साहस जरूरी है।

विश्व में आज सेतुबंध की बहुत जरूरत है। लोग टूटे जा रहे हैं। मैं मेरी बात करूं तो ठीक नहीं। हमारे महुवा में बहुत बड़ी तकरीर थी। मौलाना थे। उन लोगों ने कहा, उनका आसन ऊंचा रखना पड़ेगा। मैंने तो कहा, मैं तो नीचे भी बैठ सकता हूं। मेरी बारी आये तब में खड़ा-खड़ा बोलूं। वो बोले, मोरारिबापू, आप यदि हमें राममंदिर में नमाज़ पढ़ने दे तो एकता हो सकती है। जब मेरी बोलने की बारी आई तब मैंने कहा कि मौलाना, वैसे तो रात को हमारे ठाकुर शयन करते हैं, लेकिन तलगाजरडा मेरा गांव है, रामजी मंदिर हमारा है, राम भी मेरा है। मैं जब जगाना चाहूं, सुलाना चाहूं, ये मेरी कही मानता है। और जो ईश्वर हमारा कहा न करे वो काहे का ईश्वर? मैंने कहा, तकरीर पूरी हो जाय, सब आईये, मैं मंदिर खुलवा दूंगा और आप सब नमाज अदा कीजिए। मैंने आगे कहा, मौलाना, मैं एक बिनती करूं? पहला काम आप कीजिए। पर कल जब नमाज़ का समय हो तब हम झालर और नगाड़े लेकर आयें? वहां हम 'श्रीराम जय राम जय जय राम' करायें? उसका अभी तक मुझे जवाब नहीं मिला! बात आते-आते रुक जाती है, क्योंकि हम साहस नहीं कर पाते हैं! लेकिन ये करना पड़ेगा, जब भी हो। इसमें किसीका दोष नहीं। गांधीबापू ऐसे विश्वमानुष थे, संत थे, साबरमती के संत थे।

तो बापू की स्मृति में हम सबकी सर्वधर्म समभाव की प्रार्थना है। कथा का दौर। शंकर वैश्विक अहंकार है और शिव का धनुष अहंकार का प्रतीक है। आदमी अहंकार तोड़ दे तो भक्तिरूपी जानकी उनके गले में जयमाला पहना दे। इतने राजा थे। कोई तोड़ नहीं पाता था! समस्या ये थी कि हर कोई सोचता था कि तोडूं तो मैं ही तोडूं, अगर मैं न तोड़ पाऊं तो किसीसे भी न टूटे ऐसी प्रार्थना करूं। राष्ट्र में भी कुछ ऐसे हालात हैं कि समस्या का जवाब हम ही दे। अगर हमारे से न हो तो किसी से होने न दे! शांति रूपी जानकी राष्ट्र को मिल सकती है, अगर हमारे व्यक्तिगत अहंकार को तोड़ा जाए! भगवान राम ने क्षण के मध्य भाग में धनुष तोड़ा। परशुराम आये। भगवान के स्वभाव और प्रभाव को जानकर वो वहां से अवकाश को प्राप्त कर गये। अयोध्या से बारात आई और ब्रह्मा ने राम-जानकी के ब्याह की तिथि निकाली। मागशर शुक्ल पंचमी, गोरजबेला निश्चित हुई। दुल्हे की सवारी। परिछन हुआ। यहां अष्ट सखियां जानकीजी को दुल्हन के शृंगार सजाकर मंडप में लाती है। कन्यादान हुआ वेदमंत्रों के साथ। पाणिग्रहण हुआ। देवताओं ने पुष्पवृष्टि की। फिर तो जनकजी की एक ओर भाई कुशकेतु की दो कन्याओं को दुल्हन के वेश में सूचना अनुसार लायी गई और तीनों भाईयों से ब्याही गई। चारों की मंगल भांवरी हुई। विदाय की बेला आई। बेटी की बिदा जनकजी को व्यथित कर गई। महाराज दशरथ अयोध्या पहुंचे। माताओं ने आनंद से आरती की। धीरे-धीरे मेहमान बिदा हुए। विश्वामित्रजी को बिदा करने राजपरिवार उपस्थित है।

नाथ सकल संपदा तुम्हारी ।
मैं सेवकु समेत सुत नारी ।।

'हे मुनीश्वर, ये सब संपदा आपकी है। मैं तो मेरे पुत्र, रानियां और पुत्रवधूओं के साथ आपका सेवकमात्र हूं। दाता, तूने बहुत दिया। राजा हूं, मांग नहीं सकता। फिर भी एक वस्तु मांग रहा हूं। आप तपस्वी है, आपकी भजन साधना में विक्षेप न करे, लेकिन आपकी साधना में अवकाश हो और आपको हमारी याद आये तो कभी हमारे द्वार आना। हमें दर्शन देते रहना ताकि हमारे संस्कार बने रहे।' साधु की फ़कीरी देखो! जैसे पैदल आये, वैसे चल दिये! 'बालकांड' पूरा किया।

राजघाट निर्माण और निर्वाण का घाट है

बाप, 'मानस-राजघाट', जिसको केन्द्रीय बिंदु बनाके हम इन दिनों में बापू की समाधि की वाङ्मयी, श्रवणीय परिक्रमा कर रहे हैं। आज हम विराम की ओर जा रहे हैं तब इतना ही कहूं कि गांधीबापू को जो नरसिंह मेहता का भजन प्रिय रहा, गांधीबापू ने इस पद को, इस भजन को वैश्विक रूप दे दिया, उसमें पंक्ति है -

वैष्णवजन तो तेने कहीए जे पीड पराई जाणे रे ...

'वैष्णव' यहां सांप्रदायिक शब्द नहीं है। वैष्णव माने कोई भी सज्जन, साधुचरित, जिन्होंने कुछ जाना है, विशेष जानने की ओर अग्रसर है। 'वैष्णव' शब्द यहां बहुत आसमां की तरह व्यापक अर्थ लिए हुए है। विष्णु से भी व्यापक है वैष्णव। यद्यपि विष्णु व्यापक ही है। लेकिन वैष्णव शायद इससे भी ज्यादा व्यापक है। तो ये 'पीड पराई जाणे रे'; गांधीजी ने कौन ऐसी पराई पीर थी जिसको जाना? क्या वो खुद की कुछ पीड़ा थी? यहां तो वो ही शब्द 'पीड़ पराई' है। इस पंक्ति को पसंद करने के पीछे शायद गांधीबापू की मानसिकता ये रही होगी कि मानो एक ऊंचाई प्राप्त करने के बाद उसकी खुद की कोई पीड़ नहीं बची होगी और दूसरों की पीड़ा ही खुद की बन गई होगी। क्योंकि पीड़ा की महसूसी जब खुद की हो तभी होती है। परिवार की पीड़ा, समाज की पीड़ा, राष्ट्र की पीड़ा, समुचे विश्व की पीड़ा बापू ने- गांधीबापू ने अपनी पीड़ा के रूप में महसूस किया। गांधी ने देखी थी पूरी दुनिया में धर्म की पीड़ा। कभी भगवान योगेश्वर ने देखी थी ये पीड़ा। इसलिए उसने कहा था -

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।

कभी भारत से लेकर, एक छोटे-से परिवार से लेकर, पूरे देश को लेकर, गांधी ने पीड़ा महसूस की थी अर्थ की कि विश्व में इतनी गरीबी क्यों? गांधी बापू शुरूआत के जीवन में, प्रारंभ में, खुद अपने जीवन संदेश में लिखते हैं, काम की पीड़ा भी महसूस की। और गांधी ने भारत को स्वतंत्रता मिले, भारत को मुक्ति मिले और ये मुक्ति का विचार पूरे विश्व तक पहुंचे उसके लिए गांधी की मुक्ति की भी पीड़ा थी। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष।

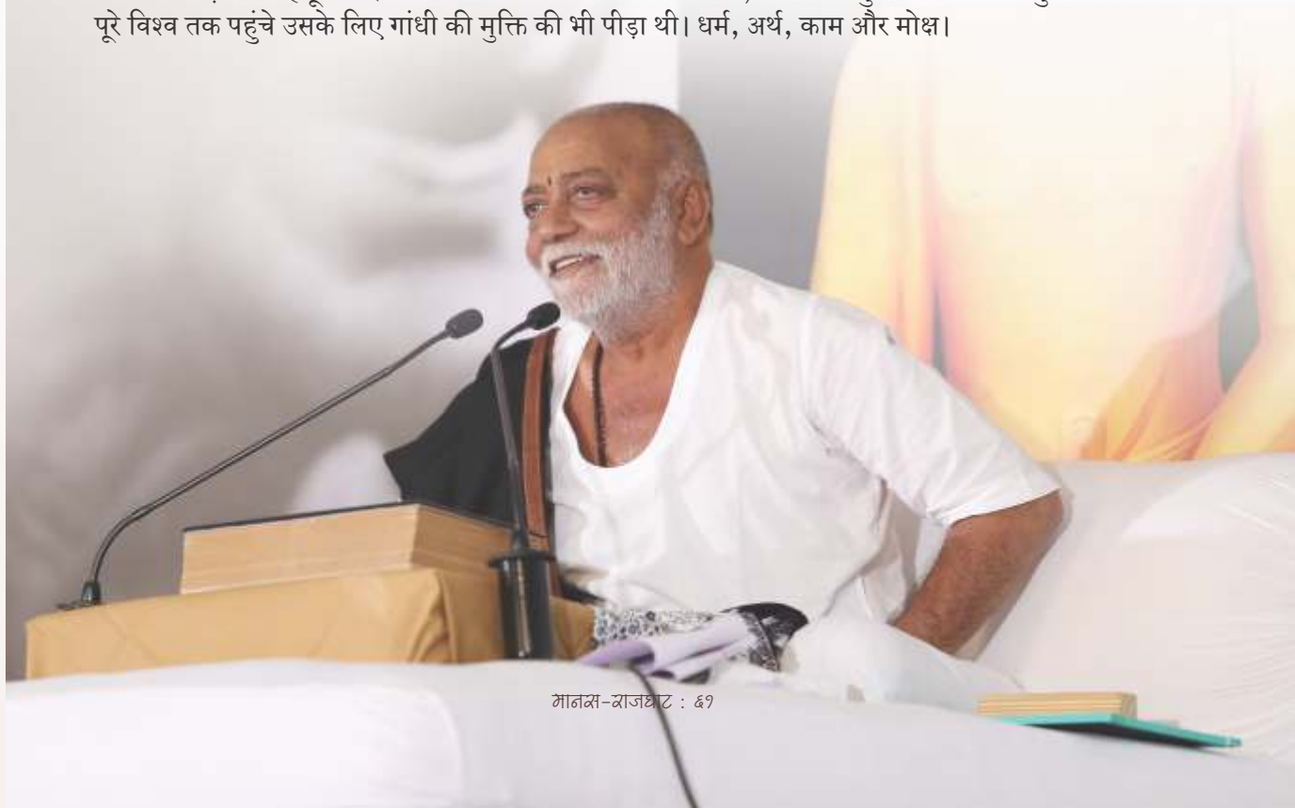

मैं इस घाट को दो रूप में देखता हूं, राजघाट स्थित गांधीबापू की समाधि को। एक तो ये बापू का निर्वाणघाट है। और दूसरा पर्टिक्यूलर ये जगह निर्माणघाट भी है कि किस तरह राष्ट्र का पृन: निर्माण किया जाय? और घाट की चर्चा तीन ही जगह होनी चाहिए ऐसा तुलसी मानते हैं। और हम जानते भी हैं, हम सबकी चर्चा तीन जगह होती है अक्सर-हाट, बाट, घाट। तो, ये राजघाट तो निर्माण और निर्वाण का घाट है। यहां क्यों न राम की चर्चा हो? और यहां राम की चर्चा होनी चाहिए, हराम की होनी ही नहीं चाहिए! राम मानी सत्य, राम मानी प्रेम, राम मानी करुणा, मेरी दृष्टि में। इसलिए हम नव दिन से यहां इकठ्ठे हैं। गांधी ने धर्म की पीड़ा जानी थी कि ये धर्मावलंबी लोग क्या-क्या कर रहे हैं? कोई किसी को भय, प्रलोभन देकर कन्वर्ट कर रहे हैं! कोई कट्टरता के कारण कत्ल कर रहे हैं! कोई अंधश्रद्धा, परचा, चमत्कार में भोले-भाले लोगों को छल रहे हैं! कई लोग धर्म को धंधा बना बैठे हैं! अभी-अभी हमारे परमस्नेही रजनीशभैया जो अपना दिल का वक्तव्य प्रदान कर रहे थे, उसमें कहा आपने कि गांधी अपने सनातनधर्म में पूरी निष्ठा रखते थे ये बात और है, लेकिन गांधी कोई हठाग्रह से किसी धर्म से आबद्ध नहीं थे। इसलिए तो सर्वधर्म समभाव की बात आई। हम इस समाधि स्थान पर सर्वधर्म प्रार्थना कर रहे हैं। गांधी कोई विशेष पंथ से आबद्ध नहीं। मैं आज सुबह ही कबीर साहब का एक पद पढ़ रहा था, मेरे स्वभाव के अनुकूल मैंने पन्ना फाड़ लिया। आप विश्व-मानुष के लक्षण मान लीजिए कबीर के पद में -

ना मैं धर्मी, ना ही अधर्मी, ना मैं जति, ना कामी हूं।
ना मैं कहता, ना मैं सुनता, ना मैं सेवक, स्वामी हूं।
ना मैं बंधा, ना मैं मुक्ता, ना मैं विरत, ना रंगी हूं।
ना काहू से न्यारा हुआ, ना काहू के संगी हूं।

गांधीबापू की विचारधारा से बिलकुल ये प्रवाह मिलता-जुलता है। गांधी ने सब धर्मों की पीड़ जानी, कहीं बंधे न। धर्म का एक अर्थ है स्वभाव। मैं व्यासपीठ से कई बार बोला हूं ,जो हम संसारी लोगों के अनुभव है, हमारी पीड़ा के कुछ केन्द्र होते हैं। एक तो हमारी पीड़ा केन्द्र होता है कि हम दूसरों का प्रभाव सह नहीं सकते। ये हमारी पीड़ा का केन्द्र है। दूसरा हमारी पीड़ा का केन्द्र है अभाव। दूसरों के पास कुछ ज्यादा है, हमारे पास कुछ चीज़ों का अभाव है। ये हमारी पीड़ा का केन्द्र बन जाता है। तीसरा हमारी पीड़ा का कारण है कि हम किसी के प्रति भी दुर्भाव नहीं रखते फिर भी वों हमसे दुर्भाव रखते हैं। इसीलिए तीसरी पीड़ा का केन्द्र दुर्भाव बन जाता है। ये सब पीड़ाओं के केन्द्र को तलाशे जा सकते हैं, उसका इलाज खोजा जा सकता है। लेकिन सबसे बड़ी पीड़ा का केन्द्र है हमारा स्वभाव। स्वभाव की जो पीड़ा है, ये धर्म की पीड़ा है। धर्म स्वभाव है। स्वधर्म का अर्थ है स्वभाव। गांधी ने जन-जन के स्वभाव की पीड़ा जानी थी। मेरे देश में गरीब की पीड़ा क्या है, मेरे देश में धनवान की पीड़ा क्या है, मेरे देश में बंधे की पीड़ा क्या है, मेरे देश में जो कुछ प्रकार की मुक्ति पा गये उसकी पीड़ा क्या है? प्रत्येक के स्वभाव की पीड़ा बापू ने जानी। मुझे लगता है, शायद ये पीड़ा जानने के लिए पूरा राष्ट्र भ्रमण किया। देश की गरीबी देखी। धर्म के नाम पर देश में चल रही अस्पृश्यता, मैल उठाना! अत्याचार कम नहीं हुए है! मानो पशु से भी बेहतर धर्म के नाम पर हमने लोगों को दूर रखा! गांधी ने ये पीड़ जानी, ये पीड़ा समझी। तो गांधीबापू ने धर्म की पीड़ा महसूस की। और मुझे बड़ी खुशी है कि अब हमारे सभी महात्मा कम से कम जो राष्ट्रीय और वैश्विक विचार के है, जो समन्वयवादी है, वो सभी महात्मा, विरक्त हो या तो आसक्त हो, संसार में सब इसी काम में लगे हैं, जो भारत का मूल स्वभाव था।

अर्थ की पीड़ा बापू ने जानी। हमारे पास संपन्नता है। जितना खर्च करना चाहे, कम से कम अब कर सकते हैं। ऐसी कोई बड़ी मुश्किल नहीं है। बाकी अर्थ की पीड़ा बहुत रही। हां, एक स्वभाव हो जाय कि कितना ही पैसा हो तो भी संतोष नहीं, उसकी बात ओर है! बीबी और पड़ौशी का, पड़ौशी राष्ट्र का एक ही स्वभाव है कि बीबी को कितने भी पैसे दो तो भी उसको तसल्ली नहीं होती! और उनको कितने भी सबूत दो तो भी तसल्ली नहीं होती! जाते-जाते कुछ कहते-कहते जाउं! एक बार अर्थ की समस्या आई कविवर रवीन्द्रनाथ टागोर को। दोनों बिलग-बिलग, एक कवि और ये समाज सेवी। एक बिल्कुल सीधा-सादा और ये रस का आदमी टागोर। लेकिन दोनों के बीच में पत्रव्यवहार बहुत चला। टागोर की पचहत्तर साल की उम्र हो गई। उतने

काल पहले की ये बात और शांतिनिकेतन में धन का अभाव। पैसे इकठ्ठे करने के लिए इतना बड़ा महान कवि, उसको मुश्किल हो रही थी! आखिर में टागोर ने बापू को सेवाग्राम पत्र लिखा। और टागोर जानते हैं, ये फ़कीर है! गांधी तो अकिंचन है, फ़कीर है। लेकिन एक पत्र लिखा है, 'बापू, कुछ आर्थिक मुश्किल है। पचहत्तर साल की आयु में मेरे स्वभाव के प्रतिकूल है, पर कहीं संस्था बंद हो जाय। आप किसी को संकेत कर सकते हैं? बापू के पास पत्र आया। बापू ने पढ़ा। छोटा-सा जवाब दिया। टागोर का अस्सीवां जनमदिन था। टागोर ने प्रणाम भेजा और गांधी ने एक वाक्य में जवाब दिया कि गुरुदेव, चार बीसी पूरी हुई है। पांच बीसी पूरी करो। तुरंत टागोर ने लिखा, चार बीसी तक पहुंचने में थक गया हूं! पांच बीसी तो असहनीय हो जाएगी! आशीर्वाद दो।' पत्र आया है बापू के पास। 'पीड़ पराई जाणे रे।' बापू छोटे से छोटा आदमी से वरिष्ठ तक की पीड़ा जानते थे। पत्र लिखवाया, 'गुरुदेव, आप जानते हैं, मैं फ़कीर हूं, अकिंचन हूं। मेरे पास तो कुछ नहीं, लेकिन मेरा व्रत बना रहे और शांतिनिकेतन के प्रति अपार आस्था है। आपका मिशन भी चलता रहे। थोड़ा समय लगेगा लेकिन जितना हो, सेवा होगी।' कहते हैं साहब, एक महिने के बाद टागोर बहुत चिंतित थे और एक पत्र आया। उस समय में इन में से साठ हजार रूपये का ड्राफ्ट निकला! श्वेत दाढ़ीवाले गुरुदेव के नेत्र में नमी आ गई!

गांधी अर्थपीड़ा समझते थे, धर्मपीड़ा समझते थे और गांधी काम पीड़ा भी समझते थे। कामना की पीड़ा समझते थे। कुछ मिलने के बाद ज्यादा से ज्यादा अपेक्षा बढ़े वो काम की पीड़ा भी गांधी महसूस करते थे। मेरी समझ में गांधी जगत के धर्म की पीड़ा समझ रहे हैं। अर्थ की पीड़ा समझ रहे हैं। गांधी इन्सानों की कामनाओं की वृद्धि की भी पीड़ा समझ रहे हैं। और सबसे बड़ी यदि इसी क्रम में गांधी की पीड़ा थी मुक्ति की। विश्व मुक्ति की सांस ले। जगत पराधीन न हो। सब स्वतंत्र हो।

तो बाप, गांधी को धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की पीड़ा महसूस होती थी। मोक्ष मानी यहां मुक्ति। इसलिए शायद नरसिंह मेहता के इस पद को गांधी ने आत्मसात् किया, 'पीड़ पराई जाणे रे।' बरोडा में एकबार तो मैंने कहा कि ये 'वैष्णवजन' ये हम जैसों के लिए वैष्णवों की 'भगवद्गीता' है। उसमें अठारह सूत्र है। मेरी समझ में 'वैष्णवजन तो तेने कहीए, जे पीड पराई जाणे रे ...' इस पद में अठारह अध्याय की वैष्णवी 'गीता' है। भरचक प्रयास रहा गांधीबापू का इस पद को नस-नस में उतारने का।

गांधीजी के बारे में भारत में चार बात सब जानते हैं। करीब-करीब, गांधी के चश्में के बारे में सब जानते हैं। एक बहुत सीधे-सादे चश्में पहनते थे। उस समय ओर प्रकार के चश्में नहीं रहे होंगे? ब्रिटन में पढ़े हैं। साउथ अफ्रिका में वकालत की है। अच्छे घर से आये थे तो ओर चश्में भी पहन सकते थे। लेकिन उसने जो चश्में पहने है, बिलकुल प्रसिद्ध है चश्में उनके। दूसरा, गांधी की घड़ी, वो कमर पर लटकाकर रखते थे। तीसरा, गांधी की चप्पल। चौथा, गांधी की लाठी। गांधी के चश्में जो हैं, वो निकटवालों को भी देखते थे, दूरवालों को भी देखते थे। इस निकट और दूर, दोनों पर एक समान दृष्टि के थे। कहां से लिया? नरसिंह के पद से। 'समदृष्टि ने तृष्णा त्यागी।' समदर्शन गांधी का। गांधी ने बहुत निकट से सूक्ष्म से सूक्ष्म बातों को जानी और दूर का देखनेवाला भी ये आदमी रहा। उस पर बहुत कुछ कहा जा सकता है। मेरी व्यासपीठ को ऐसा लगता है कि चश्मां ये समदृष्टि का प्रतीक है। 'गीता' के स्वाध्याय करनेवाले ब्रह्म को 'सम' कहकर ब्रह्म के गुणगान गानेवाले हम समाज में कितनी समदृष्टि रख पाएं? व्यवस्था हो ये बात ओर है, विषमता न हो। ब्रह्म को सम कहा है। ब्रह्म सम है। तो मेरी समझ में गांधी के चश्में, वो समता का दृष्टिकोण लिए हुए है।

गांधी की घड़ी; देश-काल के अनुसार निर्णय करने की सम्यक् बुद्धि। घड़ी है काल का प्रतीक; समय का प्रतीक। काल कैसा चल रहा है, उसका हमें भान होना चाहिए। ये घड़ी उसका प्रतीक है। घड़ी भी तो अच्छी से अच्छी रख सकते थे गांधीबापू। उस समय में अच्छी से अच्छी वो रख सकते थे। गांधी की वकालत की प्रेक्टिस देखो साहब! पाउन्ड में, डोलर में गिनो। ये आदमी वकालत में बहुत कमाता था। अच्छी घड़ी रख सकते हैं, लेकिन घड़ी भी गांधी कटि भाग पर लटकाते थे। हां, ठीक है, हाथ में नहीं लगाना चाहते थे। कपड़े में कोई जेब नहीं थी कि जेब में रख सके, इसलिए वो

लटकाते थे। लेकिन कटिभाग पर घड़ी का रखना मेरी समझ में संयम का बोध है। तुम्हारा अच्छा काल हो तो भी संयम रखो और तुम्हारा बुरा काल हो तो भी धैर्य रखो। कटि भाग सदैव याद रखो। हम तो केवल कटि को एक अंग समझते हैं! कटि सबसे बड़ा संयम का संदेश है। कटिभाग धैर्य का भी प्रतीक है और शौर्य का भी प्रतीक है। ये सम्यक् धैर्य, सम्यक् समझ का प्रतीक है मेरी समझ में। मैं उसका इस तरह उपयोग करूं। मैं इस तरह उसको समझने की कोशिश करूं। आप दुआ दो ज्यादा तो ऐसा जीने की कोशिश करूं। परवाज़साहब, मैं आपकी कविता लेकर आया हूं। आपने कविता बापू पर लिखी ये तो आपका आदर है, लेकिन विश्ववंद्य गांधीबापू को भी ये ज्यादा छू सकती है।

शब भर रहा खयाल में तकिया फ़कीर का।
दिन भर सुनाऊंगा तुम्हें किस्सा फ़कीर का।

सरहद के गांधी खान अब्दुलगफारखान साहब ने कहा था कि मैं एक दिन रात को सोया नहीं! गांधीबापू की सेवाग्राम की कुटिया को रात भर देखता रहा! और फिर मुझे लगा कि कुटिया के दर्शन करते-करते मैंने रात में जो पाया वो अब दिन में सबको सुनाऊंगा। परवाज़साहब कहां से ले आये, कहां से ये ऊतरा! बहुत प्यारा शे'र है साहब, सुनिएगा। देश की परिस्थिति, अकिंचनों की परिस्थिति, अभावग्रस्तों की परिस्थिति, आखिरी व्यक्ति की परिस्थिति, फ़िर भी बंदगी में डूबे हुए किसी फ़कीर की परिस्थिति। क्या कहते हैं शायर!

आएगा लेके बाप दवा भूख की जरूर।
बैठा है ईन्तज़ार में बच्चा फ़कीर का।

उस समय देश के गरीब बच्चों को भी लगा होगा कि राष्ट्रपिता हमारे लिए भूख की दवा लाएगा और दुनिया से भूख को समाप्त कर देगा, गरीबी को मिटा देगा। क्यों हम उसको 'राष्ट्रपिता' कहते हैं?

बाप, गांधीबापू पर कुछ ऐसी बात खरी उतरती है। यदि हम उस दृष्टिकोण से देखें तो गांधी की घड़ी है, अच्छे समय में सम्यक् समझ, बूरे समय में सम्यक् धैर्य; ये घड़ी है। ये समय पहचानने के संकेत है। तो मेरा घाट, मेरा ये प्रेमघाट, मेरी ये व्यासपीठ गांधी की घड़ी को इस रूप में देखती है। गांधी के चप्पल उस राह पर चलने की सीख देता है कि चलना है तो सत्य और

अहिंसा की डगर पे ही चलो। सत्य और अहिंसा की राह पे कदम रखे जाय, चप्पल उसका संकेत करता है। और लाठी; गुणवंतभाई के शब्दो में कहूं तो ये लाठी किसी पे प्रहार करने के लिए नहीं और कोई प्रहार करे तो रोकने के लिए भी नहीं, ये लाठी एक बहुत बड़ा संदेश है। ये दंड समाज के सामने किसी की निंदा किए बिना दंडवत् करने का संकेत है। 'सकल लोकमां सहुने वंदे।' जब लाठी की तरह प्रणाम करता है तो उसको दंडवत् कहते हैं। गांधी की लाठी सबको वंदन करने का प्रतीक है, प्रहार करने का प्रतीक नहीं है।

तो बाप, बापू को, उसके राजघाट को केन्द्र में रखकर मैं आप से कुछ बातें कर रहा था। 'बालकांड' कल पूरा हुआ। 'अयोध्याकांड' का मंगलाचरण करते हुए तुलसी पहले मंत्र में शिव का स्मरण करते हैं। संतों से मैंने सुना है कि 'बालकांड' ये है बालक अवस्था और 'अयोध्याकांड' है युवावस्था। और युवानी में ही शिव आराधना बहुत जरूरी है क्योंकि शिव त्रिभुवन के गुरु है। युवानी में किसी बुद्धपुरुष का आश्रय करना। उत्तरावस्था में चार चांद लग जाएंगे! उत्तरावस्था में रामराज्य स्थापित हो जाएगा। 'अयोध्याकांड' में बहुत समृद्धि का वर्णन है। और उसके बाद रामवनवास की कथा आती है। क्योंकि अतिशय सुख, दु:ख को जन्म देता है। इतनी समृद्धि उसमें से आया रामवनवास! राम पर अति प्रीत रखनेवाली कैकेयी रामवनवास का वरदान मांग लेती है! युवान भाई-बहन, फ़िर एक बार कहूं कि युवानी के समय में बहुत ध्यान रखना। तुलसी ने लिखा है कि नीच लोगों के संग से बुद्धि खत्म हो जाती है। भरत जैसे एक परम प्रेमी को जन्म देनेवाली कैकेयी, उसकी बुद्धि भी कुसंग यदि परिवर्तित कर सकता है तो हमारे जैसों को बहुत सावधान रहना पड़ेगा। राम-लक्ष्मण-जानकी पूरी अवध को रोते हुए रखकर निकल पड़े। अयोध्या शोकनगरी बन गई। यहां सुमंत का रथ शृंगबेरपुर पहुंचा। एक रात्रिमुकाम प्रभु वहां करते हैं। अवध से शृंगबेरपुर तक रथयात्रा, फ़िर नौकायात्रा; अब भगवान की पदयात्रा शुरू होती है। गुहराज साथ में है। भगवान भरद्वाजऋषि के आश्रम में आए। भरद्वाजजी से मारग पूछा और भगवान ने आगे यात्रा की। ऐसे पदयात्रा करते हुए तीनों वाल्मीकि के आश्रम में आते हैं। वाल्मीकिजी ने चौदह आध्यात्मिक स्थान दिखायें हैं। भगवान राम-लक्ष्मण-जानकी चित्रकूट आ गये; छा गये।

सुमंतजी अयोध्या लौटते हैं। दशरथजी मानो निर्णय कर चुके हैं कि अब जीवन का कोई अर्थ नहीं है। दशरथजी छ: बार राममंत्र का उच्चारण करते हैं और 'राउ गयउ सुरधाम।' जब से अयोध्या में अनर्थ की सृष्टि हुई, भरत रात को अपने ननीहाल में सो नहीं पाते हैं। इस स्थिति में वो दूत आ चुके हैं। भरत अवध पहुंचते हैं। पूरी अयोध्या शोकातुर है। भरतजी सीधे कैकेयी के भवन जाते हैं कैकेयी कहती है, 'बेटा, मैंने तेरे लिए राज मांगा और राम के लिए तापस बेश और उदासीन मानसिकता लेकर चौदह साल के लिए वनवास मांगा।' वज्राघात हुआ! फ़िर भरतजी बहुत बोले हैं। वशिष्ठ आये। सब को समझाया। एक के बाद एक क्रिया हुई। सब ने भरत को समझाया कि पिता जिसको राज दे वो उत्तराधिकारी। भरतजी ने कहा, मैं पद का आदमी नहीं हूं, मैं पादुका का आदमी हूं। मैं सत्ता का आदमी नहीं हूं, मैं सत् का उपासक हूं। मैं ये नहीं कर सकता। मैं राज नहीं कुबूल कर सकता। हां, एक बार प्रभु के पास जाकर मैं मेरी बात रखूं फ़िर मेरा ठाकुर जो आज्ञा करेगा वो करेंगे।

पूरी अवध को लेकर भरत निकल पड़े। सब को लिए साथ में यात्रा आरंभ हुई। भरत की चित्रकूट की यात्रा में चार विघ्न आते हैं। और सत्य की यात्रावालों को ये चार विघ्नों को पार करना होता है। पहला विघ्न है सत्य की यात्रा में आप कोई व्रत धारण करे तो परिस्थिति ऐसी आती है कि आप को व्रत तोड़ने की वजह आ जाये। भरत ने सोचा कि मेरा व्रत इतने लोगों को कष्ट देता हो तो कुछ समय के लिए रथ में बैठ गये। अपने व्रत को प्रगट किया तो दुनिया बाधा बनती है। उसके बाद आगे जाते हैं तो भरद्वाजजी ने कसौटी की। सत्य के यात्री को रास्ते में रिद्धि-सिद्धियां आती है उसको भी पार करना होता है। उसके बाद यात्रा आगे बढ़ी तो देवता विघ्न करने आये। उपर से भी विघ्न आये कि भरत और राम की भेंट न हो! ये तीसरे विघ्न से भी भरत पार हो गये। आख़िर में जब चित्रकूट पहुंचते हैं तो लक्ष्मणजी भरतजी का विरोध कर देते हैं। मेरा मानना ऐसा है कि चित्रकूट बिलकुल जब निकट आ जाता है, सत्य बिलकुल जब करीब आ जाता है तब परिवार के निजी लोग भी विघ्न

बनते हैं! मैं आप को इतना ही कहकर आगे बढ़ूं कि आप यदि प्रेम के मारग पर है, सत्य के मारग पर है, तो जब निकट से निकट व्यक्ति का भी विरोध बढ़े तो समझना कि अब चित्रकूट दूर नहीं है। आख़िर में राम और भरत की भेंट होती है। पूरा प्रेमनगर बस गया चित्रकूट में। इतने में ख़बर आई जनकराज पूरी जनकपुरी को लेकर आ रहे हैं। सब मिले। दिन बीतते चले। आख़िर में भरत ने कह दिया-

जेहि बिधि प्रभु प्रसन्न मन होई।
करुना सागर कीजिअ सोई।।

हे ठाकुर, जिस प्रकार से, जिस बिधि से आप का मन प्रसन्न रहे ऐसा आप करिए। हमारी चिंता मत करिए। निर्णय हुआ। भरत लौट जाये। राम बन में रहे। भगवान ने कृपा करके पादुका अर्पण की है। सब बिदा हो गये। रामकथा प्रेमकथा है। सब चुपचाप अवध पहुंचते हैं। और भरतजी पादुका को शासन सोंपकर मानो उसका अंतरंग अनुशासन प्राप्त करते हुए राज्य संचालन करने में लग गये। यहीं से गांधी ने उठाया था ट्रस्टीशीप का सिद्धांत। फ़िर भरत वशिष्ठजी के पास गये। गुरुदेव के चरण पकड़कर कहने लगे, 'भगवान, एक प्रार्थना है कि आप की आज्ञा हो तो मैं अवध के बाहर नंदीग्राम में कुटियां बनाकर के रहूं। क्योंकि मेरा हरि यदि बन में है तो मैं महल में नहीं जी पाउंगा। मैं राज्य का कारभार चलाउंगा, मेरी जिम्मेवारी पूरी अदा करूंगा। लेकिन मैं तपस्वी बनकर रहूंगा।' देश को तपस्वी राजा की जरूरत है। राजा अनुष्ठानी होना चाहिए। राष्ट्र का संचालन एक अनुष्ठान हो जाना चाहिए। वशिष्ठजी ने भरत को कहा कि 'भरत, मैं आज आप को कहता हूं कि मैं धर्माचार्य हूं लेकिन हम जो कहते हैं वो धर्म की व्याख्याएं हैं। और आप जो निर्णय कर रहे हैं वो धर्मसार है। कौशल्या का दिल दुभाकर बन में मत जाना। यदि कौशल्या का दिल दुभ गया तो तेरी रामभक्ति कभी सफल नहीं होगी। वो यदि हां कहे तो जाओ, नंदीग्राम में तपस्वी बनकर रहो।' भरत माँ कौशल्या के पास आये हैं, 'माँ, एक बात कहनी है। मैं समझता हूं कि मेरा जन्म तुम सब को दु:ख देने के लिए ही हुआ है! माँ, मैं वल्कल पहनकर तापस बेश में उदासीन होकर नंदीग्राम में कुटियां बनाकर रहूं? मैं रोज आउंगा तेरे पास। राज्य संचालन करूंगा, लेकिन मैं वहां रहकर तप करूं?' माँ समझ गई कि मेरे लिए ये असह्य है लेकिन सोचा कि संत की ईच्छा के अनुकूल यदि मैं उसकी हाँ में हाँ नहीं कहूंगी तो भरत चौदह साल जी नहीं पायेगा। कहा, 'तपस्वी बनकर रहना चाहता है तो जाओ बाप!' प्रेम तो सामनेवाले के सुख की ही चिंता करता है। अपने बारे में सोचने की बुद्धि प्रेम में नहीं हो सकती।

'अरण्यकांड' में भगवान राम अत्रि के आश्रम में गये। वहीं से यात्रा करते-करते कुंभजऋषि से विचार विमर्श किया असूरों के निर्वाण का। पंचवटी में जानकी के साथ नरलीला की योजना बनी। और यहां शूर्पणखा आई, दंडित हुई। शूर्पणखा ने जाकर रावण को उकसाया। और रावण पंचवटी की कुटिया को शून्य देखकर यति वेश में आकर जानकी का अपहरण करता है। रावण जानकी को लेकर लंका आया, अशोकवाटिका में अशोकवृक्ष के नीचे जानकी को यत्न करके वहां रखा। राम-लक्ष्मण मृगबध बे बाद लौटे और जानकी विहीन कुटिया देखकर ललित नरलीला करते हुए राम रोए। सीता की खोज शुरू होती है। जटायु ने सब कथा कही। भगवान राम ने अपने हाथों से जटायु का अग्निसंस्कार किया। वहीं से भगवान आगे बढ़े सीता की खोज करते हुए। रास्ते में कबंध नामक राक्षस मिला। कबंध को गति देकर परमात्मा शबरी के आश्रम में आये। शबरी भगवान से कहती है, 'मैं किन शब्दों में आपकी स्तुति करूं? मैं तो अधम से भी अधम हूं! मतिमंद गंवार हूं!' भगवान कहते हैं, 'शबरीजी, मैं तो केवल एक प्रेम के नाते को कुबूल करता हूं।' और भगवान ने नवधा भक्ति का एक बिलग ढ़ंग से वर्णन किया। भगवान राम पंपा सरोवर गये। नारदजी मिले। और आख़िर में नारदजी ने संत के लक्षण श्रीमुख से सुनकर नारदजी गये और 'अरण्यकांड' तुलसी ने पूरा किया।

'किष्किन्धाकांड' में राम-लक्ष्मण आगे बढ़े। सुग्रीव और राम की मैत्री हनुमानजी ने अग्नि के साक्षी से करवाई। सुग्रीव बड़ा विषयी है लेकिन हनुमानजी के आश्रय से विषयी जीव परमात्मा का मित्र बन गया। उसके बाद बालि को निर्वाण। सुग्रीव को राज्य। अंगद को युवराज पद। भगवान चातुर्मास के लिए प्रवर्षण पर्वत पर व्रत लेकर बैठे हैं। सुग्रीव भगवान का कार्य भूल गया क्योंकि बिषयी रहा! भगवान लक्ष्मणजी को भेजकर उसको जाग्रत करते हैं। सुग्रीव आता है। योजना बनी सीता की खोज की। तीन दिशाओं में सब बंदर भालूओं को भेज दिये। चौथी टुकड़ी दक्षिण की ओर भेजते है। जिस टुकड़ी का नायक अंगद है। जिसमें हनुमानजी है और जिसमें सलाहकार जामवंतजी भी है। सब प्रभु को प्रणाम करके दक्षिण की ओर लेकर निकलते हैं। हनुमानजी ने सब से आख़िर में प्रणाम किए। भगवान ने सोचा कि कार्य हनुमान से ही होगा। हनुमानजी की उस तरह यात्रा आरंभ होती है। देश के युवान भाई-बहन, कार्य तो युवानों को करना है लेकिन अनुभवीओं का आशीर्वाद भी लेना है। बूढ़े जामवंतों के पैर छूकर कहना कि हमें बताओ, हमें क्या करना चाहिए?

'सुन्दरकांड' का आरंभ होता है। हनुमानजी उडान लेते हैं। रास्ते में बहुत विघ्न आये, क्योंकि शांति की खोज, भक्ति की खोज विघ्नों से भरी होती है। सब को पार करते हुए हनुमानजी लंका में प्रवेश करते हैं। विभीषण और हनुमानजी की भेंट होती है। हनुमानजी विभीषण से युक्ति प्राप्त करते हैं अशोकवाटिका में सीता तक पहुंचने की। श्री हनुमानजी सोच रहे हैं कि माँ बहुत दु:खी है मैं क्या करूं? लेकिन मुद्रिका देखते ही पहचान गई कि ये तो मेरी मुद्रिका है! यहां कैसे आई? कौन लाया? तब हनुमानजी उपर बैठे-बैठे रामकथा सुनाने लगे। जानकी के दु:ख भागे। जानकी को भरोसा हुआ और हनुमानजी को आशीर्वाद देती हैं। हनुमानजी ने फल खायें। तरु तोडें। अक्षयकुमार को भेजा रावण ने। अक्षय आते ही हनुमानजी ने क्षय कर दिया! उसके बाद इन्द्रजित आता है। मेघनाद हनुमान को बांधकर ले जाता है रावण की सभा में। आख़िर में रावण कुपित होता है। सब राक्षस मारने दौड़े उसी समय विभीषण आया। सब रुक गये। आख़िर में पूंछ प्रज्वलित की। साहब, भक्ति का दर्शन करते हैं और भक्ति का आशीर्वाद पाते हैं उसको तत्कालीन समाज जलाने की कोशिश करता है लेकिन जिसका भजन परिपक्व होगा उसको कोई नहीं जला पाता। श्री हनुमानजी माँ का चूड़ामणि लेकर लौट आए। सुग्रीव के पास गये। राम के पास आये। और हनुमान ने सब कथा सुना दी। उसके बाद भगवान ने कहा, अब विलंब न करें। परमात्मा का अभियान आगे बढ़ा है और भगवान समुद्र के तट पर पहुंचे। विभीषण ने रावण को दरबार में अच्छी सलाह दी। रावण ने पदप्रहार किया। और विभीषण को राज्य से निकाल दिया। विभीषण आकाश के मार्ग से आता है। भगवान शरणागत को अपने शरण में लेते हैं। प्रभु ने विभीषण से मार्गदर्शन लिया कि अब कैसे जाये लंका में। बोले, महाराज, तीन दिन आप ब्रत करो और समुद्र यदि जवाब दे तो हमें बल का उपयोग नहीं करना है। प्रभु बैठे। तीन दिन पूरे हुए। समुद्र ने कोई जवाब नहीं दिया। भगवान ने लक्ष्मण के पास बान मांगा। ब्राह्मण का रूप लेकर समुद्र शरण में आया। कहा, सेतु बनाईए। भगवान ने कहा, सेतुबंध ये तो मेरा स्वभाव है। 'लंकाकांड' के आरंभ में सेतु बन गया। भगवान रामेश्वर की स्थापना हुई। शैव और वैष्णव सब का सेतुबंध कर दिया। सब सामने तट पर उतरे। सुबेल पर ड़ेरा। दूसरे दिन अंगद को राजदूत के रूप में भेजा गया। संधि हो न पाई। युद्ध अनिर्वाय हुआ। और एक के बाद एक सब को निर्वाण प्राप्त होता चला। भगवान ने आख़िर में ईकत्तीस बाण छोड़कर रावण को भी निर्वाण प्रदान किया। विभीषण को राजतिलक हुआ। माँ जानकी को ख़बर किया। माँ प्रसन्न हुई। जानकीजी का लौकिक प्रतिबिंब समाप्त किया। मूल जानकी प्रगट हुई।

> गांधी के चश्में जो हैं, वो निकटवालों को भी देखते थे, दूरवालों को भी देखते थे। इस निकट और दूर, दोनों पर एक समान दृष्टि के थे। ये कहां से लिया? नरसिंह के पद से। 'समदृष्टि ने तृष्णा त्यागी।' समदर्शन गांधी का। गांधी ने बहुत निकट से सूक्ष्म से सूक्ष्म बातों को जानी और दूर का देखनेवाला भी ये आदमी रहा। मेरी व्यासपीठ को ऐसा लगता है कि चश्मां ये समदृष्टि का प्रतीक है। 'गीता' के स्वाध्याय करनेवाले ब्रह्म को 'सम' कहकर ब्रह्म के गुणगान गानेवाले हम समाज में कितनी समदृष्टि रख पाएं? ब्रह्म को सम कहा है। ब्रह्म सम है। तो मेरी समझ में गांधी के चश्में, वो समता का दृष्टिकोण लिए हुए हैं।

पुष्पक तैयार हुआ और अयोध्या की उड़ान के लिए तैयारी हुई। सब को मिलते हुए प्रभु का शृंगबेरपुर निषाद की बस्ती में विमान उतरा। केवट आया। प्रभु ने कहा, बोल, तेरी बाकी उतराई है, क्या दूं? केवट ने कहा, 'महाराज ये तो चतुराई थी दूसरी बार दर्शन करने की। लेकिन आप को उतराई देनी ही है तो एक काम करो, मैंने आप को नौका में बिठाया था। आप मुझे विमान में बिठाकर अवध ले चलो। और भगवान उसको विमान में बिठा देते हैं। आख़िरी व्यक्ति का आख़िरी तक प्रभु ने जतन किया। रामराज्य की बुनियादी बस्तु ये है।

'उत्तरकांड' का आरंभ। हनुमानजी डूबते को जैसे जहाज मिल जाए ऐसे भरत को मिल गए। कहा, 'भगवान राम सकुल, सदल पधार रहे हैं। पूरी अयोध्या में बात फैल गई। विमान उड़ान भरकर सरजू के तट पर उतरता है। भगवान आगे बढ़े। भरतजी दौड़े। और दोनों जब गले मिले तब कोई निर्णय नहीं कर पाया कि दोनों में वनवासी कौन था? और वहां तुलसी ने लिखा कि भगवान ने धनुषबाण छोड़ दिए। उसका मतलब ये हुआ कि धनुषबाण की जरूरत थी तब तक रखा, अब रामराज्य शस्त्रों से नहीं आएगा, शास्त्रों के चरण पकड़ने से आएगा। सब को लिए प्रभु आगे बढ़े। माँ कैकेयी की ग्लानि निवारण किया। सुमित्रा को मिले। और कौशल्या के पास सब गये तब तो प्रेमभाव में सब डूब गये। दिव्य सिंघासन मांगा गया। राम सिंघासन के पास नहीं गये। सत् सत्ता के पास नहीं गया, सत्ता सत् के पास आई। और भगवान राम पृथ्वी को, गुरुजन को, विप्रवृंद को, आकाश के देवताओं और सूर्य को, अपनी प्रजा को और माताओं को प्रणाम करते हुए प्रेमराज्य के सिंघासन पर बिराजमान हुए। और भगवान वशिष्ठजी ने त्रिभुवन को रामराज्य देते हुए राघव के भाल में रामराज्य का तिलक किया। रामराज्य की स्थापना हुई। हनुमान के सिवा मित्रों को प्रभु ने बिदा दी।

भगवान की सुंदर नरलीला। समय मर्यादा पूरी हुई। जानकी ने दो पुत्रों को जनम दिया। तीन भाईओं के घर भी दो-दो पुत्र हुए। रघुवंश के वारिस का नाम बताकर तुलसी ने कथा बंद कर दी। तुलसी ने सीता का दूसरी बार का बनबास ये प्रकरण लिखा नहीं है। तुलसी कहते हैं, मैं तो संवाद का वक्ता हूं। मुझे दुर्वाद और विवाद में जाना ही नहीं है। उसके बाद कागभुसुंडि के जीवनचरित्र की कथा है। भुशुंडि ने कथा पूरी की। यहां याज्ञवल्क्य महाराज ने भरद्वाजजी के सामने पूरा किया कि नहीं, ख़बर नहीं है। कैलास के शिखर पर भगवान महादेव पार्वती के सामने कथा कह रहे थे। शिव ने भी कथा को विराम दिया। अब कलिपावनावतार पूज्यपाद गोस्वामी तुलसी अपने मन को और संतों को कथा सुनाते हुए विराम देने की ओर है। तुलसी ने कहा ये कलियुग है। कलियुग में हमारे जैसे लोग ओर साधन नहीं कर पाएंगे। इसीलिए तीन ही बात तुलसी ने आख़िर में रखी। तीन साधन, राम का स्मरण करो, राम को गाओ और जब जब मौका मिले राम के गुणों को सुनो। तीन ही, स्मरण, गायन और स्मरण। राम का सिमरन ये सत्य है। निरंतर हम सत्य का उच्चारण करे जितनी मात्रा में हम से हो पाये। राम का गायन ये प्रेम है। और निरंतर कथा सुनना ये करुणा के बिना नहीं हो सकता।

तुलसी ने शरणागति के घाट से कथा को विराम दिया। अब मैं राजघाट से कथा को विराम दे रहा हूं। मैं भी मेरी वाणी को विराम देने की ओर हूं तब मैं मेरी बहुत प्रसन्नता व्यक्त करता हूं कि भाई रजनीश, जिसने सच्चा और साहसी कदम उठाया है। उसका ये भाव कि कथा राजघाट पर हो। और भारत सरकार से लेकर सभी लोगों ने इस कथा में सहर्ष सहयोग किया। और आज उसको हम विराम की ओर लिए चलते हैं। सब राजी है। ये जागृत चेतना अवश्य प्रसन्न हुई होगी कि मेरे घाट पर चित्रकूट घाट की कथा हुई है। सब की सेवा महान है। लेकिन निमित्त बनकर के इस प्रेमयज्ञ में थोड़ी आहुति ड़ालने का अवसर रमाभैया और उनके परिवार को प्राप्त हुआ तो वो भी एक पुन्यलाभ के भागीदार है। और सब से ज्यादा सेवा तो आप सब की। दिल्ही किसीकी भी नहीं सुनती! और नौ दिन निकालकर आप सुन रहे हैं! इतना बड़ा सत्कर्म, गांधी को प्रसन्न करनेवाली ये सर्वधर्म प्रार्थना नव दिन की, सर्वधर्म समभाव का ये यज्ञ पूरा हो रहा है तब नौ दिन का ये सुक्रित, ये प्रेम परिणाम आओ, विश्ववंद्य महात्मा गांधीबापू की जागृत चेतना जो यहां समाधि पर विराजमान है, हम सब मिलकर के इस पूरी कथा का फल गांधीबापू की जागृत चेतना को हम समर्पित कर दें कि बापू ये कुबूल करे।

मानस-मुशायरा

ना मैं धर्मी, ना ही अधर्मी, ना मैं जति, ना कामी हूं।
ना मैं कहता, ना मैं सुनता, ना मैं सेवक, स्वामी हूं।
– कबीर

शब भर रहा खयाल में तकिया फ़कीर का।
दिन भर सुनाऊंगा तुम्हें किस्सा फ़कीर का।

•

आएगा लेके बाप दवा भूख की जरूर।
बैठा है ईन्तज़ार में बच्चा फ़कीर का।
– विजेन्द्रसिंह परवाज़

उलझनों में खुद उलझकर रह गये वो बदनसीब,
जो तेरी उल्झी हुई झूल्फों को सुलझाने गये।

•

इससे बढ़कर क्या मिलती हमें दादें वफ़ा,
हम तेरे ही नाम से दुनिया में पहचाने गए।
– पारसा जयपुरी

खुलूसो-मुहब्बत की खुशबू से तर है।
चले आइए ये अदीबों का घर है।
अलग ही मज़ा है फ़कीरी का अपना,
न पाने की चिंता, न खोने का डर है।
– दीक्षित दनकौरी

राशिद किसे सुनाउं गली में तेरी गज़ल,
उनके मकां का कोई दरीचा खुला न था।
– राशिद

मज़ा देखा मियां सच बोलने का?
जिधर तूं है, उधर कोई नहीं!
– नवाज देवबंदी

क्वचिदन्यतोऽपि

भीखुदान गढवी सफ़ेद वस्त्र में विषयी साधक है

पद्मश्री भीखुदान गढवी सन्मान समारोह अवसर पर मोरारिबापू का विचारप्रेरक वक्तव्य

सर्व प्रथम आईमाँ सोनलमाँ की निराकार चेतना को प्रणाम करता हूं। ऐसी ही एक दूसरी साकार चेतना पूजनीया माँ कंकु केसरमाँ को प्रणाम करता हूं। भारत सरकार ने जिनका अभिवादन किया और भारत के प्रथम नागरिक और राष्ट्रपति ने अपने वरद हस्तों से पद्मश्री का ख़िताब प्रदान कर आदर किया। मेरे तो परम निकटस्थ स्नेही है। हमारे प्रिय आदरणीय भीखुदानभाई का परिवार यहां है। ऐसे सुंदर प्रसंग पर अतिथिविशेषरूप में प्रसन्न मुद्राधारी सरकारी अधिकारी आदरणीय वसंतभाई। सब के नाम नहीं लेता, क्षमा कीजिए। लक्ष्मणभाई लन्दन से आए है। मंचस्थ महानुभावों को प्रणाम करता हूं। आईमाँ सोनलमाँ एज्युकेशन ट्रस्ट और चेरिटेबल के ट्रस्टीगण, राजकोट और अन्य नगर से आये चारण समाज के भाईओं और बहनों, सब को प्रणाम करता हूं। मैं तो 'रामायण' गाता हूं। तुलसी कहते हैं-

बंदउँ कौसल्या दिसि प्राची ।
कीरति जासु सकल जग माची ।।

सर्व प्रथम वंदना माँ कौशल्या की करते हैं। कौशल्या केवल स्त्री नहीं, पूर्व दिशा है। मैं पूर्व दिशा को प्रणाम करता हूं। प्राय: पांच सौ साल पहले माँ कौशल्या को पूर्व दिशा कहा था। फ़िर भगतबापू ने कहा,

उगमणा ओरडावाळी, भजां तने भेळियावाळी...

यह सेतु कहां से जुड़ता है, साहब! कौशल्या माँ पूर्व दिशा की महिमा है। कहां कौशल्या, कहां अवध और कहां कौशल देश? कहां मढळा? किसका कहां प्रागट्य होता है, कुछ पता नहीं चलता! आई सोनल माँ को प्रणाम कर आशीर्वाद चाहता हूं। आप सब को जय माताजी कहकर दो शब्द बोलता हूं।

मैं अपने बोले शब्द वापस नहीं लेता। माँ ने हंमेशा कहा है। कंकु केसरमाँ के यहां बड़ा चारण संमेलन था। मैं वहां जा पहुंचा। मैंने वहां कहा, मुझे आप से पक्षपात है, है, है। भीखुदानभाई केन्द्र में है। वह प्रसंग महत्त्वपूर्ण है। देश में, केन्द्र में जिस अर्थ में कहा जाता है, उन्हें मुबारक! हमारी इच्छा है कि वैसा ही हो। साहित्यिक जगत में तो अच्छे दिन आ रहे हैं। बहुत अच्छे दिन आ रहे हैं। हम देख रहे हैं।

मेरे शब्दों को ध्यान से सुनिए। बाद में स्पष्टता करूंगा। शायद आप को पहला धक्का लगेगा। श्वेतवस्त्रधारी भीखुदानभाई को मैं विषयी साधक कहता हूं, वसंतभाई। खुलासा बाद में करूंगा। गलतफ़हमी मत करना। विषयी क्यों कहा? साथ में 'साधक' शब्द है। ऐसा कहने के कारण है। अभी उज्जैन में कुंभ था। खेतशी को पता है। वे मेरे साथ ही था। हम साधु-संतों से रोज मिलकर पांव छूते थे। आनंद मिलता था। एक जगद्गुरु ने बात कही। भीखुदानभाई, मैं नीचे बैठने गया तो उन्होंने रोका और कहा, 'बापू, आप व्यासपीठ पर बैठते हैं।' मैंने कहा, 'अभी व्यासपीठ नहीं है।' उन्होंने कहा, 'व्यासपीठ पर बैठनेवाले अन्य जगह नहीं बैठते। व्यासपीठ से भी ऊंचाई पर कोई बैठ सके तो वह माँ है।' साहब, ये जगद्गुरु के शब्द है। हम अहोभाव में शास्त्रीय अर्थवाद कर सकते हैं। पर जब जगद्गुरु बोलते हैं तब उनकी ही जिम्मेवारी है। ऐसे शब्द सुनकर लगे कि माँ का महत्त्व कितना है! उस माँ की संतान होने के नाते इतने वरदान मिले हैं उसे लेकर समाज कहता है, थोड़े-थोड़े हमें दो। अपनी कविता, विचार, सर्जन, गायन, संगीत साधना और रहन-सहन द्वारा आप ये सब हमें दे। मुझे क्यों पक्षपात है? मैं तो झीबासाहब की दृष्टि में कमल जैसा हूं! कमल असंग होता है। मुझे कहां किसीसे संग है? 'श्रीमद् भागवतजी' में देवहूति को भगवान कपिल कहते हैं कि माँ-

प्रसंग मजरं पाशमात्मन: कवयो विदु:।
स एव साधुषु कृतो मोक्षद्वारमपावृतम्।।

किसीसे आसक्ति रखनी, जुड़े रहना, संग रखना यह एक ऐसा अजर-अमर बंधन है, जिसे सिद्ध भी नहीं तोड़ सकते। ऐसे ही बंधन में कोई साधु बंध जाय तो 'मोक्षद्वारमपावृतम्।' साधु असंग हो तो भीखुदानभाई और पूरे समाज के लिए मेरी इतनी भावुकता क्यों? सीधा वारिस है भाई। वसंतभाई ने उचित अंजलि दी कि इस भूमि पर यदि हेमुभाई को याद न करे तो उचित नहीं है। मैं स्पष्ट कहता हूं साहब कि 'नारदभक्तिसूत्र' में कहा गया है कि किसीके प्रति आप भाव रखे तो ऐसी अनुभूति होनी चाहिए, 'गुणरहितं कामनारहितं प्रतिक्षणवर्धमानमविच्छिन्नं सूक्ष्मतरमनुभवरूपम्।' मुझे चारणों के प्रति गुणरहित अनुभूति है। मैं गुण-अवगुण न देखूं। क्या मेरी आंखें नहीं है? मेरी अनुभूति गुणरहित है। सब के समान बोलता हूं। शब्द मेरी साधना है। हम सब की है। आप की जिह्वा यह काम क्यों करती है? कई आकर कहते हैं, मुझे इतने छपाकड़े याद है। मैं कहूं, यह

तो ठीक, रट लगाया कर। पर इसे गाने के लिए तो चारण की जीभ चाहिए। मैं सब को यही कहता हूं। यह खेतशी कहे, बापू, आप कथा में हो वही आराम है। तलगाजरडा आने पर तो सुनानेवालों की लाईन लग जाती है! पर उसकी जीभ कहां से लाएंगे? यह तो चारण के पास ही है। और यह जीभ झूठी नहीं होती।

इ छे कळजुगनी एंधाणी,
जे दि चातक पीशे एंठां पाणी...

आज भीखुदानभाई की जीभ का सम्मान हुआ है। यह चारण की जीभ का सम्मान है। इसमें जीती-जागती जोगमाया है। यहां जबान का सम्मान हुआ है। हम प्रसन्न है। ऐसे चारणों के प्रति 'गुणरहितं', बिना गुण-अवगुण की मेरी अनुभूति है। मेरे पास किसीका अवगुण देखने जितना समय नहीं है। क्यों समय बरबाद करे? इन सब के प्रति गुण-अवगुणरहित अनुभूति है। कामनारहित भाव है। आप हमारा दोहा लिखे तो मार खानी पड़े! कहां जाय? मेरा कामनारहित भाव है। इस समाज प्रति कोई कामना नहीं है। चारण को देख प्रसन्न होता हूं। वसंतभाई, मुझे पहला विचार यह आये कि यह बेटी मुझे रोटी बनाकर दे। और मैं रोटी मागूं तो मुझे सुखडी दे! सुगम संगीत का गीत है-

हुं तो खोबो मागुं ने दई दे दरियो...

मेरा भाव कामनारहित है। साधु के रूप में मेरा भाव प्रतिक्षण वर्धमान है। दो दिन यह भाव रहे फ़िर मिट जाय ऐसा नहीं होता साहब! वह भाव नहीं है। समाधिस्थ होने के बाद भी निर्वाह होना चाहिए। यही तो भाव है। 'गुणरहितं' 'कामनारहितं', 'प्रतिक्षण वर्धमानं' और 'अविच्छिन्नं।' कभी न छूटे। तैलधारावत्। वसंतभाई, नई-नई चेतनाओं को देखकर खुश होता हूं। आज ये कैसी चेतनाएं सामने हैं! इसके मूल में जिसने काम किया है ये समस्त चारण समाज की माताएं, आई सोनलमाँ से लेकर जितने महापुरुषों में आखिर में भीखुदानभाई तक पहुंचे हैं। ईन सब का बड़ा योगदान है। तो बाप, 'अविच्छिन्नं' ऐसा भाव रखता हूं। अतः कहता हूं, मेरा पक्षपात है, है, है; रहेगा, रहेगा, रहेगा। भारत सरकार ने भीखुदानभाई को प्रणाम कर सन्मानित किया। जब मैं

भीखुदानभाई को विषयी साधक कहता हूं, तब परंपरित अर्थ में नहीं कहता। दो अर्थ है, एक तो विषयी साधक माने जब से मैं उन्हें सुनता हूं उन्हें आप जिस विषय पर बोलने के लिए कहे तो उन्होंने कभी विषयांतर नहीं किया है। साहब, यह मेरा अनुभव है। उन्हें साधु-समाज में बोलने का कहा हो तो वे 'राणा' प्रताप की बात करे ऐसा नहीं। ये भगतबापू का गीत कहे-

साधु अमने इंधणुं लई बनावो...

विषयांतर न करे। विषय पर टिके रहे। सांसारिक विषय की बात नहीं है। मेरा एक अर्थ है, भीखुदानभाइ विषयी साधक है। मुख्यतः ये साधक है। इन्हें 'रामायण' पर प्रीति है। रामनाम पर प्रीति है। 'सुन्दरकांड' पर प्रीति है। अकेले हो तो 'रामायण' के बगैर रहे नहीं। यह साधना है। विषय चूक नहीं, विषयी साधक है। वक्ता विषय को छोड़ नहीं सकता। दुर्भाग्य से कितने ही वक्ता है जो विषय को छोड़ देते है! खैर!

दूसरे अर्थ में विषयी इसीलिए कहता हूं कि अपने यहां शब्द, रूप, रस, स्पर्श और गन्ध पांच विषय है। भीखुदानभाई के पास शब्द विषय है। जिनमें कुछ हो वो जो हमें हाथ से स्पर्श न करे पर शब्द से स्पर्श करे। यह सब से बड़ा विषय शब्द है। शब्द भी चारण की जिह्वा से निकला हुआ। उन्होंने विषय पकड़ रखा है। उनका शब्द हमें छूता है। हमें आनंद मिलता है। भीखुदानभाई से हम बात कराते रहे। वही गीत मैं कीर्ति को गाने के लिए कहूं। वही बात राज से कहलाऊं। बिहारीभाई भी वही कहे। वे शब्द साधना करते हैं। यह शब्द विषयी है। शब्द के पश्चात् स्पर्श है। दो मिनट पहले ये हमें हसाये तो दो मिनट बाद हमारी आंख गीली हो जाय। रोमांचित हो जाय। गद्गद् हो जाय। इसका अर्थ यह है कि ऐसी साधक व्यक्ति के पास शब्द का विषय है और स्पर्श भी करना जानते हैं। हमें छूते हैं। शब्द, स्पर्श, रूप; एक बात से शुरू करे, लोकगीत गाये; प्रसंग बयान करे; हंसाये और उसीमें से एकाद प्रसंग निकाले उसका रूप तादृश हो। यह रूप विषय बहुत कठिन है। रूप प्रागट्य कठिन साधना है। बम्बई के टाउनहोल में या किसी सभागृह में वढवाण के बचुभाई गढवी राणा प्रताप की बात करे और चेतक को कूदाए तब ओडियन्स को लगे कि चेतक हम पर कूदा! हमारे भीखुदानभाई में वही कला है। उनकी बानी रसपूर्ण है। उसमें शब्द, रूप, स्पर्श, रस, सब कुछ है। कुछेक लोग कहते हैं, बोलने का कुछ सूझता नहीं है! ऐसे लोग क्या बोले? सूझना ही चाहिए।

रत आवे न बोलीये तो हैयां फाट मरां...

तू कैसा साधक है? तुझे सूझना चाहिए। कुछेक शिष्ट-शिष्ट बोलते हैं! मुझे लगता है, अब शब्द खत्म हो गए! रहने दे! बावन खत्म हो गये हो तो उससे बाहर के बोल! मैं आप को सुनता हूं तो परीक्षक के रूप में नहीं सुनता हूं। तीन बार फेइल हुआ आदमी कैसे परीक्षक हो सकता है? पर मैं अवलोकन करता हूं।

अखाए आ पदने अवलोकियुं ...

अखो कहता है, मैंने यह पद लिखा नहीं। पढ़ा नहीं। गाता भी नहीं। इसका मैं अवलोकन करता हूं। सीधा दर्शन से अनुसंधान है। मेरा अवलोकन रसपूर्ण बना रहे। पूरी सभा खड़ी होकर आदर दे। मुशायरा में जितनी दाद देंगे, शायर का हौसला बढ़ेगा। क्या उसकी आत्मश्रद्धा कम है? दाद उधार नहीं होती। वह तो भीतर से आती है। पर ऐसा सब चलता रहता है! यदि तालियां न बजे, दाद न मिले तो शायर डिप्रेस भी हो जाय!

एक रस का वातावरण बने। और रसविषयी साधकत्व भी उनमें है। शब्द, रूप, रस, स्पर्श, गंध। एक वक्ता की अंतिम कसौटी जो है, मैं ७० वर्ष की वय में

इतना समझ सका हूं कि हमारा शब्द उस दिन सफल होगा जिस दिन शब्द में गंध आने लगे। एक साधु बोले तो फिर धूप हुआ तो पूरे होल में धूप की गंध आने लगे। साहब, ऐसी शक्ति निज़ामुद्दीन ओलिया में थी। दिल्ही में फैलता लोबान का धूप! जिस दिन बोले दो-चार जनों के सामने, तो शब्द से गंध आए। यह वक्तव्य की चरमसीमा है। ऐसे पांचों विषय का साधक दिल्ही में सन्मानित हो और हमारे बीच बैठे और हम उनके प्रति अहोभाव व्यक्त करते हैं, तब मुझे लगता है कि यह भीखुदानभाई का सम्मान नहीं करते, हम खुद अपना ही सम्मान करते हैं।

भीखुदानभाई ने ठीक कहा कि यह केवल मेरा नहीं, समस्त चारण समाज का सम्मान है। यह केवल शिष्टाचार नहीं है। कई लोग बोलते हैं, मैं सब इन्हें दे देता हूं! जब किसी का सम्मान होता है तब मैं कहता हूं, पैसे लौटाना नहीं। ले जाईए। कई कहते हैं, यह थैली लौटाता हूं! पर क्यों? वे लोग भी कहीं से लाए हैं! ले लीजिए। लौटाते क्यों है? कहते हैं, मैं इसमें और जोड़कर देता हूं! अरे, जोड़ना रहने दे तू! मैं खास ना कहता हूं। खबरदार, मत लौटाइए! क्योंकि आपके बाद जिनके सम्मान होंगे उनका क्या? आप हिंसा करते हैं। जिनका बाद में सम्मान होगा उसे ज़रूरत होगी। आप ना कहेंगे तो यह हिंसा होगी। ऐसी छूट मंच को नहीं होती। दूसरों को है। एक ऐसा व्यक्ति का सम्मान होते देख एक साधु के रूप में प्रसन्नता होती है। भीखुदानभाई एक ऐसे साधक है। सिद्ध हो जाय तो फिर हमारे बीच नहीं रहते। हमारे साथ गांठिया न खाए! ऐसे सिद्ध से हमारा क्या लेना-देना? हमें तो हर दो घंटे के बाद चाय चाहिए! गांठिया चाहिए! पर आडे सिद्धाइ आए तो क्या फायदा? बिलकुल विषयी माने सांसारिक भाव में जो बिलकुल विषयी हो, उनके साथ थोड़ी साधना की हो संगीत, शब्द, सूर की; उन्हें गंध आए कि यहा नहीं बैठ सकते -

जन को पास न जाय, उकरडो आघो करे,
एना गण ते दि' गवाय जे दि' कणहण पाके कागडा।

उसके गण को उस दिन गाए; सदुपयोग करे। दिशा बदल डाले। भीखुदानभाई का एक बार बहाउद्दीन कालेज में सम्मान था। तब मैंने कहा था, यह आदमी मूल्य जानता है और महक भी जानता है। इत्र के व्यापारी को इत्र की खुश्बू नहीं आती। चमार को चमडे की बास नहीं आती। पर हम महसूस करते हैं। वह जब हमें गुलाब, हीना, खस लगा देते, हमें खूश्बू आती है। हम जानते हैं। इस इत्र के इतने पैसे है। हमें मूल्य का पता है, किस इत्र के कितने पैसे है। पर जो मूल्य और महक दोनों को जानता है वह साधक है। ऐसे एक साधक का सम्मान भारत सरकार ने किया है। हम सब सहर्ष शामिल हुए हैं। मैं भीखुदानभाई को कह रहा था, आपको कितना दौड़ना पड़ रहा है! आज हर जगह से आप का सम्मान हो रहा है। सबको सम्मान करने की इच्छा होती है। सार्वत्रिक हो जाना कठिन कार्य है। माताजी की कृपा से हो सकता है। आइमाँ का आशीर्वाद है। कंकुमाँ आशीर्वाद देने आई है। कुंकुमाँ कहे, मुझे बोलना नहीं आता। कागधाम में सुंदर वचन कहे थे। जरूरत पड़ने पर माँ बोली है। मैंने बिनती की, माँ आप बोले। माँ ने आशीर्वाद दिए थे। मेरे प्रति भी उनका स्नेहादर है। मैं प्रसन्न होता हूं। साधक को अंत में एक बात कह कर यहां से निकल जाऊंगा! सीधा निकल जाऊंगा!

बस यही मेरा अंदाज़ पूरे जमाने को बहुत खलता है।
क्योंकि मेरा चराग हवाओं के ख़िलाफ़ क्यों जलता है?

(आईश्री सोनलमाँ एज्युकेशन एन्ड चेरिटेबल ट्रस्ट और समस्त चारण समाज, राजकोट के उपक्रम से पद्मश्री भीखुदान गढवी-सन्मान समारोह अवसर पर प्रस्तुत वक्तव्य : दिनांक ५-६-२०१६)

राजघाट निर्माण और निर्वाण का घाट है।

॥ जय सीयाराम ॥